قَالَ لَهُ الْقَبْرُ: مَرْحَبًا وَأَهْلاً، أَمَا إِنْ كُنْتَ لَأَحَبَّ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِي بِكَ، قَالَ: فَيَتَّسِعُ لَهُ مَدَّ بَصَرِهِ وَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْفَاجِرُ أَوِ الْكَافِرُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ لَا مَرْحَبًا وَلَا أَهْلاً أَمَا إِنْ كُنْتَ لَأَبْغَضَ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِي بِكَ، قَالَ: فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتَّى يَلْتَقِيَ عَلَيْهِ وَتَخْتَلِفَ أَضْلَاعُهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِأَصَابِعِهِ فَأَدْخَلَ بَعْضَهَا فِي جَوْفِ بَعْضٍ قَالَ: وَيُقَيِّضُ اللهُ لَهُ سَبْعِينَ تِنِّينًا لَوْ أَنَّ وَاحِدًا مِنْهَا نَفَخَ فِي الْأَرْضِ مَا أَنْبَتَتْ شَيْئًا مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا، فَيَنْهَشْنَهُ وَيَخْدِشْنَهُ حَتَّى يُفْضَى بِهِ إِلَى الْحِسَابِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، أَوْ حُفْرَةٌ مِنْ حُفَرِ النَّارِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب حديث اكثروا ذكر هاذم اللذات رقم: ٢٤٦٠

139. हज़रत अबू सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने देखा कि बाज़ लोगों के दांत हंसी की वजह से खिल रहे थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, तो तुम्हारी यह हालत न हो जो मैं देख रहा हूं, लिहाज़ा लज़्ज़तें ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह यह आवाज़ न देती हो कि मैं परदेस का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं, मैं कीड़ों का घर हूं। जब मोमिन बन्दा दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उससे कहती है, तुम्हारा आना मुबारक है, बहुत अच्छा किया जो तुम आ गए। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे मुझे तुम उन सब में ज़्यादा पसन्द थे। आज जब तुम मेरे सुपुर्द किए गए हो और मेरे पास आए हो तो मेरे बेहतरीन सुलूक को भी देखोगे। इसके बाद क़ब्र जहां तक मुर्दे की नज़र पहुंच सके वहां तक कुशादा हो जाती है और इसके लिए एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ़ खोल दिया जाता है और जब कोई गुनहगार या काफ़िर क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है तेरा आना नामुबारक है, बहुत बुरा किया जो तू आया। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे उन सब में तुझ ही से मुझे ज़्यादा नफ़रत थी। आज जब तू मेरे हवाले हुआ और मेरे पास आया है तो मेरे बुरे सुलूक को भी देख लेगा। इसके बाद क़ब्र उसे इस तरह दबाती है कि पसलियां आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ में डालकर बताया कि इस तरह एक जानिब की पसलियां दूसरी जानिब में घुस जाती हैं और अल्लाह तआला उस पर सत्तर अज़दहे ऐसे मुसल्लत कर देते हैं कि अगर

भी उनमें से ज़मीन पर फुंकार मारे तो उसके (ज़हरीले) असर से क़ियामत तक ज़मीन पर घास उगना बन्द हो जाए, वह उसको क़ियामत तक काटते और डसते रहेंगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ब्र जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा है। (तिर्मिज़ी)

﴿140﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ جَنَازَةِ رَجُلٍ مِنَ الْاَنْصَارِ فَانْتَهَيْنَا اِلَى الْقَبْرِ وَلَمَّا يُلْحَدْ فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ كَاَنَّمَا عَلٰى رُؤُوْسِنَا الطَّيْرُ وَفِيْ يَدِهٖ عُوْدٌ يَنْكُتُ بِهٖ فِي الْاَرْضِ، فَرَفَعَ رَاْسَهُ فَقَالَ: اِسْتَعِيْذُوْا بِاللهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مَرَّتَيْنِ اَوْثَلَاثًا قَالَ: وَيَاْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَنْ رَبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ: رَبِّيَ اللهُ، فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَادِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ: دِيْنِيَ الْاِسْلَامُ، فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَاهٰذَا الرَّجُلُ الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ قَالَ فَيَقُوْلُ: هُوَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَيَقُوْلَانِ: وَمَا يُدْرِيْكَ؟ فَيَقُوْلُ: قَرَاْتُ كِتَابَ اللهِ فَاٰمَنْتُ بِهٖ وَصَدَّقْتُ قَالَ: فَيُنَادِيْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ قَدْصَدَقَ عَبْدِيْ فَافْرِشُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَاَلْبِسُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوْا لَهٗ بَابًا اِلَى الْجَنَّةِ قَالَ: فَيَاْتِيْهِ مِنْ رَوْحِهَا وَطِيْبِهَا قَالَ وَيُفْتَحُ لَهٗ فِيْهَا مَدَّ بَصَرِهٖ قَالَ: وَاِنَّ الْكَافِرَ، فَذَكَرَ مَوْتَهٗ قَالَ: وَتُعَادُ رُوْحُهٗ فِيْ جَسَدِهٖ وَيَاْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَنْ رَبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَادِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيَقُوْلَانِ لَهٗ: مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيُنَادِيْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ كَذَبَ فَافْرِشُوْهُ مِنَ النَّارِ وَاَلْبِسُوْهُ مِنَ النَّارِ وَافْتَحُوْا لَهٗ بَابًا اِلَى النَّارِ قَالَ: فَيَاْتِيْهِ مِنْ حَرِّهَا وَسَمُوْمِهَا قَالَ: وَيُضَيَّقُ عَلَيْهِ قَبْرُهٗ حَتّٰى تَخْتَلِفَ فِيْهِ اَضْلَاعُهٗ.

رواه ابو داؤد، باب المسألة في القبر، رقم: ٤٧٥٣

140. हज़रत बरा बिन आज़िब رضي الله عنه से रिवायत है कि हम लोग नबी करीम ﷺ के साथ एक अंसारी सहाबी के जनाज़े में (क़ब्रिस्तान) गए। जब हम क़ब्र के पास पहुंचे जो कि अभी खोदी नहीं गई थी, नबी करीम ﷺ (वहां क़ब्र की तैयारी के इंतिज़ार में) तशरीफ़ फ़रमा हुए और आप के इर्द-गिर्द हम भी इस तरह मुतवज्जह होकर बैठ गए गोया कि हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हों। आप के हाथ में लकड़ी थी जिससे ज़मीन को कुरेद रहे थे (जो किसी गहरी सोच के वक़्त होता है) फिर आप ﷺ ने अपना सर मुबारक उठाया और दो या तीन मर्तबा फ़रमाया : ''अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तआला की पनाह मांगो'' फिर इर्शाद फ़रमाया : (अल्लाह का मोमिन बन्दा इस दुनिया से मुंतक़िल होकर आलमे बरज़ख़ में पहुंचता है, यानी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है,

तो) उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बैठाते हैं, फिर उससे पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। फिर पूछते हैं, तुम्हारा दीन क्या है? वह कहता है मेरा दीन इस्लाम है। फिर पूछते हैं कि यह आदमी जो तुम में (नबी बनाकर) भेजे गए थे, यानी हज़रत मुहम्मद ﷺ उनके बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? वह कहता है वह अल्लाह तआला के रसूल हैं। फ़रिश्ते कहते हैं कि तुम्हें यह बात किसने बताई यानी तुम्हें उनके रसूल होने का इल्म किस ज़रिए से हुआ? वह कहता है कि मैंने अल्लाह तआला की किताब पढ़ी, उस पर ईमान लाया, और उसको सच माना, उसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (मोमिन बन्दा फ़रिश्तों के मज़्कूरा बाला सवालों के जवाब जब इस तरह ठीक-ठीक दे देता है तो एक मुनादी आसमान से निदा देता है, यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से आसमान में एलान कराया जाता है कि मेरे बन्दे ने सच कहा, लिहाज़ा उसके लिए जन्नत का बिस्तर बिछा दो, उसे जन्नत का लिबास पहना दो, और उसके लिए जन्नत में एक दरवाज़ा खोल दो, चुनांचे वह दरवाज़ा खोल दिया जाता है) और उससे जन्नत की ख़ुशगवार हवाएं और ख़ुशबुएं आती रहती हैं, और क़ब्र उसके लिए हद्दे निगाह तक खोल दी जाती है (यह हाल तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मरने वाले मोमिन का ब्यान फ़रमाया) इसके बाद आपने काफ़िर की मौत का ज़िक्र किया और इर्शाद फ़रमाया : मरने के बाद उसकी रूह उसके जिस्म में लौटाई जाती है और उसके पास (भी) दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बिठाते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। फिर फ़रिश्ते उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या था? वह कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। फिर फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि यह आदमी जो तुम्हारे अन्दर (नबी की हैसियत से) भेजा गया था, तुम्हारा उसके बारे में क्या ख़्याल था? वह फिर भी यही कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। (इस सवाल व जवाब के बाद) आसमान से एक पुकारने वाला अल्लाह तआला की तरफ़ से पुकारता है, उसने झूठ कहा। फिर (अल्लाह तआला की तरफ़ से) एक मुनादी आवाज़ लगाता है कि उसके लिए आग का बिस्तर बिछा दो और उसे आग का लिबास पहना दो और उसके लिए दोज़ख़ का एक दरवाज़ा खोल दो (चुनांचे यह सब कुछ कर दिया जाता है)। रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं : (दोज़ख़ के उस दरवाज़े से) दोज़ख़ की गर्मी और जलाने-झुलसाने वाली हवाएं उसके पास आती रहती हैं और क़ब्र उस पर इतनी तंग कर दी जाती है कि जिसकी वजह से उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : फ़रिश्तों का काफ़िरों को यूं कहना कि उसने झूठ कहा, इसका मतलब यह है कि काफ़िर का फ़रिश्तों के सवाल के जवाब में अपने अनजान होने को ज़ाहिर करना झूठ है, क्योंकि हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की तौहीद, उसके रसूल और दीने इस्लाम का मुन्किर था।

﴿141﴾ عَنْ انَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِيْ قَبْرِهِ وَتَوَلّٰى عَنْهُ اَصْحَابُهُ، وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ، اَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ فَيَقُوْلَانِ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِي هٰذَا الرَّجُلِ لِمُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَاَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُوْلُ: اَشْهَدُ اَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ، فَيُقَالُ لَهُ: اُنْظُرْ اِلٰى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ قَدْ اَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَيَرَاهُمَا جَمِيْعًا وَاَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهُ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُوْلُ: لَا اَدْرِيْ، كُنْتُ اَقُوْلُ مَا يَقُوْلُهُ النَّاسُ. فَيُقَالُ: لَا دَرَيْتَ وَلَا تَلَيْتَ، وَيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيْدٍ ضَرْبَةً فَيَصِيْحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيْهِ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ.

رواه البخاري، باب ما جاء في عذاب القبر، رقم: ١٣٧٤

141. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब अपनी क़ब्र में रख दिया जाता है, और उसके साथी यानी उसके जनाज़े के साथ आने वाले वापस चल देते हैं और (अभी वह इतने क़रीब होते हैं कि) उनकी जूतियों की आवाज़ वह सुन रहा होता है, इतने में उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बिठाते हैं। फिर उससे पूछते हैं : तुम उस शख़्स, यानी मुहम्मद ﷺ के बारे में क्या कहते थे? जो मोमिन होता है, वह कहता है कि मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। (यह जवाब सुनकर) उससे कहा जाता है कि (ईमान न लाने की वजह से) दोज़ख़ में जो तुम्हारी जगह होती उसको देख लो, अब अल्लाह तआला ने उसके बदले तुम्हें जन्नत में जगह दी है (दोज़ख़ और जन्नत के दोनों मक़ाम उसके सामने कर दिए जाते हैं।) चुनांचे वह दोनों को एक साथ देखता है और जो मुनाफ़िक़ और काफ़िर होता है तो उसी तरह (मरने के बाद) उससे भी (रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में) पूछा जाता है कि उस शख़्स के बारे में तुम क्या कहते थे? वह मुनाफ़िक़ और काफ़िर कहता है कि मैं उनके बारे में ख़ुद तो कुछ जानता नहीं, दूसरे लोग जो कहा करते थे वही मैं भी कहता था (उसके इस जवाब पर) उसको कहा जाता है कि तूने न तो ख़ुद जाना और न ही (जानने वालों की) पैरवी की। (फिर सज़ा के तौर पर) लोहे के हथौड़ों से उसको

जिससे वह इस तरह चीख़ता है कि इंसान व जिन्नात के अलावा उसके आस पास की हर चीज़ उसका चीख़ना सुनती है। (बुख़ारी)

﴿142﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى لَا يُقَالَ فِي الْاَرْضِ: اَللهُ اللهُ وَفِيْ رِوَايَةٍ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ عَلٰى اَحَدٍ يَقُوْلُ: اللهُ، اللهُ

رواه مسلم، باب ذهاب الإيمان آخر الزمان، رقم: ٣٧٥، ٣٧٦

142. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आएगी, जब तक कि (ऐसा बुरा वक़्त न आ जाए कि) दुनिया में अल्लाह-अल्लाह बिल्कुल न कहा जाए। एक और हदीस में इस तरह है कि किसी ऐसे शख़्स के होते हुए क़ियामत क़ायम नहीं होगी जो अल्लाह-अल्लाह कहता हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि क़ियामत उस वक़्त आएगी, जबकि दुनिया अल्लाह तआला की याद से बिल्कुल ही ख़ाली हो जाएगी।

इस हदीस का यह मतलब भी ब्यान किया गया है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि दुनिया में ऐसा शख़्स मौजूद हो जो यह कहता हो, लोगो! अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह तआला की बन्दगी करो। (मिरक़ात)

﴿143﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ اِلَّا عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ.

رواه مسلم، باب قرب الساعة، رقم: ٧٤٠٢

143. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत बदतरीन आदमियों पर ही क़ायम होगी। (मुस्लिम)

﴿144﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِيْ اُمَّتِيْ فَيَمْكُثُ اَرْبَعِيْنَ: لَا اَدْرِيْ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا، اَوْ اَرْبَعِيْنَ شَهْرًا، اَوْ اَرْبَعِيْنَ عَامًا، فَيَبْعَثُ اللهُ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ كَاَنَّهُ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُوْدٍ، فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ثُمَّ يَمْكُثُ النَّاسُ سَبْعَ سِنِيْنَ، لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ، ثُمَّ يُرْسِلُ اللهُ رِيْحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ، فَلَا يَبْقٰى عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَدٌ فِيْ قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ اَوْ اِيْمَانٍ اِلَّا قَبَضَتْهُ، حَتّٰى لَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ دَخَلَ فِيْ كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ، حَتّٰى تَقْبِضَهُ قَالَ: فَيَبْقٰى شِرَارُ النَّاسِ فِيْ

خِفَّةِ الطَّيْرِ وَأَحْلَامِ السِّبَاعِ لَا يَعْرِفُوْنَ مَعْرُوْفًا وَلَا يُنْكِرُوْنَ مُنْكَرًا، فَيَتَمَثَّلُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ فَيَقُوْلُ: أَلَا تَسْتَجِيْبُوْنَ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ فَيَأْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الْأَوْثَانِ، وَهُمْ فِيْ ذٰلِكَ دَارٌّ رِزْقُهُمْ، حَسَنٌ عَيْشُهُمْ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ، فَلَا يَسْمَعُهُ أَحَدٌ إِلَّا أَصْغٰى لِيْتًا وَرَفَعَ لِيْتًا، قَالَ: وَأَوَّلُ مَنْ يَسْمَعُهُ رَجُلٌ يَلُوْطُ حَوْضَ إِبِلِهِ قَالَ: فَيَصْعَقُ، وَيَصْعَقُ النَّاسُ، ثُمَّ يُرْسِلُ اللّٰهُ مَطَرًا كَأَنَّهُ الطَّلُّ فَتَنْبُتُ مِنْهُ أَجْسَادُ النَّاسِ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِيْهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُوْنَ، ثُمَّ يُقَالُ: أَخْرِجُوْا بَعْثَ النَّارِ، فَيُقَالُ: مِنْ كَمْ؟ فَيُقَالُ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ، تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِيْنَ قَالَ: فَذٰلِكَ يَوْمَ يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا، وَذٰلِكَ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ.

رواه مسلم، باب في خروج الدجال...... رقم: ٧٣٨١

وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَشَقَّ ذٰلِكَ عَلَى النَّاسِ حَتّٰى تَغَيَّرَتْ وُجُوْهُهُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِنْ يَأْجُوْجَ وَمَأْجُوْجَ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِيْنَ وَمِنْكُمْ وَاحِدٌ

(الحديث) رواه البخاري، باب قوله: وترى الناس سكارى، رقم: ٤٧٤١

144. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत से पहले) दज्जाल निकलेगा और वह चालीस तक ठहरेगा। इस हदीस को रिवायत करने वाले सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह ﷺ का मतलब चालीस से चालीस दिन थे, या चालीस महीने, या चालीस साल। आगे हदीस ब्यान करते हैं कि फिर अल्लाह तआला (हज़रत) ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम को (दुनिया में) भेजेंगे, गोया कि वह उरवः बिन मस्ऊद हैं, यानी उनकी शक्ल व सूरत हज़रत उरवः बिन मस्ऊद रज़ि० से मिलती जुलती होगी। वह दज्जाल को तलाश करेंगे (और उसका तआक़ुब करेंगे और उसको पकड़ कर) उसका ख़ात्मा कर देंगे। फिर सात साल तक लोग ऐसे रहेंगे कि दो आदमियों के दरम्यान (भी) आपस में दुश्मनी नहीं होगी। फिर अल्लाह तआला (मुल्के) शाम की तरफ़ से एक (ख़ास क़िस्म की) ठंडी हवा चलाएंगे, जिसका यह असर होगा कि रू-ए-ज़मीन पर कोई ऐसा शख़्स बाक़ी नहीं रहेगा जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो, (बहरहाल उस हवा से तमाम अह्ले ईमान ख़त्म हो जाएंगे) यहां तक कि अगर तुम में से कोई शख़्स किसी पहाड़ के अन्दर (भी) चला जाएगा तो यह हवा वहीं पहुंच कर उसका ख़ात्मा कर देगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि उसके बाद सिर्फ़ बुरे लोग ही दुनिया में रह जाएंगे (जिनके दिल ईमान से बिल्कुल ख़ाली होंगे) उनमें परिन्दों वाली तेज़ी और फुर्ती होगी, यानी जिस तरह परिन्दे उड़ने

में फुर्तीले होते हैं उसी तरह ये लोग अपनी ग़लत ख़्वाहिशात के पूरा करने में फुर्ती दिखाएंगे और (दूसरों पर ज़ुल्म व ज़्यादती करने में) दरिन्दों वाली आदतें होंगी, भलाई को भला नहीं समझेंगे और बुराई को बुरा न जानेंगे। शैतान एक शक्ल बनाकर उनके सामने आएगा और उनसे कहेगा : क्या तुम मेरा हुक्म नहीं मानोगे? वे कहेंगे तुम हम को क्या हुक्म देते हो? यानी जो तुम कहो वह हम करें, तो शैतान उन्हें बुतों की परस्तिश का हुक्म देगा (और वे उसकी तकमील करेंगे) और उस वक़्त उन पर रिज़्क़ की फ़राख़ानी होगी, और उनकी ज़िन्दगी (बज़ाहिर) बड़ी अच्छी (ऐश व निशात वाली) होगी। फिर सूर फूंका जाएगा, जो कोई उस सूर की आवाज़ को सुनेगा (उस आवाज़ की दहशत और ख़ौफ़ से बेहोश हो जाएगा और उसकी वजह से उसका सर जिस्म पर सीधा क़ायम न रह सकेगा, बल्कि) उसकी गर्दन इधर-उधर ढलक जाएगी। सबसे पहले जो शख़्स सूर की आवाज़ सुनेगा (और जिस पर सबसे पहले उसका असर पड़ेगा) वह एक आदमी होगा जो अपने ऊंट के हौज़ को मिट्टी से दुरुस्त कर रहा होगा, वह बेहोश और बेजान होकर गिर जाएगा यानी मर जाएगा और दूसरे सब लोग भी इसी तरह बेजान होकर गिर जाएंगे। फिर अल्लाह तआला (हल्की-सी) बारिश बरसाएंगे ऐसी जैसे कि शबनम, उसके असर से इंसानों के जिस्मों में जान पड़ जाएगी। फिर दूसरी मर्तबः सूर फूंका जाएगा तो एकदम सबके सब खड़े हो जाएंगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे। फिर कहा जाएगा कि लोगो! अपने रब की तरफ़ चलो (और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) इन्हें (हिसाब के मैदान में) खड़ा करो, (क्योंकि) इनसे पूछ-ताछ होगी (और इनके आमाल का हिसाब-किताब होगा) फिर हुक्म होगा कि उनमें से दोज़ख़ियों के गिरोह को निकालो। अर्ज़ किया जाएगा कि कितने में से कितने? हुक्म होगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे। रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ये वह दिन होगा जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा यानी उस रोज़ की सख़्ती और लम्बाई का तक़ाज़ा यही होगा कि वह बच्चों को बूढ़ा कर दे, अगरचे हक़ीक़त में बच्चे बूढ़े न हों और यही वह दिन होगा जिस में पिंडली खोली जाएगी यानी जिस दिन अल्लाह तआला ख़ास क़िस्म का ज़ुहूर फ़रमाएंगे। (मुस्लिम)

एक और रिवायत में इस तरह है कि जब सहाबा किराम رضی اللہ عنہم ने सुना कि हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे जहन्नम में जाएंगे तो इस बात से वे इतने परेशान हुए कि चेहरों के रंग बदल गए। उस पर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बात यह है कि नौ सौ निन्नान्वे जो जहन्नम में जाएंगे वे याजूज-माजूज (और उनकी तरह कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन) में से होंगे, और एक हज़ार में से एक (जो जन्नत

में जाएगा) वह तुम में से (और तुम्हारा तरीक़ा अख़्तियार करने वालों में से) होगा। (बुख़ारी)

﴿145﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَيْفَ أَنْعَمُ وَصَاحِبُ الْقَرْنِ قَدِ الْتَقَمَ الْقَرْنَ وَاسْتَمَعَ الْأُذُنَ مَتَى يُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ فَيَنْفُخُ فَكَأَنَّ ذٰلِكَ ثَقُلَ عَلَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُمْ: قُوْلُوْا: حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ، عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في شأن الصور، رقم: ٢٤٣١

145. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं कैसे ख़ुश और चैन से रह सकता हूं हालांकि सूर वाले फ़रिश्ते ने सूर को मुंह में ले लिया है, और उसने कान लगा रखा है कि कब उसको सूर के फूंक देने का हुक्म हो और वह फूंक दे। सहाबा ﷺ ने इस बात को भारी महसूस किया तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : حسبنا الله ونعم الوكيل على الله توكلنا कहते रहा करो। तर्जुमा : *अल्लाह तआला हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं, अल्लाह तआला ही पर हमने भरोसा किया।* (तिर्मिज़ी)

﴿146﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: تُدْنَى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ، حَتَّى تَكُوْنَ مِنْهُمْ كَمِقْدَارِ مِيْلٍ فَيَكُوْنُ النَّاسُ عَلَى قَدْرِ أَعْمَالِهِمْ فِي الْعَرَقِ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ إِلَى كَعْبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ إِلَى حَقْوَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُ الْعَرَقُ إِلْجَامًا قَالَ: وَأَشَارَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِيَدِهِ إِلَى فِيْهِ

رواه مسلم، باب في صفة يوم القيامة، رقم: ٧٢٠٦

146. हज़रत मिक़्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ से क़रीब कर दिया जाएगा, यहां तक कि उनसे सिर्फ़ एक मील की मुसाफ़त के बक़द्र रह जाएगा और (उसकी गर्मी से) लोग अपने आमाल के बक़द्र पसीने में होंगे, यानी जिसके आमाल जितने बुरे होंगे उसी क़द्र उसको पसीना ज़्यादा आएगा। बाज़ वे होंगे, जिनका पसीना उनके टख़्नों तक होगा और बाज़ का पसीना उनके घुटनों तक होगा और बाज़ का उनके कमर तक होगा और बाज़ वे होंगे, जिनका पसीना उनके मुंह तक पहुंच रहा होगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मुंह की तरफ़ हाथ से इशारा किया (कि उनका पसीना यहां तक पहुंच रहा होगा)। (मुस्लिम)

﴿147﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلاَثَةَ أَصْنَافٍ: صِنْفًا مُشَاةً وَصِنْفًا رُكْبَانًا وَصِنْفًا عَلَى وُجُوْهِهِمْ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ يَمْشُوْنَ عَلَى وُجُوْهِهِمْ؟ قَالَ: إِنَّ الَّذِيْ أَمْشَاهُمْ عَلَى أَقْدَامِهِمْ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُمْ عَلَى وُجُوْهِهِمْ، أَمَا إِنَّهُمْ يَتَّقُوْنَ بِوُجُوْهِهِمْ كُلَّ حَدَبٍ وَشَوْكَةٍ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ومن سورة بني اسرآئيل رقم: ٣١٤٢

147. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोग तीन क़िस्मों में उठाए जाएंगे। पैदल चलने वाले, सवार, मुंह के बल चलने वाले। अर्ज़ किया गया: या रसूलुल्लाह! मुंह के बल किस तरह चल सकेंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस अल्लाह ने उन्हें पावं के बल चलाया है, वह उनको मुंह के बल चलाने पर भी यक़ीनन क़ुदरत रखते हैं। अच्छी तरह समझ लो! ये लोग अपने मुंह के ज़रिए ही ज़मीन के हर टीले और हर कांटे से बचेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿148﴾ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تُرْجُمَانٌ، فَيَنْظُرُ أَيْمَنَ مِنْهُ فَلَا يَرَى إِلَّا مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهِ، وَيَنْظُرُ أَشْأَمَ مِنْهُ فَلَا يَرَى إِلَّا مَا قَدَّمَ، وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا يَرَى إِلَّا النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ، فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ.

رواه البخاري، باب كلام الرب تعالى... رقم: ٧٥١٢

148. हज़रत अदी बिन हातिम ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) तुम में से हर शख़्स से अल्लाह तआला इस तरह कलाम फ़रमाएंगे कि दर्मियान में कोई तरजुमान नहीं होगा, (उस वक़्त बन्दा बेबसी से इधर-उधर देखेगा)। जब अपनी दाहिनी जानिब देखेगा, तो अपने आमाल के सिवा कुछ नज़र न आएगा, जब अपनी बाएं जानिब देखेगा तो अपने आमाल के अलावा कुछ नज़र न आएगा। और जब अपने सामने देखेगा तो आग के अलावा कुछ नज़र न आवेगा। लिहाज़ा दोज़ख़ की आग से बचो अगरचे ख़ुश्क खजूर के टुकड़े (को सदक़ा करने) के ज़रिए ही से हो। (बुख़ारी)

﴿149﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ فِيْ بَعْضِ صَلَاتِهِ: اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَسِيْرًا! فَلَمَّا انْصَرَفَ قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ! مَا الْحِسَابُ الْيَسِيْرُ؟ قَالَ: أَنْ يَنْظُرَ فِيْ كِتَابِهِ فَيَتَجَاوَزَ عَنْهُ إِنَّهُ مَنْ نُوْقِشَ الْحِسَابَ يَوْمَئِذٍ يَا عَائِشَةُ هَلَكَ.

(الحديث) رواه احمد ٦/ ٤٨

149. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कुछ नमाज़ों में रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना : 'अल्लाहुम-म हासिब्नी हिसाबैंयसीरा' (ऐ अल्लाह! मेरा हिसाब आसान फ़रमा दीजिए) मैंने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के नबी! आसान हिसाब का क्या मतलब है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दे के आमालनामे पर नज़र डाली जाए फिर उससे दरगुज़र कर दिया जाए, क्योंकि ऐ आइशा! उस दिन जिसके हिसाब में पूछ-ताछ की जाएगी वह तो हलाक हो जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿150﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ اَتٰی رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ فَقَالَ: اَخْبِرْنِیْ مَنْ یَقْوٰی عَلَی الْقِیَامِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ الَّذِیْ قَالَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ ﴿یَوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ فَقَالَ: یُخَفَّفُ عَلَی الْمُؤْمِنِ حَتّٰی یَکُوْنَ عَلَیْہِ کَالصَّلٰوۃِ الْمَکْتُوْبَۃِ.

رواه البيهقي في كتاب البعث والنشور مشكوة المصابيح رقم: ٥٥٦٣

150. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : मुझे बताइये कि क़ियामत के दिन (जो कि पचास हज़ार साल के बराबर होगा) किसे खड़ा रहने की ताक़त होगी, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। "يوم يقوم الناس لرب العالمين" तर्जुमा : *'जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।'* रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के लिए यह खड़ा होना इतना आसान कर दिया जाएगा कि वह दिन उसके लिए फ़र्ज़ नमाज़ की अदाइगी के बक़द्र रह जाएगा। (बैहक़ी, मिश्कात)

﴿151﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْاَشْجَعِيِّ رَضِيَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَتَانِي آتٍ مِنْ عِنْدِ رَبِّي فَخَيَّرَنِي بَيْنَ اَنْ يُدْخِلَ نِصْفَ اُمَّتِي الْجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ، فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ وَهِيَ لِمَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰہِ شَيْئًا.

رواه الترمذي، باب منه حديث تخيير النبي ﷺ... رقم: ٢٤٤١

151. हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की तरफ़ से एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और उसने मुझे (अल्लाह तआला की तरफ़ से) दो बातों में से एक का अख़्तियार दिया, या तो अल्लाह तआला मेरी आधी उम्मत को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दें या (सब के लिए) मुझे शफ़ाअत करने का हक़ दे दें, तो मैंने शफ़ाअत के हक़ को अख़्तियार

कर लिया, (ताकि सारे ही मुसलमान उससे फ़ायदा उठा सकें, कोई महरूम न रहे)। चुनांचे मेरी शफ़ाअ़त हर उस शख़्स के लिए होगी, जो इस हाल में मरे कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करता हो। (तिर्मिज़ी)

﴿152﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: شَفَاعَتِي لِأَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب،باب منه حديث شفاعتي ......،رقم: ٢٤٣٥

152. हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : गुनाह कबीरा करने वालों के हक़ में मेरी शफ़ाअ़त सिर्फ़ उम्मत के लोगों के लिए मख़्सूस होगी (दूसरी उम्मतों के लोगों के लिए नहीं होगी)। (तिर्मिज़ी)

﴿153﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ مَاجَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ، فَيَأْتُوْنَ آدَمَ فَيَقُوْلُوْنَ: اِشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِإِبْرَاهِيْمَ فَإِنَّهُ خَلِيْلُ الرَّحْمٰنِ، فَيَأْتُوْنَ إِبْرَاهِيْمَ فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُوْسٰى فَإِنَّهُ كَلِيْمُ اللهِ، فَيَأْتُوْنَ مُوْسٰى فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِعِيْسٰى فَإِنَّهُ رُوْحُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ، فَيَأْتُوْنَ عِيْسٰى فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُحَمَّدٍ ﷺ فَيَأْتُوْنِي فَأَقُوْلُ: أَنَا لَهَا، فَأَسْتَأْذِنُ عَلٰى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي، وَيُلْهِمُنِي مَحَامِدَ أَحْمَدُهُ بِهَا لَا تَحْضُرُنِي الْآنَ، فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، وَأَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا، فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُوْلُ: يَارَبِّ! أُمَّتِي أُمَّتِي. فَيُقَالُ: اِنْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ شَعِيْرَةٍ مِنْ إِيْمَانٍ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ ثُمَّ أَعُوْدُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَامُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُوْلُ: يَارَبِّ! أُمَّتِي أُمَّتِي، فَيُقَالُ: اِنْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ أَوْ خَرْدَلَةٍ مِنْ إِيْمَانٍ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ ثُمَّ أَعُوْدُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُوْلُ: يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي، فَيَقُوْلُ: اِنْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنٰى أَدْنٰى أَدْنٰى مِثْقَالِ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيْمَانٍ فَأَخْرِجْهُ مِنَ النَّارِ مِنَ النَّارِ مِنَ النَّارِ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ، ثُمَّ أَعُوْدُ الرَّابِعَةَ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَكَ، وَقُلْ يُسْمَعْ، وَسَلْ تُعْطَه، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُوْلُ: يَارَبِّ! اِئْذَنْ لِي فِيْمَنْ قَالَ:

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ، فَيَقُوْلُ: وَعِزَّتِيْ وَجَلَالِيْ وَكِبْرِيَائِيْ وَعَظَمَتِيْ لَاُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. رواه البخاري،باب كلام الرب تعالى..... رقم: ٧٥١٠

(وَفِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى: شَفَعَتِ الْمَلَائِكَةُ وَشَفَعَ النَّبِيُّوْنَ وَشَفَعَ الْمُؤْمِنُوْنَ، وَلَمْ يَبْقَ اِلَّا اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ،فَيَقْبِضُ قَبْضَةً مِنَ النَّارِ فَيُخْرِجُ مِنْهَا قَوْمًا لَمْ يَعْمَلُوْا خَيْرًا قَطُّ، قَدْ عَادُوْا حُمَمًا فَيُلْقِيْهِمْ فِيْ نَهْرٍ فِيْ اَفْوَاهِ الْجَنَّةِ يُقَالُ لَهُ نَهْرُ الْحَيَاةِ، فَيَخْرُجُوْنَ كَمَا تَخْرُجُ الْحِبَّةُ فِيْ حَمِيْلِ السَّيْلِ قَالَ: فَيَخْرُجُوْنَ كَاللُّؤْلُؤِ فِيْ رِقَابِهِمُ الْخَوَاتِمُ،يَعْرِفُهُمْ اَهْلُ الْجَنَّةِ، هٰؤُلَاءِ عُتَقَاءُ اللّٰهِ الَّذِيْنَ اَدْخَلَهُمُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ عَمَلٍ عَمِلُوْهُ وَلَا خَيْرٍ قَدَّمُوْهُ، ثُمَّ يَقُوْلُ: اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ فَمَا رَاَيْتُمُوْهُ فَهُوَ لَكُمْ، فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا اَعْطَيْتَنَا مَالَمْ تُعْطِ اَحَدًا مِنَ الْعَالَمِيْنَ، فَيَقُوْلُ: لَكُمْ عِنْدِيْ اَفْضَلُ مِنْ هٰذَا، فَيَقُوْلُوْنَ: يَارَبَّنَا! اَيُّ شَيْءٍ اَفْضَلُ مِنْ هٰذَا؟ فَيَقُوْلُ: رِضَائِيْ فَلَا اَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ اَبَدًا. رواه مسلم، باب معرفة طريق الرؤية،رقم: ٤٥٤

153. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब क़ियामत का दिन होगा तो (परेशानी की वजह से) लोग एक दूसरे के पास भागे-भागे फिरेंगे। चुनांचे (हज़रत) आदम ﷺ के पास जाएंगे और उनसे अर्ज़ करेंगे—आप अपने रब से हमारी शफ़ाअत कर दीजिए। वह फ़रमाएंगे, मैं इसका अह्ल नहीं, तुम इब्राहीम ﷺ के पास जाओ, वह अल्लाह तआला के दोस्त हैं। यह उनके पास जाएंगे। वह फ़रमाएंगे, मैं इसका अह्ल नहीं, तुम मूसा ﷺ के पास जाओ वह कलीमुल्लाह यानी अल्लाह तआला से बातें करने वाले हैं। यह उनके पास जाएंगे। वह भी फ़रमाएंगे मैं इसका अह्ल नहीं, लेकिन तुम ईसा ﷺ के पास जाओ ये रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं। ये उनके पास जाएंगे। वह भी फ़रमाएंगे मैं इसका अह्ल नहीं अलबत्ता तुम हज़रत मुहम्मद ﷺ के पास जाओ। चुनांचे वे लोग मेरे पास आएंगे। मैं कहूंगा : (बहुत अच्छा) शफ़ाअत का हक़ मुझे हासिल है। उसके बाद मैं अपने रब से इजाज़त मांगूंगा। मुझे इजाज़त मिल जाएगी और अल्लाह तआला मेरे दिल में अपनी ऐसी तारीफ़ें डालेंगे जो इस वक़्त मुझे नहीं आतीं। मैं उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़ करूंगा और सज्दे में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ! सर उठाओ, कहो। तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअत करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अर्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, यानी मेरी उम्मत को बख़्श दीजिए। मुझसे कहा जाएगा जाओ, जिसके दिल में जौ के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी जहन्नम से निकाल लो

जाऊंगा और हुक्म की तामील करूंगा। वापस आकर फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़ करूंगा और सज्दा में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअत करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अर्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत। (मुझसे) कहा जाएगा---- जाओ, जिसके दिल में एक ज़र्रा या एक राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी निकाल लो। मैं जाऊंगा और हुक्म की तामील करूंगा। वापस आकर फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़ करूंगा और सज्दे में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअत करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अर्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत। (मुझसे) कहा जाएगा जाओ जिसके दिल में एक राई के दाने से भी कम से कमतर ईमान हो उसे भी निकाल लो। मैं जाऊंगा और हुक्म की तामील करके चौथी मर्तबा फिर वापस आऊंगा और फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़ करूंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअत करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अर्ज़ करूंगा : मेरे रब! मुझे उनके निकालने की भी इजाज़त दे दीजिए जिन्होंने कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* पढ़ा हो। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे : मेरी इज़्ज़त की क़सम! मेरे बुलन्द मर्तबे की क़सम! मेरी बड़ाई की क़सम और मेरी बुज़ुर्गी की क़सम! जिन्होंने यह कलिमा पढ़ लिया है उन्हें तो मैं ज़रूर जहन्नम से (ख़ुद) निकाल लूंगा।(बुख़ारी)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ की हदीस में इस तरह है कि (चौथी मर्तबा आप ﷺ की बात के जवाब में) अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे : फ़रिश्ते भी शफ़ाअत कर चुके, अम्बिया علیہم السلام भी शफ़ाअत कर चुके और मोमिनीन भी शफ़ाअत कर चुके, अब अरहमुर्राहिमीन के अलावा और कोई बाक़ी नहीं रहा। चुनांचे अल्लाह तआला मुट्ठी भर कर ऐसे लोगों को दोज़ख़ से निकाल लेंगे, जिन्होंने पहले कभी कोई ख़ैर का काम न किया होगा। वे लोग दोज़ख़ में (जल कर) कोयला हो चुके होंगे। जन्नत के दरवाज़ों के सामने एक नहर है, जिसे नहरे हयात कहा जाता है। अल्लाह तआला उसमें उन लोगों को डाल देंगे। वे उसमें से (फ़ौरी तौर पर तर व ताज़ा होकर) निकल आएंगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (पानी और खाद मिलने की वजह से फ़ौरी) उग आता है और ये लोग मोती की तरह साफ़ सुथरे और चमकदार हो जाएंगे। उनकी गरदनों में सोने के पट्टे पड़े होंगे जिनसे जन्नती उनको पहचानेंगे कि ये लोग

(जहन्नम की आग से) अल्लाह तआ़ला के आज़ाद करदा हैं। उन्हें अल्लाह तआ़ला ने बग़ैर किसी नेक अ़मल किए हुए जन्नत में दाख़िल कर दिया है। फिर अल्लाह तआ़ला (उनसे) फ़रमाएंगे— जन्नत में दाख़िल हो जाओ, जो कुछ तुमने (जन्नत में) देखा वह सब तुम्हारा है। वे कहेंगे, हमारे रब! आपने हमें वह कुछ अ़ता फ़रमाया, जो दुनिया में किसी को नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे : मेरे पास तुम्हारे लिए इससे अफ़ज़ल नेमत है। वे अ़र्ज करेंगे, हमारे रब! इससे अफ़ज़ल क्या नेमत होगी? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : मेरी रज़ा। इसके बाद अब मैं तुम से कभी नाराज़ नहीं हूंगा।
(मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में हज़रत ईसा ﷵ को रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह इस वजह से कहा गया है कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के हुक्म कलिमा 'कुन' से इस तरह हुई है कि जिबरील ﷵ ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उनकी मां के गरेबान में फूंका, जिससे वह एक रूह और जानदार चीज़ बन गए। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

﴿154﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ ﷺ فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُسَمَّوْنَ الْجَهَنَّمِيِّيْنَ.

رواه البخاري، باب صفة الجنة والنار، رقم:٦٥٦٦

154. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों की एक जमाअ़त जिनका लक़ब जहन्नमी होगा हज़रत मुहम्मद ﷺ की शफ़ाअ़त पर दोज़ख़ से निकलकर जन्नत में दाख़िल होंगे। (बुख़ारी)

﴿155﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْفِئَامِ مِنَ النَّاسِ، مِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْقَبِيْلَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْعُصْبَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلرَّجُلِ حَتّٰى يَدْخُلُوا الْجَنَّةَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب منه دخول سبعين الف..... برقم: ٢٤٤٠

155. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में कुछ लोग वे होंगे जो क़ौमों की शफ़ाअ़त करेंगे, यानी उनका मक़ाम यह होगा कि अल्लाह उनको क़ौमों की शफ़ाअ़त की इजाज़त देंगे।

क़बीले की शफ़ाअ़त करेंगे, कुछ वे होंगे जो उस्बा की शफ़ाअ़त करेंगे और कुछ वे होंगे जो एक आदमी की शफ़ाअ़त कर सकेंगे (अल्लाह तआ़ला उन सब की सिफ़ारिशों को क़ुबूल फ़रमाएंगे), यहां तक कि वे सब जन्नत में पहुंच जाएंगे। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : दस से चालीस तक की तादाद वाली जमाअ़त को उस्बा कहते हैं।

﴾156﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ وَاَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ)قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَتُرْسَلُ الْاَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَتَقُوْمَانِ جَنْبَتَي الصِّرَاطِ يَمِيْنًا وَشِمَالًا، فَيَمُرُّ اَوَّلُكُمْ كَالْبَرْقِ قَالَ قُلْتُ: بِاَبِي اَنْتَ وَاُمِّيْ اَيُّ شَيْءٍ كَمَرِّ الْبَرْقِ؟ قَالَ: اَلَمْ تَرَوْا اِلَى الْبَرْقِ كَيْفَ يَمُرُّ وَيَرْجِعُ فِي طَرْفَةِ عَيْنٍ؟ ثُمَّ كَمَرِّ الرِّيْحِ، ثُمَّ كَمَرِّ الطَّيْرِ وَشَدِّ الرِّجَالِ، تَجْرِيْ بِهِمْ اَعْمَالُهُمْ، وَنَبِيُّكُمْ قَائِمٌ عَلَى الصِّرَاطِ يَقُوْلُ: رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ، حَتّٰى تَعْجِزَ اَعْمَالُ الْعِبَادِ، حَتّٰى يَجِيْءَ الرَّجُلُ فَلَا يَسْتَطِيْعُ السَّيْرَ اِلَّا زَحْفًا قَالَ: وَفِيْ حَافَّتَي الصِّرَاطِ كَلَالِيْبُ مُعَلَّقَةٌ مَامُوْرَةٌ تَاْخُذُ مَنْ اُمِرَتْ بِهٖ فَمَخْدُوْشٌ نَاجٍ وَمَكْدُوْسٌ فِي النَّارِ وَالَّذِيْ نَفْسُ اَبِيْ هُرَيْرَةَ بِيَدِهٖ اِنَّ قَعْرَ جَهَنَّمَ لَسَبْعِيْنَ خَرِيْفًا.

رواه مسلم،باب ادنى اهل الجنة منزلة فيها،رقم:٤٨٢

156. हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अमानत की सिफ़त और सिलारहमी (रिश्ते जोड़ने) को (एक शक्ल देकर) छोड़ दिया जाएगा। ये दोनों चीज़ें पुलसिरात के दाएं-बाएं खड़ी हो जाएंगी (ताकि अपनी रियायत करने वालों की सिफ़ारिश और न रियायत करने वालों की शिकायत करें)। तुम्हारा पहला क़ाफ़िला पुलसिरात से बिजली की तरह तेज़ी के साथ गुज़र जाएगा। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने अ़र्ज़ किया : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान, बिजली की तरह तेज़ गुज़रने का क्या मतलब हुआ? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने बिजली को नहीं देखा कि वह किस तरह पल भर में गुज़र कर लौट भी आती है। इसके बाद गुज़रने वाले हवा की तरह तेज़ी से गुज़रेंगे, फिर तेज़ परिन्दों की तरह, फिर जवां मर्दों के दौड़ने की रफ़्तार से। ग़रज़ हर शख़्स की रफ़्तार उसके आ़माल के मुताबिक़ होगी और तुम्हारे नबी ﷺ पुलसिरात पर खड़े होकर कह रहे होंगे, ऐ मेरे रब! इनको सलामती से गुज़ार दीजिए इनको सलामती से गुज़ार दीजिए, यहां तक कि ऐसे लोग भी होंगे जो अपने आ़माल की कमज़ोरी की वजह से पुलसिरात पर घिसट कर ही चल सकेंगे। पुलसिरात के

..नों तरफ़ लोहे के आंकड़े लटके हुए होंगे। जिसके बारे में हुक्म दिया जाएगा, वे उसको पकड़ लेंगे। कुछ लोगों को उन आंकड़ों की वजह से सिर्फ़ ख़राश आएगी। .. तो नजात पा जाएंगे और कुछ जहन्नम में धकेल दिए जाएंगे। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में अबू हुरैरह की जान है, .लाशुबहा जहन्नम की गहराई सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर है। (मुस्लिम)

﴿157﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا أَسِيرُ فِي الْجَنَّةِ إِذَا أَنَا بِنَهَرٍ حَافَتَاهُ قِبَابُ الدُّرِّ الْمُجَوَّفِ، قُلْتُ: مَا هٰذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هٰذَا الْكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَ رَبُّكَ، فَإِذَا طِيْنُهُ مِسْكٌ أَذْفَرُ. رواه البخاري، باب في الحوض، رقم: ٦٥٨١

.57. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में चलने के दौरान मेरा गुज़र एक नहर पर हुआ, उसके दोनों .. निब खोखले मोतियों से तैयार किए हुए गुंबद बने हुए थे। मैंने जिबरील ﷺ से ..छा यह क्या है? जिबरील ﷺ ने कहा कि यह नहर कौसर है, जो आप के रब ने आप को अ़ता फ़रमाई है। मैंने देखा कि उसकी मिट्टी (जो उसकी तह में थी) वह .. हायत महकने वाली मुश्क थी। (बुख़ारी)

﴿158﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ، وَزَوَايَاهُ سَوَاءٌ، وَمَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ الْوَرِقِ، وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ، وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ، فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَا يَظْمَأُ بَعْدَهُ أَبَدًا.

رواه مسلم، باب اثبات حوض نبينا ...، رقم: ٥٩٧١

158. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ .. इर्शाद फ़रमाया : मेरे हौज़ की मुसाफ़त एक महीने की है और उसके दोनों कोने बिल्कुल बराबर हैं, यानी उसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर है। उसका पानी चांदी से ..यादा सफ़ेद है और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से भी अच्छी है और उसके कूज़े आसमान .. तारों की तरह (बेशुमार) हैं। जो उसका पानी पी लेगा, उसको कभी प्यास नहीं लगेगी। (मुस्लिम)

..यदा : *"हौज़ की मुसाफ़त एक महीने की है"* इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने जो हौज़े कौसर रसूलुल्लाह ﷺ को अ़ता फ़रमाया है वह इस क़दर तवील व अ़रीज़ है कि उसकी एक जानिब से दूसरी जानिब तक एक महीने की मुसाफ़त है।

﴿159﴾ عَنْ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوْضًا وَاِنَّهُمْ يَتَبَاهَوْنَ اَيُّهُمْ اَكْثَرُ وَارِدَةً وَاِنِّيْ اَرْجُوْ اَنْ اَكُوْنَ اَكْثَرَهُمْ وَارِدَةً.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في صفة الحوض، رقم: ٢٤٤٣

159. हज़रत समुरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (आख़िरत में) हर नबी का एक हौज़ है और अम्बिया आपस में इस बात पर फ़ख़्र करेंगे कि उनमें से किसके पास पीने वाले ज़्यादा आते हैं। मैं उम्मीद रखता हूं कि सबसे ज़्यादा पीने के लिए लोग मेरे पास आएंगे (और मेरे हौज़ से सैराब होंगे)। (तिर्मिज़ी)

﴿160﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ شَهِدَ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ وَاَنَّ عِيْسٰى عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ وَكَلِمَتُهُ اَلْقَاهَا اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، اَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ عَلٰى مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ. زَادَ جُنَادَةُ: مِنْ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ اَيِّهَا شَاءَ.

رواه البخاري، باب قوله تعالى يا أهل الكتاب ...، رقم: ٣٤٣٥

160. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जिस शख़्स ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेले हैं, उनका कोई शरीक नहीं, और यह कि हज़रत मुहम्मद ﷺ उनके बन्दे और रसूल हैं, और हज़रत ईसा ﷺ (भी) अल्लाह तआला के बन्दे और उनके रसूल हैं, और उनका कलिमा है (कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के सिर्फ़ अल्लाह तआला के हुक्म कलिमा 'कुन' से हुई) और अल्लाह तआला की तरफ़ से वह एक रूह यानी जान हैं (जिस जान को हज़रत जिबरील ﷺ की फूंक के ज़रिए हज़रत मरयम अलै० के बतन तक पहुंचाया गया। हज़रत जिबरील ﷺ ने हज़रत मरयम अलै० के गरेबान में फूंका था) और यह कि जन्नत बरहक़ है, दोज़ख़ बरहक़ है (जो इन सब की गवाही दे) ख़्वाह उसका अमल कैसा ही हो, अल्लाह तआला उसे जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमाएंगे। हज़रत जुनादा रज़ि० ने ये अल्फ़ाज़ भी नक़ल किए हैं : वह जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। (बुख़ारी)

﴿161﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ: اَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصّٰلِحِيْنَ مَا لَا عَيْنٌ رَاَتْ، وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ، فَاقْرَءُوْا

اِنْ شِئْتُمْ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ﴾

رواه البخاری،باب ماجاء فی صفة الجنة رقم:٣٢٤٤

61. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हदीसे कुदसी ब्यान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेमतें तैयार कर रखी हैं, जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल में कभी उनका ख़्याल गुज़रा। अगर तुम चाहो तो क़ुरआन की ये आयत पढ़ो: "فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ" तर्जुमा : *कोई आदमी भी उन नेमतों को नहीं जानता जो उन बन्दों के लिए छुपा कर रखी गई हैं, जिनमें उनकी आंखों के लिए ठंडक का सामान है।* (बुख़ारी)

﴿162﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَوْضِعُ سَوْطٍ فِی الْجَنَّةِ خَیْرٌ مِنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْهَا.

رواه البخاری،باب ماجاء فی صفة الجنة رقم:٣٢٥٠

62. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में एक कूड़े की जगह यानी कम-से-कम जगह भी दुनिया और जो कुछ उसमें है, उससे बेहतर (और ज़्यादा क़ीमती) है। (बुख़ारी)

﴿163﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَلَقَابُ قَوْسِ اَحَدِكُمْ اَوْ مَوْضِعُ قَدَمٍ مِنَ الْجَنَّةِ خَیْرٌ مِنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْهَا، وَلَوْ اَنَّ امْرَاَةً مِنْ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَتْ اِلَی الْاَرْضِ لَاَضَاءَتْ مَا بَیْنَهُمَا، وَلَمَلَاَتْ مَا بَیْنَهُمَا رِیْحًا، وَلَنَصِیْفُهَا یَعْنِی الْخِمَارَ خَیْرٌ مِنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْهَا.

رواه البخاری،باب صفة الجنة والنار،رقم:٦٥٦٨

163. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में तुम्हारी एक कमान के बराबर जगह या एक क़दम के बराबर जगह दुनिया और जो कुछ उसमें है उससे बहतर है और अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत (जन्नत से) ज़मीन की तरफ झांके तो जन्नत से लेकर ज़मीन तक (की जगह को) रौशन कर दे और ख़ुश्बू से भर दे और उसका दुपट्टा भी दुनिया और दुनिया में जो कुछ है, उससे बेहतर है। (बुख़ारी)

﴿164﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ یَبْلُغُ بِهِ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ فِی الْجَنَّةِ شَجَرَةً،

يَسِيْرُ الرَّاكِبُ فِيْ ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ، لَا يَقْطَعُهَا، وَاقْرَءُ وْا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ﴾

رواه البخاري، باب قوله وظل ممدود، رقم: ٤٨٨١

164. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में एक दरख़्त ऐसा है कि सवार उसके साए में सौ साल चल कर भी उसको पार न कर सके और तुम चाहो तो ये आयत पढ़ो ''وظل ممدود'' *'और (जन्नत लम्बे सायों में (होंगे)।'* (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَأْكُلُوْنَ فِيْهَا وَيَشْرَبُوْنَ، وَلَا يَتْفِلُوْنَ وَلَا يَبُوْلُوْنَ، وَلَا يَتَغَوَّطُوْنَ وَلَا يَمْتَخِطُوْنَ قَالُوْا: فَمَا بَالُ الطَّعَامِ؟ قَالَ: جُشَاءٌ وَرَشْحٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ، يُلْهَمُوْنَ التَّسْبِيْحَ وَالتَّحْمِيْدَ، كَمَا يُلْهَمُوْنَ النَّفَسَ.

رواه مسلم، باب في صفات الجنة واهلها، رقم: ٧١٥٢

165. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमा हुए सुना : जन्नती जन्नत में खाएंगे और पिएंगे, (लेकिन) न तो थूक आएगा, न पेशाब-पाखाना होगा और न नाक की सफ़ाई की ज़रूरत होगी। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : खाने का क्या होगा? यानी हज़्म कैसे होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : डकार आएगी और पसीना मुश्क के पसीने की तरह होगा यानी ग़िज़ा का जो अम्र निकलना होगा वह डकार और पसीना के ज़रिए निकल जाया करेगा और जन्नति की ज़बान पर अल्लाह तआ़ला की हम्द व तस्बीह इस तरह जारी होगी, जिस तरह उनका सांस जारी होगा। (मुस्लि

﴿166﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ وَأَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُنَادِيْ مُنَادٍ: إِنَّ لَكُمْ أَنْ تَصِحُّوْا فَلَا تَسْقَمُوْا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيَوْا فَلَا تَمُوْتُوْا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَشِبُّوْا فَلَا تَهْرَمُوْا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوْا فَلَا تَبْأَسُوْا أَبَدًا فَذٰلِكَ قَوْلُهُ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَنُوْدُوْٓا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ﴾

رواه مسلم، باب في دوام نعيم اهل الجنة ......، رقم: ٧١٥٧

166. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर् फ़रमाया : एक पुकारने वाला जन्नतियों को पुकारेगा कि तुम्हारे लिए सेहत है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिए ज़िन्दगी है, कभी मौत न आएगी, तुम्हारे लिए जवानी है, कभी बुढ़ापा नहीं आएगा और तुम्हारे लिए ख़ुशहाली है, कभी कोई परेशानी न होगी। यह हदीस इस आयत की तफ़्सीर है, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने

"وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ" तर्जुमा: *'और उनसे पुकार कर कहा जाएगा यह जन्नत तुमको तुम्हारे आमाल के बदले दी गई है।'* (मुस्लिम)

﴾167﴿ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا دَخَلَ اَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ، قَالَ يَقُوْلُ اللهُ تَعَالٰى: تُرِيْدُوْنَ شَيْئًا اَزِيْدُكُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: اَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوْهَنَا؟ اَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ؟ قَالَ: فَيَكْشِفُ الْحِجَابَ، فَمَا اُعْطُوا شَيْئًا اَحَبَّ اِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ اِلٰى رَبِّهِمْ عَزَّوَجَلَّ. رواه مسلم، باب اثبات رؤية المؤمنين في الآخرة ...... رقم: ٤٤٩

167. हज़रत सुहैब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे, तो अल्लाह तआला उनसे इर्शाद फ़रमाएंगे : क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम को मज़ीद एक चीज़ अता करूं यानी तुमको जो कुछ अब तक अता हुआ है उस पर मज़ीद एक ख़ास चीज़ इनायत करूं? वे कहेंगे : क्या आपने हमारे चेहरे रौशन नहीं कर दिए और क्या आपने हमें दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया? (अब इसके अलावा और क्या चीज़ हो सकती है जिसकी हम ख़्वाहिश करें, बन्दों के इस जवाब के बाद) फिर अल्लाह तआला पर्दा हटा देंगे (जिसके बाद वह अल्लाह तआला का दीदार करेंगे) अब उनका हाल यह होगा कि जो कुछ अब तक इन्हें मिला था, उन सबसे ज़्यादा महबूब उनके लिए अपने रब के दीदार की नेमत होगी। (मुस्लिम)

﴾168﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَغْبِطُوا فَاجِرًا بِنِعْمَةٍ، اِنَّكَ لَا تَدْرِيْ مَا هُوَ لَاقٍ بَعْدَ مَوْتِهِ، اِنَّ لَهُ عِنْدَ اللهِ قَاتِلًا لَا يَمُوْتُ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٦٤٣/١٠

168. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम किसी गुनहगार को नेमतों में देखकर उस पर रश्क न करो, तुम्हें मालूम नहीं मौत के बाद उसके साथ क्या होने वाला है? अल्लाह तआला के यहां उसके लिए एक ऐसा क़ातिल है, जिसको कभी मौत नहीं आएगी (क़ातिल से मुराद दोज़ख़ की आग है, जिसमें वह रहेगा)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾169﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِيْنَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، قَالَ: فُضِّلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّيْنَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا. رواه البخاري، باب صفة النار وانها مخلوقة، رقم: ٣٢٦٥

169. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी इस दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! यही (दुनिया की आग) काफ़ी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ की आग दुनिया की आग के मुक़ाबले में उनहत्तर दर्जा बढ़ा दी गई है। हर दर्जे की हरारत दुनिया की आग की हरारत के बराबर है। (बुख़ारी)

﴾170﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُؤْتَى بِأَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا، مِنْ أَهْلِ النَّارِ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْغَةً، ثُمَّ يُقَالُ: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ نَعِيْمٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ! وَيُؤْتَى بِأَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ، فَيُقَالُ لَهُ: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ شِدَّةٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ! مَا مَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ، وَلَا رَأَيْتُ شِدَّةً قَطُّ.

رواه مسلم، باب صبغ انعم اهل الدنيا في النار، رقم: ٧٠٨٨

170. हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन दोज़ख़ियों में से एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा, जिसने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी निहायत ऐश व आराम के साथ गुज़ारी होगी, उसको दोज़ख़ की आग में एक गोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा, आदम के बेटे! तूने कभी कोई अच्छी हालत देखी है, और क्या कभी ऐश व आराम का कोई दौर तुझ पर गुज़रा है? वह अल्लाह की क़सम खा कर कहेगा, कभी नहीं मेरे रब! उसी तरह एक शख़्स जन्नतियों में से ऐसा लाया जाएगा जिसकी ज़िन्दगी सबसे ज़्यादा तकलीफ़ में गुज़री होगी, उसको जन्नत में एक गोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा : आदम के बेटे! क्या तूने कभी कोई दुख देखा है, क्या कोई दौर तुझ पर तकलीफ़ का गुज़रा है? वह अल्लाह की क़सम खा कर कहेगा, कभी नहीं मेरे रब! कभी कोई तकलीफ़ मुझ पर नहीं गुज़री और मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं देखी। (मुस्लिम)

﴾171﴿ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى كَعْبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى حُجْزَتِهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى تَرْقُوَتِهِ.

رواه مسلم، باب جهنم، رقم: ٧١٧٠

171. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : कुछ दोज़ख़ियों को आग उनके टख़नों तक पकड़ेगी और कुछ को उनके घुटनों तक पकड़ेगी और कुछ को उनकी कमर तक पकड़ेगी और कुछ को उनकी हंसुली (गर्दन के नीचे की हड्डी) तक पकड़ेगी। (मुस्लिम)

﴿172﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَرَأَ هٰذِهِ الْآيَةَ ﴿اتَّقُوا اللهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ﴾ (البقرة:١٣٢) قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ اَنَّ قَطْرَةً مِنَ الزَّقُّوْمِ قُطِرَتْ فِيْ دَارِ الدُّنْيَا لَاَفْسَدَتْ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا مَعَايِشَهُمْ، فَكَيْفَ بِمَنْ يَكُوْنُ طَعَامُهُ.

رواه الترمذي وقال:هذا حديث حسن صحيح،باب ماجاء في صفة شراب اهل النار،رقم:٢٥٨٥

172. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ये आयत तिलावत फ़रमाई: "اِتَّقُوا اللهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ" तर्जुमा : अल्लाह तआला से डरा करो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और (कामिल) इस्लाम ही पर जान देना। (अल्लाह तआला से और उनके अज़ाब से डरने के बारे में) आप ﷺ ने ब्यान फ़रमाया *'ज़क्क़ूम'* का अगर एक क़तरा दुनिया में टपक जाए तो दुनिया में बसने वालों के सामाने ज़िन्दगी को ख़राब कर दे, तो क्या हाल उस शख़्स का होगा, जिसका खाना ज़क्क़ूम होगा? (ज़क्क़ूम जहन्नम में पैदा होने वला एक दरख़्त है) (तिर्मिज़ी)

﴿173﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللهُ الْجَنَّةَ قَالَ لِجِبْرِيْلَ: اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا، فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَا يَسْمَعُ بِهَا اَحَدٌ اِلَّا دَخَلَهَا ثُمَّ حَفَّهَا بِالْمَكَارِهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَقَدْ خَشِيْتُ اَنْ لَا يَدْخُلَهَا اَحَدٌ، قَالَ: فَلَمَّا خَلَقَ اللهُ تَعَالَى النَّارَ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا، فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَا يَسْمَعُ بِهَا اَحَدٌ فَيَدْخُلَهَا، فَحَفَّهَا بِالشَّهَوَاتِ، ثُمَّ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ وَجَلَالِكَ! لَقَدْ خَشِيْتُ اَنْ لَا يَبْقَى اَحَدٌ اِلَّا دَخَلَهَا.

رواه ابو داؤد،باب في خلق الجنة والنار:٤٧٤٤

173. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला ने जन्नत को पैदा किया, तो जिबरील ﷺ से फ़रमाया :

जाओ, जन्नत को देखो, उन्होंने जाकर देखा। फिर अल्लाह तआला से आकर अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! जो कोई भी इस जन्नत का हाल सुनेगा, वह उसमें ज़रूर पहुंचेगा, यानी पहुंचने की पूरी कोशिश करेगा फिर अल्लाह तआला ने उसको नागवारियों से घेर दिया, यानी शरई अहकाम की पाबंदी लगा दी, जिन पर अमल करना नफ़्स को नागवार है। फिर फ़रमाया : जिबरील अब जाकर देखो। चुनांचे उन्होंने जाकर देखा, फिर आकर अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! अब तो मुझे यह डर है कि इसमें कोई भी न जा सकेगा। फिर जब अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को पैदा किया तो जिबरील ﷺ से फ़रमाया : जिबरील जाओ जहन्नम को देखो। उन्होंने जाकर देखा, फिर अल्लाह तआला से आकर अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! जो कोई भी उसका हाल सुनेगा, उसमें दाख़िल होने से बचेगा, यानी बचने की पूरी कोशिश करेगा। इसके बाद अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया, फिर फ़रमाया : जिबरील ﷺ अब जाकर देखो उन्होंने जाकर देखा। फिर आकर अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम, आपके बुलन्द मर्तबे की क़सम! अब तो मुझे यह डर है कि कोई भी जहन्नम में दाख़िल होने से न बच सकेगा। (अबूदाऊद)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तामीले अवामिर में कामयाबी का यक़ीन

अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह तआ़ला के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने में दुनिया व आख़िरत की तमाम कामयाबियों का यक़ीन करना।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَّكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ط وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا﴾

[الأحزاب:٣٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए इस बात की गुंजाइश नहीं कि जब अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ किसी काम का हुक्म दे दें तो फिर उनको अपने काम में कोई अख़्तियार बाक़ी रहे, यानी इसकी गुंजाइश नहीं रहती कि वह काम करें या न करें, बल्कि अ़मल करना ही ज़रूरी है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ की नाफ़रमानी करेगा, तो वह यक़ीनन खुली हुई गुमराही में मुब्तला होगा। (अहज़ाब : 36)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللهِ﴾ [النساء:٦٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हमने हर एक रसूल को इसी मक़सद के लिए भेजा कि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से उनकी इताअ़त की जाए।

(निसा : 64)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا﴾

[الحشر:٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जो कुछ तुम्हें रसूल दें वह ले लो और जिस चीज़ से रोकें रुक जाया करो जो हुक्म भी दें उसको मान लो।

(हश्र : 7)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا﴾

[الاحزاب:٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ात में अच्छा नमूना है, ख़ास तौर से उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआ़ला और क़ियामत की उम्मीद रखता है और अल्लाह तआ़ला को बहुत याद करता है।

(अहज़ाब : 21)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ﴾

[النور:٦٣]

अल्लाह का इर्शाद है : जो लोग अल्लाह तआ़ला के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि उन पर कोई आफ़त आ जाए या उनपर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल हो। (मोमिनून : 63)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾

[النحل:٩٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो शख़्स कोई नेक काम करे मर्द हो या औरत, बशर्तेकि ईमान वाला हो, तो हम उसे ज़रूर अच्छी ज़िन्दगी बसर कराएंगे। (यह दुनिया में होगा और आख़िरत में) उनके अच्छे कामों के बदले में उनको अज्र देंगे।

(नहल : 97)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا﴾ [الاحزاب:٧١]

अल्लाह का इर्शाद है : और जिसने अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल की बात मानी, उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (अहज़ाब : 71)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ [آل عمران:٣١]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करते हो तो तुम मेरी फ़रमांबरदारी करो, अल्लाह तआ़ला तुमसे मुहब्बत करेंगे और तुम्हारे सब गुनाह बख़्श देंगे और अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाले मेहरबान हैं। (आले इमरान : 31)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا﴾ [مريم:٩٦]

अल्लाह का इर्शाद है : बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए, अल्लाह तआ़ला उनके लिए मख़्लूक़ के दिल में मुहब्बत पैदा कर देंगे। (मरयम : 96)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا﴾ [طٰه:١١٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा, उसको उसके अ़मल का पूरा बदला मिलेगा और उसको न किसी ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा और न ही हक़तल्फ़ी का, यानी न यह होगा कि गुनाह किए बग़ैर लिख दिया जाए और न ही कोई नेकी कम लिखकर हक़तल्फ़ी की जाएगी। (ताहा : 112)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ☆ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ﴾ [الطلاق:٣،٢]

अल्लाह का इर्शाद है : और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है, तो अल्लाह तआ़ला हर मुश्किल से ख़लासी की कोई-न-कोई सूरत पैदा कर देते

हैं और उसको ऐसी जगह से रोजी पहुंचाते हैं जहां से उसको ख़्याल भी नहीं होता। (तलाक़ : 2-3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ﴾ [الانعام:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी ही ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया, जिनको हमने दुनिया में ऐसी क़ुव्वत दी थी कि तुम को वह क़ुव्वत नहीं दी (जिस्मानी क़ुव्वत, माल की फ़रावानी, बड़े ख़ानदान वाला होना, इज़्ज़त का मिलना, उम्र का दराज़ होना, हुकूमती ताक़त का होना वग़ैरह-वग़ैरह) और हमने उन पर ख़ूब बारिशें बरसाईं, हमने उनके खेत और बाग़ों के नीचे से नहरें जारी कीं फिर (बावजूद उस क़ुव्वत व सामान के) हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और उनके बाद उनकी जगह दूसरी जमाअतों को पैदा कर दिया। (अन्आम : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا﴾ [الكهف:٤٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : माल और औलाद तो दुनिया की ज़िन्दगी की (फ़ना होने वाली) रौनक़ हैं और अच्छे आमाल जो हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं, वह आपके रब के यहां यानी आख़िरत में सवाब के एतबार से भी हज़ारों दर्जा बेहतर हैं, यानी अच्छे आमाल पर जो उम्मीदें वाबस्ता होती हैं वे आख़िरत में पूरी होंगी और उम्मीद से भी ज़्यादा सवाब मिलेगा। इसके बरअक्स माल व अस्बाब से उम्मीदें पूरी नहीं होतीं। (कहफ़ : 46)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [النحل:٩٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया में है, वह एक दिन ख़त्म हो जाएगा और जो अमल तुम अल्लाह तआला के पास भेज दोगे वह हमेशा बाक़ी रहेगा। (नह्ल : 96)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴾ [القصص:٦٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो कुछ तुम को दुनिया में दिया गया है, वह तो सिर्फ़ दुनिया की चन्द दिनों की ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान और यहां की (फ़ना होने वाली) रौनक़ है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते? (क़सस : 60)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿174﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: بَادِرُوْا بِالْاَعْمَالِ سَبْعًا، هَلْ تَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا فَقْرًا مُنْسِيًا، اَوْ غِنًى مُطْغِيًا، اَوْمَرَضًا مُفْسِدًا، اَوْهَرَمًا مُفْنِدًا، اَوْ مَوْتًا مُجْهِزًا اَوِالدَّجَّالَ فَشَرُّ غَائِبٍ يُنْتَظَرُ اَوِالسَّاعَةَ؟ فَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ.

رواه الترمذي وقال:هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في المبادرة بالعمل،رقم:٢٣٠٦

الجامع الصحيح وهو سنن الترمذي طبع دارالباز

174. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात ज़ों से पहले नेक आमाल में जल्दी करो। क्या तुम्हें ऐसी तंगदस्ती का इंतज़ार है जो सब कुछ भुला दे, या ऐसी मालदारी का जो सरकश बना दे, या ऐसी बीमारी का नाकारा कर दे, या ऐसे बुढ़ापे का जो अक़्ल खो दे, या ऐसी मौत का जो अचानक जाए (कि बाज़ वक़्त तौबा करने का मौक़ा भी नहीं मिलता) या दज्जाल का, जो ने वाली छुपी हुई बुराइयों में बदतरीन बुराई है, या क़ियामत का? क़ियामत तो ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज़ है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि इंसान को इन सात चीज़ों में से किसी चीज़ के आने से पहले नेक आमाल के ज़रिए अपनी आख़िरत की तैयारी कर लेनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि इन रुकावटों में से कोई रुकावट आ जाए और इंसान आमाले सालिहा से महरूम हो जाए।

﴿175﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ :قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلَاثَةٌ: فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقٰى وَاحِدٌ، يَتْبَعُهُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقٰى عَمَلُهُ.

رواه مسلم، كتاب الزهد:٧٤٢٤

175. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : मैय्यत के साथ तीन चीज़ें जाती हैं। दो चीज़ें वापस आ जाती हैं और ए साथ रह जाती है। घरवाले, माल और अमल साथ जाते हैं, फिर घर वाले और माल वापस आ जाते हैं और अमल साथ रह जाता है। (मुस्लि

﴿176﴾ عَنْ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَطَبَ يَوْمًا فَقَالَ فِيْ خُطْبَتِهٖ: اَلَا اِنَّ الدُّنْيَا عَرَضٌ حَاضِرٌ يَاْكُلُ مِنْهَا الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ اَلَا وَاِنَّ الْاٰخِرَةَ اَجَلٌ صَادِقٌ يَقْضِيْ فِيْهَا مَلِكٌ قَادِرٌ، اَلَا وَاِنَّ الْخَيْرَ كُلَّهُ بِحَذَافِيْرِهٖ فِي الْجَنَّةِ، اَلَا وَاِنَّ الشَّرَّ كُلَّهُ بِحَذَافِيْرِهٖ فِي النَّارِ اَلَا فَاعْمَلُوْا وَاَنْتُمْ مِنَ اللهِ عَلٰى حَذَرٍ، وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ مَعْرُوْضُوْنَ عَلٰى اَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ، وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ. مسند الشافعي ١/١٤٨

176. हज़रत उम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन ख़ुत्बा दिय जिसमें इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, दुनिया एक आरज़ी और वक़्ती सौदा है (और उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं है, इसलिए) उसमें हर अच्छे बुरे का हिस्सा है अं सब उससे खाते हैं। बिलाशुबहा आख़िरत मुक़र्ररा वक़्त पर आने वाली सच्ची हक़ीक़त है और उसमें क़ुदरत रखने वाला बादशाह फ़ैसला करेगा। ग़ौर से सुनो, सा भलाइयां और उसकी तमाम क़िस्में जन्नत में हैं और हर क़िस्म की बुराई और उसव तमाम क़िस्में जहन्नम में हैं। अच्छी तरह समझ लो, जो कुछ करो अल्लाह तआला से डरते हुए करो और समझ लो, तुम अपने-अपने आमाल के साथ अल्लाह तआ के दरबार में पेश किए जाओगे। जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर कोई नेकी की होगी वह उसको भी देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसको भी दे लेगा। (मुस्नद, शाफ़ई,

﴿177﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا اَسْلَمَ الْعَبْدُ فَحَسُنَ اِسْلَامُهُ يُكَفِّرُ اللهُ عَنْهُ كُلَّ سَيِّئَةٍ كَانَ زَلَفَهَا وَكَانَ بَعْدَ ذٰلِكَ الْقِصَاصُ: اَلْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا اِلٰى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ وَالسَّيِّئَةُ بِمِثْلِهَا اِلَّا اَنْ يَّتَجَاوَزَ اللهُ عَنْهَا.

رواه البخاري، باب حسن إسلام المرء، رقم:٤١

177. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब बन्दा इस्लाम क़ुबूल कर लेता है और इस्लाम का हुस्न उसकी ज़िन्दगी में आ जाता है तो जो बुराइयां उसने पहले की होती हैं, अल्लाह तआ़ला इस्लाम की बरकत से उन सबको माफ़ फ़रमा देते हैं। इसके बाद उसकी नेकियों और बुराइयों का हिसाब यह रहता है कि एक नेकी पर दस गुना से सात सौ गुना तक सवाब दिया जाता है और बुराई करने पर वह उसी एक बुराई की सज़ा का मुस्तहिक़ होता है। हां, अलबत्ता अल्लाह तआ़ला उससे भी दरगुज़र फ़रमा दें तो दूसरी बात है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ज़िन्दगी में इस्लाम के हुस्न का आना यह है कि दिल ईमान के नूर से रौशन हो और जिस्म अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी से आरास्ता हो।

﴿178﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْإِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَتُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا.

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم باب بيان الايمان والإسلام......رقم: ۹۳

178. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम (के अरकान में से) यह है कि (दिल व ज़बान से) तुम यह शहादत अदा करो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इलाह नहीं (कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं) और यह कि मुहम्मद ﷺ उनके रसूल हैं और नमाज़ अदा करो, ज़कात अदा करो, माहे रमज़ान के रोज़े रखो और अगर तुम हज की ताक़त रखते हो, तो हज करो। (मुस्लिम)

﴿179﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْإِسْلَامُ اَنْ تَعْبُدَ اللهَ لَا تُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَتُقِيْمَ الصَّلٰوةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ، وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتَسْلِيْمُكَ عَلٰى اَهْلِكَ فَمَنِ انْتَقَصَ شَيْئًا مِنْهُنَّ فَهُوَ سَهْمٌ مِنَ الْإِسْلَامِ يَدَعُهُ، وَمَنْ تَرَكَهُنَّ كُلَّهُنَّ فَقَدْ وَلَّى الْإِسْلَامَ ظَهْرَهُ.

رواه الحاكم في المستدرك ۱/۲۱ وقال: هذا الحديث مثل الاول في الاستقامة

179. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उनके साथ किसी को

शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, हज करो, नेकी का हुक्म करो, बुराई से रोको, और अपने घर वालों को सलाम करो। जिस शख़्स ने उनमें से किसी चीज़ में कुछ कमी की तो वह इस्लाम के एक हिस्से को छोड़ रहा है और जिसने उन सब को बिल्कुल ही छोड़ दिया, उसने इस्लाम से मुंह फेर लिया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿180﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْإِسْلَامُ ثَمَانِيَةُ اَسْهُمٍ، اَلْإِسْلَامُ سَهْمٌ وَالصَّلٰوةُ سَهْمٌ وَالزَّكَاةُ سَهْمٌ وَحَجُّ الْبَيْتِ سَهْمٌ وَالصِّيَامُ سَهْمٌ وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ سَهْمٌ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ سَهْمٌ وَالْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ سَهْمٌ وَقَدْ خَابَ مَنْ لَا سَهْمَ لَهُ.

رواه البزار وفيه يزيد بن عطاء وثقه احمد وغيره وضعفه جماعة وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ١/١٩١

180. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम के आठ हिस्से (अहम) हैं। ईमान एक हिस्सा है, नमाज़ पढ़ना एक हिस्सा है, ज़कात देना एक हिस्सा है, हज करना एक हिस्सा है, अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना एक हिस्सा है, रमज़ान के रोज़े रखना एक हिस्सा है, नेकी का हुक्म करना एक हिस्सा है, बुराई से रोकना एक हिस्सा है। बिलाशुबहा वह शख़्स नाकाम है, जिसका (इस्लाम के इन अहम हिस्सों में से किसी में भी) कोई हिस्सा नहीं।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿181﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْإِسْلَامُ اَنْ تُسْلِمَ وَجْهَكَ لِلّٰهِ وَتَشْهَدَ اَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ وَتُقِيْمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ.

(الحديث) رواه احمد ١/٣١٩

181. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम अपने आप को (अक़ाइद और आमाल में) अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दो और (दिल व ज़बान से) तुम यह शहादत अदा करो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं (कोई ज़ात इबादत व बन्दगी के लायक़ नहीं) मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो।

(मुस्नद अहमद)

﴿182﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ اَعْرَابِيًّا اَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: دُلَّنِيْ عَلٰى عَمَلٍ [illegible] الْجَنَّةَ، قَالَ: تَعْبُدُ اللهَ لَا تُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا، وَتُقِيْمُ الصَّلَاةَ الْمَكْتُوْبَةَ، وَتُؤَدِّيْ

الزَّكَاةَ الْمَفْرُوْضَةَ، وَتَصُوْمُ رَمَضَانَ،قَالَ:وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ! لَا اَزِيْدُ عَلٰى هٰذَا،فَلَمَّا وَلّٰى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَنْظُرَ اِلٰى رَجُلٍ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَلْيَنْظُرْ اِلٰى هٰذَا.

رواه البخاري،باب وجوب الزكاة،رقم:١٣٩٧

182. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि देहात के रहने वाले एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिसके करने से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की इबादत किया करो, किसी को उनका शरीक न ठहराओ, फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा करो, फ़र्ज़ ज़कात अदा किया करो और रमज़ान के रोज़े रखा करो। उन साहब ने अर्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! (जो आमाल आप ने फ़रमाए हैं, वैसे ही करूंगा) उनमें कोई इज़ाफ़ा नहीं करूंगा। फिर जब वह साहब चले गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी जन्नती को देखना चाहता हो वह उनको देख ले। (बुख़ारी)

﴿183﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مِنْ اَهْلِ نَجْدٍ ثَائِرَ الرَّاْسِ نَسْمَعُ دَوِيَّ صَوْتِهِ وَلَا نَفْقَهُ مَا يَقُوْلُ حَتّٰى دَنَا فَاِذَا هُوَ يَسْاَلُ عَنِ الْاِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ، فَقَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: وَصِيَامُ رَمَضَانَ، قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ: وَذَكَرَ لَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ الزَّكَاةَ، قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ: فَاَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُوْلُ: وَاللّٰهِ لَا اَزِيْدُ عَلٰى هٰذَا وَلَا اَنْقُصُ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَفْلَحَ اِنْ صَدَقَ.

رواه البخاري،باب الزكاة من الاسلام،رقم:٤٦

183. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि अहले नज्द में एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उनके सर के बाल बिखरे हुए थे। हम उनकी आवाज़ की गुंगुनाहट तो सुन रहे थे (लेकिन फ़ासले पर होने की वजह से) उनकी बात हमें समझ में नहीं आ रही थी, यहां तक कि वे रसूलुल्लाह ﷺ के क़रीब पहुंच गए, तो हमें समझ में आया कि वह आप से इस्लाम (के आमाल) के बारे में दरयाफ़्त कर रहे हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने (उनके जवाब में) इर्शाद फ़रमाया : दिन रात में पांच (फ़र्ज़) नमाज़ें हैं। उन साहब ने अर्ज़ किया : क्या इन नमाज़ों के अलावा भी कोई नमाज़ मेरे ऊपर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! लेकिन अगर तुम नफ़्ल पढ़ना चाहो तो पढ़ सकते हो। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ान

के रोज़े फ़र्ज़ हैं। उन्होंने अर्ज़ किया : क्या उन रोज़ों के अलावा भी कोई रोज़ा मुझ पर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! मगर नफ़्ल रोज़ा रखना चाहो तो रख सकते हो। (इसके बाद) रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़कात का ज़िक्र फ़रमाया। इस पर भी उन्होंने अर्ज़ किया : क्या ज़कात के अलावा भी कोई सदक़ा मुझ पर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! मगर नफ़्ली सदक़ा देना चाहो तो दे सकते हो। इसके बाद वह साहब यह कहते हुए चले गए : अल्लाह की क़सम! मैं इन आमाल में न तो ज़्यादती करूंगा और न ही कमी करूंगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर इस शख़्स ने सच कहा, तो कामयाब हो गया। (बुख़ारी)

﴿184﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ اَصْحَابِهِ: بَايِعُوْنِيْ عَلٰى اَلَّا تُشْرِكُوْا بِاللهِ شَيْئًا، وَلَا تَسْرِقُوْا، وَلَا تَزْنُوْا، وَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُمْ، وَلَا تَاْتُوْا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُوْنَهُ بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَاَرْجُلِكُمْ، وَلَا تَعْصُوْا فِيْ مَعْرُوْفٍ، فَمَنْ وَفٰى مِنْكُمْ فَاَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ اَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا فَعُوْقِبَ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ اَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا ثُمَّ سَتَرَهُ اللهُ فَهُوَ اِلَى اللهِ، اِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ، وَاِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ، فَبَايَعْنَاهُ عَلٰى ذٰلِكَ.

رواه البخاري، كتاب الايمان رقم: ١٨

184. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा की एक जमाअत से, जो आप के गिर्द बैठी थी, मुख़ातब होकर फ़रमाया : मुझसे इस पर बैअ़त करो कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करोगे, चोरी नहीं करोगे, ज़िना नहीं करोगे, (फ़क्र के डर से) अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगे, जान-बूझ कर किसी पर बुहतान नहीं लगाओगे और शरई हुक्मों में नाफ़रमानी नहीं करोगे। जो कोई तुममें से इस अ़हद को पूरा करेगा, उसका अज्र अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मा है और जो शख़्स (शिर्क के अलावा) उनमें से किसी गुनाह में मुब्तला हो जाए और फिर दुनिया में उसको इस गुनाह की सज़ा भी मिल जाए (जैसे हद वग़ैरह जारी हो जाए) तो वह सज़ा उसके गुनाह के लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगी और अगर अल्लाह तआ़ला ने उनमें से किसी गुनाह पर पर्दापोशी फ़रमाई (और दुनिया में उसे सज़ा न मिली) तो उसका मामला अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर है, चाहें (वह अपने फ़ज़्ल व करम से) आख़िरत में भी दरगुज़र फ़रमाएं और चाहें तो अ़ज़ाब दें। (हज़रत उबादा ﷺ फ़रमाते हैं) कि हमने इन बातों पर आप ﷺ से बैअ़त की। (बुख़ारी)

﴿185﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَوْصَانِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِعَشْرِ كَلِمَاتٍ قَالَ: لَا

تُشْرِكْ بِاللهِ وَإِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتَ، وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَيْكَ وَإِنْ أَمَرَاكَ أَنْ تَخْرُجَ مِنْ أَهْلِكَ وَمَالِكَ، وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلَاةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّدًا، فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللهِ، وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَإِنَّهُ رَأْسُ كُلِّ فَاحِشَةٍ، وَإِيَّاكَ وَالْمَعْصِيَةَ فَإِنَّ بِالْمَعْصِيَةِ حَلَّ سَخَطُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ، وَإِيَّاكَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَإِنْ هَلَكَ النَّاسُ، وَإِذَا أَصَابَ النَّاسَ مَوْتٌ وَأَنْتَ فِيهِمْ فَاثْبُتْ، وَأَنْفِقْ عَلَى عِيَالِكَ مِنْ طَوْلِكَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْهُمْ عَصَاكَ أَدَبًا وَأَخِفْهُمْ فِي اللهِ. رواه احمد ٥/٢٣٨

185. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे दस बातों की [वस]ीयत फ़रमाई—1. अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करना [अ]गरचे तुम्हें क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए। 2. वालिदैन की नाफ़रमानी न करना अगरचे वह तुम्हें इस बात का हुक्म दें कि बीवी को छोड़ दो और सारा माल [ख़]र्च कर दो। 3. फ़र्ज़ नमाज़ जान-बूझ कर न छोड़ना, क्योंकि जो शख़्स नमाज़ जान-बूझ कर छोड़ देता है वह अल्लाह तआ़ला की ज़िम्मेदारी से निकल जाता है 4. [श]राब न पीना, क्योंकि यह हर बुराई की जड़ है। 5. अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी [न] करना, क्योंकि नाफ़रमानी की वजह से अल्लाह की नाराज़गी उतरती है। 6. मैदाने [ज]ंग से न भागना, अगरचे तुम्हारे साथी हलाक हो जाएं। 7. जब लोगों में मौत (वबा [क]ी सूरत में) आम हो जाए (जैसे ताऊन वग़ैरह) और तुम उनमें मौजूद हो तो वहां से न भागना। 8. घर वालों पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करना, 9. (तरबीयत [के] लिए) उन पर से लकड़ी न हटाना। 10. उनको अल्लाह तआ़ला से डराते रहना। (मुस्नद अहमद)

[फ़ा]यदा : इस हदीस शरीफ़ में वालिदैन की इताअ़त के बारे में जो इर्शाद फ़रमाया है वह इताअ़त के आला दर्जा का ब्यान है। जैसे इसी हदीस शरीफ़ में यह फ़रमान कि *"अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करना, अगरचे तुम्हें क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए"* आला दर्जे की बात है, क्योंकि ऐसी सूरत में ज़बान से कलिमा-ए-कुफ़्र कह देने की गुंजाइश है जबकि दिल ईमान पर मुतमइन हो। (मिरक़ात)

﴿186﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ، وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، جَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيهَا فَقَالُوا: يَارَسُولَ اللهِ! أَفَلَا نُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ؟ قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ، مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ

وَالْاَرْضِ، فَاِذَا سَاَلْتُمُ اللّٰهَ فَاسْاَلُوْهُ الْفِرْدَوْسَ فَاِنَّهُ اَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَاَعْلَى الْجَنَّةِ وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ وَمِنْهُ تَفَجَّرُ اَنْهَارُ الْجَنَّةِ. رواه البخاري باب درجات المجاهدين في سبيل الله رقم: ٢٧٩٠

186. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला पर और उनके रसूल पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम करे और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे, तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे होगा कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएं, ख़्वाह उसने अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद किया हो या उसी सरज़मीन पर रह रहा हो, जहां उसकी पैदाइश हुई यानी जिहाद न किया हो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या लोगों को यह ख़ुशख़बरी न सुना दें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (नहीं) क्योंकि जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद पर जाने वालों के लिए तैयार कर रखे हैं जिनमें से हर दो दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है, जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान फ़ासला है। जब तुम अल्लाह तआला से जन्नत मांगो तो जन्नतुल फ़िरदौस मांगा करो, क्योंकि वह जन्नत का सबसे बेहतरीन और सबसे आला मक़ाम है और उसके ऊपर रहमान का अर्श है और इसी से जन्नत की नहरें फूटती हैं। (बुख़ारी)

﴿187﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خَمْسٌ مَنْ جَاءَ بِهِنَّ مَعَ اِيْمَانٍ دَخَلَ الْجَنَّةَ مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ عَلٰى وُضُوْئِهِنَّ وَرُكُوْعِهِنَّ وَسُجُوْدِهِنَّ وَمَوَاقِيْتِهِنَّ وَصَامَ رَمَضَانَ وَحَجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَآتَى الزَّكَاةَ طَيِّبَةً بِهَا نَفْسُهُ وَاَدَّى الْاَمَانَةَ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا اَدَاءُ الْاَمَانَةِ؟ قَالَ الْغُسْلُ مِنَ الْجَنَابَةِ اِنَّ اللّٰهَ لَمْ يَاْمَنِ ابْنَ آدَمَ عَلٰى شَيْءٍ مِنْ دِيْنِهِ غَيْرَهَا. رواه الطبراني باسناد جيد، الترغيب ١/٢٤١

187. हज़रत अबुद्दर्दा ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ईमान के साथ पांच अमल करता हुआ (अल्लाह तआला की बारगाह में) आएगा, वह जन्नत में दाख़िल होगा—1. पांच नमाज़ों को उनके वक़्त पर एहतमाम से इस तरह पढ़े कि उनका वुज़ू और रुकूअ-सज्दा सही तौर पर करे, 2. रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे, 3. अगर हज की ताक़त हो तो हज करे, 4. ख़ुशदिली से ज़कात दे और 5. अमानत अदा करे। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! अमानत के अदा करने का क्या मतलब है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जनाबत का ग़ुस्ल करना, क्योंकि अल्लाह तआला ने आदम के बेटे के दीनी आमाल में से किसी अमल पर एतमाद नहीं फ़रमाया, सिवाए ग़ुस्ले जनाबत के (क्योंकि ग़ुस्ल जनाबत का

हुआ अमल है कि उसके करने पर अल्लाह तआला का ख़ौफ़ ही उसे आमादा कर सकता है)। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿188﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَنَا زَعِيْمٌ لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَأَسْلَمَ وَهَاجَرَ بِبَيْتٍ فِيْ رَبَضِ الْجَنَّةِ، وَبِبَيْتٍ فِيْ وَسَطِ الْجَنَّةِ، وَأَنَا زَعِيْمٌ لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَأَسْلَمَ وَجَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِبَيْتٍ فِيْ رَبَضِ الْجَنَّةِ، وَبِبَيْتٍ فِيْ وَسَطِ الْجَنَّةِ وَبِبَيْتٍ فِيْ أَعْلَى غُرَفِ الْجَنَّةِ، فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ لَمْ يَدَعْ لِلْخَيْرِ مَطْلَبًا وَلَا مِنَ الشَّرِّ مَهْرَبًا يَمُوْتُ حَيْثُ شَاءَ أَنْ يَمُوْتَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٠/٤٨٠

188. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ईमान लाए, फ़रमांबरदारी अख़्तियार करे और हिजरत करे, एक घर जन्नत के मुज़ाफ़ात में, एक घर जन्नत के दर्मियान में दिलाने का ज़िम्मेदार हूं और मैं उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ईमान लाए, फ़रमांबरदारी अख़्तियार करे और अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करे, एक घर जन्नत के मुज़ाफ़ात में, एक घर जन्नत के दर्मियान में और एक घर जन्नत के बालाख़ानों में दिलाने का ज़िम्मेदार हूं। जिस शख़्स ने ऐसा किया, उसने हर क़िस्म की भलाई को हासिल कर लिया और हर क़िस्म की बुराई से बच गया अब उसकी मौत चाहे जैसे आए (वह जन्नत का मुस्तहिक़ हो गया)। (इब्ने हब्बान)

﴿189﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا يُصَلِّي الْخَمْسَ وَيَصُوْمُ رَمَضَانَ غُفِرَ لَهُ.

(الحديث) رواه احمد ٥/٢٣٢

189. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि वह उनके साथ किसी को शरीक न करता हो, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ता हो और रमज़ान के रोज़े रखता हो उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी। (मुस्नद अहमद)

﴿190﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا وَأَدّٰى زَكَاةَ مَالِهِ طَيِّبًا بِهَا نَفْسُهُ مُحْتَسِبًا وَسَمِعَ وَأَطَاعَ فَلَهُ الْجَنَّةُ.

(الحديث) رواه احمد ٢/٣٦١

190. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो

शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि उसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो, अपने माल की ज़कात ख़ुशदिली के साथ सवाब की नीयत से अदा की हो और (मुसलमानों के) इमाम की बात को सुनकर उसे माना हो, तो उसके लिए जन्नत है। (मुस्नद अहमद)

﴿191﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ. رواه الترمذي وقال: حديث فضالة حديث حسن صحيح، باب ماجاء في فضل من مات مرابطا، رقم: ١٦٢١

191. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स से जिहाद करे, यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ चलने की कोशिश करे। (तिर्मिज़ी)

﴿192﴾ عَنْ عُتْبَةَ بْنِ عَبْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ اَنَّ رَجُلًا يَخِرُّ عَلٰى وَجْهِهٖ مِنْ يَوْمِ وُلِدَ اِلٰى يَوْمِ يَمُوْتُ فِيْ مَرْضَاةِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ لَحَقَّرَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه احمد والطبراني في الكبير وفيه: بقية وهو مدلس ولكنه صرح بالتحديث وبقية رجاله ونقوا، مجمع الزوائد ١/ ٢١٠

192. हज़रत उत्बा बिन अब्द ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स अपनी पैदाइश के दिन से मौत के दिन तक अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए मुंह के बल (सज्दा में) पड़ा रहे, तो क़ियामत के दिन वह अपने इस अमल को भी कम समझेगा। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿193﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَصْلَتَانِ مَنْ كَانَتَا فِيْهِ كَتَبَهُ اللهُ شَاكِرًا صَابِرًا، وَمَنْ لَمْ تَكُوْنَا فِيْهِ لَمْ يَكْتُبْهُ اللهُ شَاكِرًا وَلَا صَابِرًا: مَنْ نَظَرَ فِيْ دِيْنِهٖ اِلٰى مَنْ هُوَفَوْقَهٗ فَاقْتَدٰى بِهٖ، وَمَنْ نَظَرَ فِيْ دُنْيَاهُ اِلٰى مَنْ هُوَ دُوْنَهٗ فَحَمِدَ اللهَ عَلٰى مَا فَضَّلَهٗ بِهٖ عَلَيْهِ، كَتَبَهُ اللهُ شَاكِرًا وَصَابِرًا وَمَنْ نَظَرَ فِيْ دِيْنِهٖ اِلٰى مَنْ هُوَدُوْنَهٗ وَنَظَرَ فِيْ دُنْيَاهُ اِلٰى مَنْ هُوَفَوْقَهٗ فَاَسِفَ عَلٰى مَافَاتَهٗ مِنْهُ، لَمْ يَكْتُبْهُ اللهُ شَاكِرًا وَلَا صَابِرًا. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب انظروا الى من هو اسفل منكم، رقم: ٢٥١٢

193. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स में दो आदतें हों, अल्लाह तआला उसको

शाकिरीन और साबिरीन की जमाअ़त में शुमार करते हैं और जिसमें ये दो आदतें न पाई जाएं तो अल्लाह तआ़ला उसको शुक्र और सब्र करने वालों में नहीं लिखते। जो शख़्स दीन में अपने से बेहतर को देखे और उसकी पैरवी करे और दुनिया के बारे में अपने से कम दर्जा के लोगों को देखे और उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे कि (अल्लाह तआ़ला ने महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से) उसको उन लोगों से बेहतर हालत में रखा है, तो अल्लाह तआ़ला उसको शुक्र और सब्र करने वालों में लिख देते हैं और जो शख़्स दीन के बारे में अपने से कम तर लोगों को देखे और दुनिया के बारे में अपने से ऊंचे लोगों को देखे और दुनिया के कम मिलने पर अफ़सोस करे तो अल्लाह तआ़ला न उसको सब्र करने वालों में शुमार फ़रमाएंगे, न शुक्रगुज़ारों में शुमार फ़रमाएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿194﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: الدُّنْیَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّۃُ الْکَافِرِ. رواہ مسلم،باب الدنیا سجن للمؤمن رقم:۷٤۱۷

194. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : एक मोमिन के लिए जन्नत में जो नेमतें तैयार हैं इस लिहाज़ से यह दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जो हमेशा का अ़ज़ाब है उस लिहाज़ से दुनिया उसके लिए जन्नत है। (मिरक़ात)

﴿195﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: اِذَا اتُّخِذَ الْفَیْءُ دُوَلًا، وَالْاَمَانَۃُ مَغْنَمًا، وَالزَّکَاۃُ مَغْرَمًا، وَتُعُلِّمَ لِغَیْرِ الدِّیْنِ، وَاَطَاعَ الرَّجُلُ امْرَاَتَہٗ وَعَقَّ اُمَّہٗ، وَاَدْنٰی صَدِیْقَہٗ وَاَقْصٰی اَبَاہُ وَظَھَرَتِ الْاَصْوَاتُ فِی الْمَسَاجِدِ، وَسَادَ الْقَبِیْلَۃَ فَاسِقُھُمْ، وَکَانَ زَعِیْمُ الْقَوْمِ اَرْذَلَھُمْ، وَاُکْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَۃَ شَرِّہٖ وَظَھَرَتِ الْقَیْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ، وَشُرِبَتِ الْخُمُوْرُ، وَلَعَنَ آخِرُ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ اَوَّلَھَا فَلْیَرْتَقِبُوْا عِنْدَ ذٰلِکَ رِیْحًا حَمْرَاءَ وَزَلْزَلَۃً وَخَسْفًا وَمَسْخًا وَقَذْفًا، وَآیَاتٍ تَتَابَعُ کَنِظَامٍ قُطِعَ سِلْکُہٗ فَتَتَابَعَ. رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث غریب، باب ماجاء فی علامۃ حلول المسخ والخسف،رقم:۲۲۱۱

195. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब ग़नीमत के माल को अपनी ज़ाती दौलत समझा जाने लगे, अमानत को ग़नीमत का माल समझा जाने लगे, यानी अमानत को अदा करने के बजाए ख़ुद उसको

इस्तेमाल कर लिया जाए, ज़कात को तावान समझा जाने लगे यानी ख़ुशी से देने के बजाए नागवारी से दी जाए। इल्म, दीन के लिए नहीं बल्कि दुनिया के लिए हासिल किया जाने लगे, आदमी बीवी की फ़रमांबरदारी और मां की नाफ़रमानी करने लगे, दोस्त को क़रीब और बाप को दूर करे, मस्जिदों में खुल्लम खुल्ला शोर मचाया जाने लगे, क़ौम की सरदारी फ़ासिक़ करने लगे, क़ौम का सरबराह क़ौम का सब से ज़लील आदमी बन जाए, आदमी का इकराम उसके शर से बचने के लिए किया जाने लगे, गाने वाली औरतों का और साज़ व बाजे का रिवाज हो जाए, शराब आम पी जाने लगे और उम्मत के बाद वाले लोग अपने से पहले लोगों को बुरा कहने लगें, उस वक़्त सुर्ख़ आंधी, ज़लज़ले, ज़मीन में धंस जाने, आदमियों की सूरत बिगड़ जाने और आसमान से पत्थरों के बरसने का इंतज़ार करना चाहिए। ऐसे ही मुसलसल आफ़ात के आने का इंतज़ार करो, जिस तरह किसी हार का धागा टूट जाए और उसके मोती पै-दर-पै जल्दी-जल्दी गिरने लगें। (तिर्मिज़ी)

﴿196﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مَثَلَ الَّذِيْ يَعْمَلُ السَّيِّئَاتِ، ثُمَّ يَعْمَلُ الْحَسَنَاتِ، كَمَثَلِ رَجُلٍ كَانَتْ عَلَيْهِ دِرْعٌ ضَيِّقَةٌ قَدْ خَنَقَتْهُ، ثُمَّ عَمِلَ حَسَنَةً فَانْفَكَّتْ حَلْقَةٌ ثُمَّ عَمِلَ حَسَنَةً أُخْرَى فَانْفَكَّتْ حَلْقَةٌ أُخْرَى، حَتَّى يَخْرُجَ إِلَى الْأَرْضِ. رواه احمد ٤/١٤٥

196. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स गुनाह करता है, फिर नेक आमाल करता रहता है उसकी मिसाल उस शख़्स की-सी है जिस पर एक तंग ज़िरह हो जिसने उसका गला घोंट रखा हो। फिर वह कोई नेकी करे जिसकी वजह से उस ज़िरह की एक कड़ी खुल जाए, फिर दूसरा कोई नेक अमल करे जिसकी वजह से दूसरी कड़ी खुल जाए (उसी तरह नेकियां करता रहे और कड़ियां खुलती रहें) यहां तक कि पूरी ज़िरह खुलकर ज़मीन पर आ पड़े। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मुराद यह है कि गुनहगार गुनाहों में बंधा हुआ होता है और परेशान रहता है, नेकियां करने की वजह से गुनाहों का बंधन खुल जाता है और परेशानी दूर हो जाती है।

﴿197﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: مَا ظَهَرَ الْغُلُوْلُ فِيْ قَوْمٍ قَطُّ إِلَّا أُلْقِيَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبُ وَلَا فَشَا الزِّنَا فِيْ قَوْمٍ قَطُّ إِلَّا كَثُرَ فِيْهِمُ الْمَوْتُ وَلَا نَقَصَ قَوْمٌ

السِّكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ إِلَّا قُطِعَ عَنْهُمُ الرِّزْقُ وَلَا حَكَمَ قَوْمٌ بِغَيْرِ الْحَقِّ إِلَّا فَشَى فِيْهِمُ الدَّمُ وَلَا خَتَرَ قَوْمٌ بِالْعَهْدِ إِلَّا سُلِّطَ عَلَيْهِمُ الْعَدُوُّ.

رواه الامام مالك في الموطا باب ما جاء في الغلول ص ٤٧٦

197. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जब किसी क़ौम में ग़नीमत के माल के अन्दर ख़ियानत खुल्लम खुल्ला होने लगे, तो उनके दिलों में दुश्मन का रौब डाल दिया जाता है। जब किसी क़ौम में ज़िना आम तौर से होने लगे तो उसमें मौतों की कसरत हो जाती है। जब कोई क़ौम नाप तौल में कमी करने लगे, तो उसका रिज़्क़ उठा लिया जाता है, यानी उसके रिज़्क़ में बरकत ख़त्म कर दी जाती है। जब कोई क़ौम फ़ैसलों के करने में नाइन्साफ़ी करती है, तो उनमें ख़ूँरेज़ी फैल जाती है। जब कोई क़ौम अहद को तोड़ने लगे, तो उस पर उसके दुश्मन मुसल्लत कर दिए जाते हैं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿198﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلًا يَقُوْلُ: إِنَّ الظَّالِمَ لَا يَضُرُّ إِلَّا نَفْسَهُ فَقَالَ أَبُوْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: بَلَى وَاللهِ حَتَّى الْحُبَارَى لَتَمُوْتُ فِيْ وَكْرِهَا هُزْلًا لِظُلْمِ الظَّالِمِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٥٤

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक साहब को यह कहते हुए सुना कि ज़ालिम आदमी सिर्फ़ अपना ही नुक़सान करता है। इस पर हज़रत अबू हुरैरह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपना तो नुक़सान करता ही है। अल्लाह तआला की क़सम! ज़ालिम के ज़ुल्म से सुर्ख़ाब (परिन्दा) भी अपने घोंसले में सूख-सूख कर मर जाता है। (बैहक़ी)

फ़ायदा : ज़ुल्म का नुक़सान ख़ुद ज़ालिम की ज़ात तक महदूद नहीं रहता इसके ज़ुल्म की नुहूसत से क़िस्म-क़िस्म की मुसीबतें नाज़िल होती रहती हैं। बारिशें बन्द हो जाती हैं, परिन्दों को भी जंगल में कहीं दाना नसीब नहीं होता, बिलआख़िर वे भूख से अपने घोंसलों में मर जाते हैं।

﴿199﴾ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَعْنِيْ مِمَّا يُكْثِرُ أَنْ يَقُوْلَ لِأَصْحَابِهِ: هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنْ رُؤْيَا؟ قَالَ: فَيَقُصُّ عَلَيْهِ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُصَّ، وَإِنَّهُ قَالَ ذَاتَ غَدَاةٍ إِنَّهُ أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ، وَإِنَّهُمَا ابْتَعَثَانِيْ وَإِنَّهُمَا قَالَا لِيْ: انْطَلِقْ، وَإِنِّي انْطَلَقْتُ مَعَهُمَا، وَإِنَّا أَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ وَإِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِصَخْرَةٍ وَإِذَا هُوَ

يَهْوِيْ بِالصَّخْرَةِ لِرَأْسِهٖ فَيَثْلَغُ رَأْسَهُ فَيَتَدَهْدَهُ الْحَجَرُ هَاهُنَا، فَيَتْبَعُ الْحَجَرَ فَيَأْخُذُهُ فَلَا يَرْجِعُ إِلَيْهِ حَتّٰى يَصِحَّ رَأْسُهُ كَمَا كَانَ، ثُمَّ يَعُوْدُ عَلَيْهِ فَيَفْعَلُ بِهٖ مِثْلَ مَافَعَلَ الْمَرَّةَ الْاُوْلٰى، قَالَ: قُلْتُ سُبْحَانَ اللّٰهِ، مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ مُسْتَلْقٍ لِقَفَاهُ وَاِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِكَلُّوْبٍ مِنْ حَدِيْدٍ، وَاِذَا هُوَ يَاْتِيْ اَحَدَ شِقَّيْ وَجْهِهٖ فَيُشَرْشِرُ شِدْقَهُ اِلٰى قَفَاهُ، وَمَنْخِرَهُ اِلٰى قَفَاهُ، وَعَيْنَهُ اِلٰى قَفَاهُ، قَالَ وَرُبَّمَا قَالَ اَبُوْرَجَاءٍ: فَيَشُقُّ۔ قَالَ: ثُمَّ يَتَحَوَّلُ اِلَى الْجَانِبِ الْآخَرِ فَيَفْعَلُ بِهٖ مِثْلَ مَافَعَلَ بِالْجَانِبِ الْاَوَّلِ، فَمَا يَفْرُغُ مِنْ ذٰلِكَ الْجَانِبِ حَتّٰى يَصِحَّ ذٰلِكَ الْجَانِبُ كَمَا كَانَ ثُمَّ يَعُوْدُ عَلَيْهِ فَيَفْعَلُ مِثْلَ مَا فَعَلَ الْمَرَّةَ الْاُوْلٰى، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: سُبْحَانَ اللّٰهِ، مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى مِثْلِ التَّنُّوْرِ، قَالَ وَاَحْسِبُ اَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ: فَاِذَا فِيْهِ لَغَطٌ وَاَصْوَاتٌ، قَالَ: فَاطَّلَعْنَا فِيْهِ فَاِذَا فِيْهِ رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ، وَاِذَا هُمْ يَاْتِيْهِمْ لَهَبٌ مِنْ اَسْفَلَ مِنْهُمْ، فَاِذَا اَتَاهُمْ ذٰلِكَ اللَّهَبُ ضَوْضَوْا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَاهٰؤُلَاءِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ. قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى نَهَرٍ، حَسِبْتُ اَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ: اَحْمَرَ مِثْلِ الدَّمِ، وَاِذَا فِي النَّهَرِ رَجُلٌ سَابِحٌ يَسْبَحُ، وَاِذَا عَلٰى شَطِّ النَّهَرِ رَجُلٌ قَدْ جَمَعَ عِنْدَهُ حِجَارَةً كَثِيْرَةً، وَاِذَا ذٰلِكَ السَّابِحُ يَسْبَحُ مَا يَسْبَحُ، ثُمَّ يَاْتِيْ ذٰلِكَ الَّذِيْ قَدْ جَمَعَ عِنْدَهُ الْحِجَارَةَ فَيَفْغَرُ لَهُ فَاهُ فَيُلْقِمُهُ حَجَرًا فَيَنْطَلِقُ يَسْبَحُ، ثُمَّ يَرْجِعُ اِلَيْهِ، كُلَّمَا رَجَعَ اِلَيْهِ فَغَرَ لَهُ فَاهُ فَاَلْقَمَهُ حَجَرًا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ كَرِيْهِ الْمَرْآةِ كَاَكْرَهِ مَا اَنْتَ رَاءٍ رَجُلًا مَرْآةً، فَاِذَا عِنْدَهُ نَارٌ يَحُشُّهَا وَيَسْعٰى حَوْلَهَا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَا هٰذَا؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَوْضَةٍ مُعْتَمَّةٍ فِيْهَا مِنْ كُلِّ لَوْنِ الرَّبِيْعِ، وَاِذَا بَيْنَ ظَهْرَيِ الرَّوْضَةِ رَجُلٌ طَوِيْلٌ لَا اَكَادُ اَرٰى رَاْسَهُ طُوْلًا فِي السَّمَاءِ، وَاِذَا حَوْلَ الرَّجُلِ مِنْ اَكْثَرِ وِلْدَانٍ رَاَيْتُهُمْ قَطُّ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَا هٰذَا؟ مَاهٰؤُلَاءِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَانْتَهَيْنَا اِلٰى رَوْضَةٍ عَظِيْمَةٍ لَمْ اَرَ رَوْضَةً قَطُّ اَعْظَمَ مِنْهَا وَلَا اَحْسَنَ، قَالَ: قَالَا لِيْ: اِرْقَ، فَارْتَقَيْتُ فِيْهَا، قَالَ: فَارْتَقَيْنَا فِيْهَا فَانْتَهَيْنَا اِلٰى مَدِيْنَةٍ مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ، فَاَتَيْنَا بَابَ الْمَدِيْنَةِ فَاسْتَفْتَحْنَا فَفُتِحَ لَنَا فَدَخَلْنَاهَا فَتَلَقَّانَا فِيْهَا رِجَالٌ شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ كَاَحْسَنِ مَا اَنْتَ رَاءٍ، وَشَطْرٌ كَاَقْبَحِ مَا اَنْتَ رَاءٍ، قَالَ: قَالَا لَهُمْ: اِذْهَبُوْا فَقَعُوْا فِيْ ذٰلِكَ النَّهَرِ، قَالَ: وَاِذَا نَهَرٌ مُعْتَرِضٌ يَجْرِيْ كَاَنَّ مَاءَهُ الْمَحْضُ مِنَ الْبَيَاضِ، فَذَهَبُوْا فَوَقَعُوْا فِيْهِ، ثُمَّ رَجَعُوْا اِلَيْنَا قَدْ ذَهَبَ ذٰلِكَ السُّوْءُ عَنْهُمْ فَصَارُوْا فِيْ

أَحْسَنِ صُوْرَةٍ، قَالَ: قَالَا لِيْ: هٰذِهٖ جَنَّةُ عَدْنٍ وَهٰذَاكَ مَنْزِلُكَ، قَالَ: فَسَمَا بَصَرِيْ صُعُدًا فَإِذَا قَصْرٌ مِثْلُ الرَّبَابَةِ الْبَيْضَاءِ، قَالَ: قَالَا لِيْ: هٰذَاكَ مَنْزِلُكَ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: بَارَكَ اللهُ فِيْكُمَا، ذَرَانِيْ فَأَدْخُلَهُ، قَالَا: أَمَّا الْآنَ فَلَا وَأَنْتَ دَاخِلُهُ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: فَإِنِّيْ قَدْ رَأَيْتُ مُنْذُ اللَّيْلَةِ عَجَبًا، فَمَا هٰذَا الَّذِيْ رَأَيْتُ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: أَمَا إِنَّا سَنُخْبِرُكَ، أَمَّا الرَّجُلُ الْأَوَّلُ الَّذِيْ أَتَيْتَ عَلَيْهِ يُثْلَغُ رَأْسُهُ بِالْحَجَرِ فَإِنَّهُ الرَّجُلُ يَأْخُذُ الْقُرْآنَ فَيَرْفِضُهُ وَيَنَامُ عَنِ الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ، وَأَمَّا الَّذِيْ أَتَيْتَ عَلَيْهِ يُشَرْشَرُ شِدْقُهُ إِلَى قَفَاهُ وَمَنْخِرُهُ إِلَى قَفَاهُ وَعَيْنُهُ إِلَى قَفَاهُ فَإِنَّهُ الرَّجُلُ يَغْدُوْ مِنْ بَيْتِهٖ فَيَكْذِبُ الْكَذْبَةَ تَبْلُغُ الْآفَاقَ، وَأَمَّا الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ الْعُرَاةُ الَّذِيْنَ فِيْ مِثْلِ بِنَاءِ التَّنُّوْرِ فَهُمُ الزُّنَاةُ وَالزَّوَانِيْ، وَأَمَّا الرَّجُلُ الَّذِيْ أَتَيْتَ عَلَيْهِ يَسْبَحُ فِي النَّهْرِ وَيُلْقَمُ الْحِجَارَةَ فَإِنَّهُ آكِلُ الرِّبَا، وَأَمَّا الرَّجُلُ الْكَرِيْهُ الْمَرْآةِ الَّذِيْ عِنْدَ النَّارِ يَحُشُّهَا وَيَسْعٰى حَوْلَهَا فَإِنَّهُ مَالِكٌ خَازِنُ جَهَنَّمَ، وَأَمَّا الرَّجُلُ الطَّوِيْلُ الَّذِيْ فِي الرَّوْضَةِ فَإِنَّهُ إِبْرَاهِيْمُ عليه السلام وَأَمَّا الْوِلْدَانُ الَّذِيْنَ حَوْلَهُ فَكُلُّ مَوْلُوْدٍ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ. قَالَ: فَقَالَ بَعْضُ الْمُسْلِمِيْنَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَأَوْلَادُ الْمُشْرِكِيْنَ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَأَوْلَادُ الْمُشْرِكِيْنَ، وَأَمَّا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَانُوْا شَطْرًا مِنْهُمْ حَسَنٌ وَشَطْرًا مِنْهُمْ قَبِيْحٌ فَإِنَّهُمْ قَوْمٌ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا تَجَاوَزَ اللهُ عَنْهُمْ.

رواه البخاري، باب تعبير الرؤيا بعد صلاة الصبح رقم: ٧٠٤٧

199. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ अक्सर अपने सहाबा से पूछा करते थे कि तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? जो कोई ख़्वाब ब्यान करता (तो आप उसकी ताबीर इर्शाद फ़रमाते)। एक सुबह रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रात को मैंने ख़्वाब देखा है कि दो फ़रिश्ते मेरे पास आए और मुझे उठाकर कहा, हमारे साथ चलिए। मैं उनके साथ चल दिया। एक शख़्स पर हमारा गुज़र हुआ जो लेटा हुआ है और दूसरा उसके पास पत्थर उठाए हुए खड़ा है और वह लेटे हुए शख़्स के सर पर ज़ोर से पत्थर मारता है जिसकी वजह से उसका सर कुचल जाता है और पत्थर लुढ़क कर दूसरी तरफ़ चला जाता है। यह जाकर पत्थर उठाकर लाता है, उसके वापस आने से पहले उसका सर बिल्कुल सही जैसे पहले था वैसा ही हो जाता है। फिर यह उसी तरह पत्थर मारता है और वही कुछ होता है जो पहले हुआ था। मैंने उन दोनों से ताज्जुब से कहा, *'सुब्हानल्लाह'* ये दोनों शख़्स कौन हैं? (और यह क्या मामला हो रहा है?) उन्होंने कहा आगे चलिए। हम आगे चले, हमारा गुज़र एक शख़्स पर हुआ जो चित लेटा हुआ है और एक शख़्स उसके पास लोहे

(लोहे की कीलें निकालने वाला आला) लिए खड़ा है, जो लेटे हुए शख़्स के चेहरे के एक जानिब आकर उसका जबड़ा, नथूना, और आंख गुद्दी तक चीरता चला जाता है। फिर दूसरी जानिब भी उसी तरह करता है, अभी यह दूसरी जानिब से फ़ारिग़ नहीं होता कि पहली जानिब बिल्कुल अच्छी हो जाती है, वह उसी तरह करता रहता है। मैंने उन दोनों से कहा, *'सुब्हानल्लाह'* ये दोनों कौन हैं? उन्होंने कहा चलिए, आगे चलिए। हम आगे चले तो एक तन्नूर के पास पहुंचे, जिसमें बड़ा शोर व ग़ुल हो रहा है। हमने उसमें झांक कर देखा तो उसमें बहुत से मर्द व औरत नंगे हैं, उनके नीचे से आग का एक शोला आता है, जब वह उनको अपनी लपट में लेता है तो वे चीख़ने लगते हैं। मैंने उन दोनों से पूछा, ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, चलिए आगे चलिए। हम आगे चले, एक नहर पर पहुंचे, जो ख़ून की तरह सुर्ख़ थी और उसमें एक शख़्स तैर रहा था और नहर के किनारे दूसरा शख़्स था, जिसमें बहुत से पत्थर जमा कर रखे थे, जब तैरने वाला शख़्स तैरते हुए उस शख़्स के पास आता है जिसने पत्थर जमा किए हुए हैं, तो यह शख़्स अपना मुंह खोल देता है तो किनारे वाला शख़्स उसके मुंह में पत्थर डाल देता है (जिसकी वजह से यह दूर) चला जाता है। और फिर तैर कर वापस उसी शख़्स के पास आता है तो अपना मुंह खोल देता है और किनारे वाला शख़्स उसके मुंह में पत्थर डाल देता है। मैंने उन दोनों से पूछा, यह दोनों शख़्स कौन हैं? उन दोनों ने कहा, आगे चलिए। फिर हम आगे चले तो जितने बदसूरत आदमी तुमने देखे होंगे उन सबसे ज़्यादा बदसूरत आदमी के पास से हम गुज़रे, उसके पास आग जल रही थी जिसको वह भड़का रहा था और उसके चारों तरफ़ दौड़ रहा था। मैंने उनसे पूछा, ये शख़्स कौन है? उन्होंने कहा, आगे चलिए। फिर हम एक ऐसे बाग़ में पहुंचे जो हरा भरा था और उसमें मौसमे बहार के तमाम फूल थे। उस बाग़ के दर्मियान एक बहुत लम्बे साहब नज़र आए। उनके बहुत ज़्यादा लम्बे होने की वजह से मेरे लिए उनके सर को देखना मुश्किल था, उनके चारों तरफ़ बहुत सारे बच्चे थे। इतने ज़्यादा बच्चे मैंने कभी नहीं देखे। मैंने पूछा, यह कौन है? और ये बच्चे कौन हैं? उन्होंने मुझसे कहा, आगे चलिए, आगे चलिए। फिर हम चले और एक बड़े बाग़ में पहुंचे, मैंने इतना बड़ा ख़ूबसूरत बाग़ कभी नहीं देखा। उन्होंने मुझसे कहा, इसके ऊपर चढ़िए। हम उस पर चढ़े और ऐसे शहर के क़रीब पहुंचे जो इस तरह बना हुआ था कि उसकी एक ईंट सोने की थी और एक ईंट चांदी की थी। हम शहर के दरवाज़े के पास पहुंचे और उसे खुलवाया। वह हमारे लिए खोल दिया गया। हम उसमें ऐसे लोगों से मिले जिन के जिस्म का आधा हिस्सा इतना ख़ूबसूरत था कि

ख़ूबसूरत न देखा होगा और आधा हिस्सा इतना बदसूरत था कि इतना बदसूरत तुमने न देखा होगा। उन दोनों फ़रिश्तों ने उन लोगों से कहा कि जाओ उस नहर में कूद जाओ। मैंने देखा सामने एक चौड़ी नहर बह रही है जिसका पानी दूध-जैसा सफ़ेद है। वे लोग उसमें कूद गए, फिर जब वह हमारे पास वापस आए तो उनकी बदसूरती ख़त्म हो चुकी थी और वह बहुत ख़ूबसरूत हो चुके थे। दोनों फ़रिश्तों ने मुझसे कहा, यह जन्नते अ़द्न है और यह आपका घर है। मेरी नज़र ऊपर उठी, तो मैंने सफ़ेद बादल की तरह एक महल देखा उन्होंने कहा यही आपका घर है। मैंने उनसे कहा *बारकल्लाह फ़ीकुमा* (अल्लाह तआ़ला तुम दोनों में बरकत दें) मुझे छोड़ो, मैं उसके अन्दर जाऊं। उन्होंने कहा, अभी नहीं लेकिन बाद में तशरीफ़ ले जाएंगे। मैंने उनसे पूछा, आज रात मैंने अजीब चीज़ें देखी हैं, ये क्या हैं? उन्होंने मुझ से कहा: अब हम आप को बताते हैं। पहला शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे और उसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था यह वह है जो क़ुरआन सीखता है और उसको छोड़ देता है (न पढ़ता है, न अ़मल करता है) और फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ कर सो जाता है। (दूसरा) वह शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे और उसके जबड़े, नथुने और आंख को गुद्दी तक चीरा जा रहा था, यह वह है जो सुबह घर से निकलकर झूठ बोलता है और वह झूठ दुनिया में फैल जाता है। (तीसरा) वे नंगे मर्द और औरतें, जिन्हें आपने तन्नूर में जलते हुए देखा था ज़िनाकार मर्द और औरतें हैं। (चौथे) वह शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे जो नहर में तैर रहा था उसके मुंह में पत्थर डाला जा रहा था सूदख़ोर है। (पांचवां) वह बदसूरत आदमी जिसके पास से आप गुज़रे जो आग जला रहा था और उसके चारों तरफ़ दौड़ रहा था जहन्नम का दारोग़ा है जिसका नाम मालिक है। (छठे) वह साहब जो बाग़ में थे, हज़रत इब्राहीम अलैहि० हैं और वे बच्चे जो उनके चारों तरफ़ थे, ये वह हैं जो बचपन ही मे फ़ित्तरत (इस्लाम) पर मर गए। उस पर किसी सहाबी ने पूछा, या रसूलुल्लाह! मुश्रिकीन के बच्चों का क्या होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुश्रिकीन के बच्चे भी (वही) थे। और वे लोग जिनका आधा जिस्म ख़ूबसूरत और आधा जिस्म बदसूरत था, ये वह लोग थे जिन्होंने अच्छे अ़मल के साथ बुरे अ़मल किए, अल्लाह तआ़ला ने उनके गुनाह माफ़ कर दिए। (बुख़ारी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ وَاَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنِّيْ لَاَعْرِفُ اُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَيْنَ الْاُمَمِ، قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ تَعْرِفُ اُمَّتَكَ؟ قَالَ: اَعْرِفُهُمْ يُؤْتَوْنَ كُتُبَهُمْ بِاَيْمَانِهِمْ وَاَعْرِفُهُمْ بِسِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ وَاَعْرِفُهُمْ بِنُوْرِهِمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

رواه احمد ١٩٩/٥

200. हज़रत अबूज़र और हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सारी उम्मतों में से अपनी उम्मत को क़ियामत के दिन पहचान लूंगा, सहाबा किराम ﷺ ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! आप अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? आप ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उन्हें उनके आमालनामे दाएं हाथ में दिए जाने की वजह से पहचानूंगा और उन्हें उनके चेहरों के नूर की वजह से पहचानूंगा जो सज्दों की कसरत की वजह से उन पर नुमायां होगा और उन्हें उनके एक (ख़ास) नूर की वजह से पहचानूंगा, जो उनके आगे-आगे दौड़ रहा होगा। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : यह नूर हर मोमिन के ईमान की रोशनी होगी। हर एक की ईमानी क़ुव्वत के बक़द्र उसे रौशनी मिलेगी (कश्फ़ुर्रहमान)

بسم الله الرحمن الرحيم

नमाज़

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़ों पर पूरा करने में सबसे अहम और बुनयादी अ़मल नमाज़ है।

फ़र्ज़ नमाज़ें

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: ﴿إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ﴾ [العنكبوت:٤٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती रहती है। (अंकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ [البقرة:٢٧٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, ख़ास तौर से नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात अदा की तो, उनके रब के पास उनका सवाब महफ़ूज़ है और न उनको किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (बक़रः 277)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ﴾ [ابراهيم: ٣١]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबंदी रखें और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से कुछ ख़ुफ़िया और एलानिया ख़ैरात भी किया करें, उस दिन के आने से पहले-पहले कि जिस दिन न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी (कि कोई चीज़ देकर नेक आमाल ख़रीद लिए जाएं) और न उस दिन कोई दोस्ती काम आएगी (कि कोई दोस्त तुम्हें नेक आमाल दे दे)। (इब्राहीम : 31)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ﴾

[ابراهيم: ٤٠]

हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने दुआ फ़रमाई : ऐ मेरे रब! मुझको और मेरी औलाद को नमाज़ का ख़ास एहतमाम करने वाला बना दीजिए। ऐ हमारे रब! और मेरी यह दुआ क़ुबूल कर लीजिए। (इब्राहीम : 40)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا﴾ [بنى اسرائيل: ٧٨]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : सूरज के ज़वाल से लेकर रात के अंधेरे होने तक नमाज़ें अदा किया कीजिए, यानी ज़ुह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र की नमाज़ भी अदा किया कीजिए। बेशक फ़ज्र की नमाज़ (आमाल लिखने वाले) फ़रिश्तों के हाज़िर होने का वक़्त है।

(बनी इस्राईल : 78)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ﴾ [المؤمنون: ٩]

(अल्लाह तआला ने कामयाब ईमान वालों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई कि) वे अपनी फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबंदी करते हैं। (मोमिनून : 9)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴾ [الجمعة: ٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब जुमा के दिन जुमा की नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो तुम अल्लाह तआ़ला की याद यानी खुत्बा और नमाज़ की तरफ़ फ़ौरन चल दिया करो और ख़रीद व फ़रोख़्त (और उसी तरह दूसरे मशाग़िल) छोड़ दिया करो। यह बात तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम्हें कुछ समझ हो। (जुमुअः 9)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ: شَهَادَةِ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ، وَاِقَامِ الصَّلَاةِ، وَاِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ.

رواه البخاري،باب دعاؤكم ايمانكم......رقم:٨

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद पांच सुतूनों पर क़ायम की गई है : *'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'* की गवाही देना यानी इस हक़ीक़त की गवाही देना कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं; नमाज़ क़ायम करना; ज़कात अदा करना; हज करना और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना। (बुख़ारी)

﴿ 2 ﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنْ اَجْمَعَ الْمَالَ، وَاَكُوْنَ مِنَ التَّاجِرِيْنَ، وَلٰكِنْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنْ: سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ، وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ.

رواه البغوي في شرح السنة، مشكاة المصابيح رقم:٥٢٠٦

2. हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रहमतुल्लाह अलैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे यह हुक्म नहीं दिया गया कि मैं माल जमा करूं और ताजिर बनूं, बल्कि मुझे यह हुक्म दिया गया है कि आप अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते रहें, नमाज़ पढ़ने वालों में शामिल रहें और अपने रब की इबादत में मशग़ूल रहें, यहां तक कि आप को मौत आ जाए। (शरहुस्सुन्नः, मिश्कातुल मसाबीह)

﴿ 3 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ سُؤَالِ جِبْرَئِيْلَ إِيَّاهُ عَنِ الْإِسْلَامِ فَقَالَ: الْإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ، وَأَنْ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ، وَتَعْتَمِرَ، وَتَغْتَسِلَ مِنَ الْجَنَابَةِ، وَأَنْ تُتِمَّ الْوُضُوْءَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ قَالَ: فَإِذَا فَعَلْتُ ذٰلِكَ فَأَنَا مُسْلِمٌ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: صَدَقْتَ.

رواه ابن خزيمة ١/٤

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से जिबरील ﷺ ने (जबकि वह एक अजनबी शख़्स की शक्ल में हाज़िर हुए थे) इस्लाम के बारे में सवाल किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम (दिल व ज़बान से) इस बात की शहादत अदा करो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआला के रसूल हैं। नमाज़ पढ़ो, ज़कात अदा करो, हज और उमरा करो, जनाबत से पाक होने के लिए गुस्ल करो, वुज़ू को पूरा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। हज़रत जिबरील ﷺ ने पूछा : जब मैं ये सारे आमाल कर लूं तो क्या मैं मुसलमान हो जाऊंगा? इर्शाद फ़रमाया : हां। हज़रत जिबरील ﷺ ने अर्ज़ किया, आपने सच फ़रमाया। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿ 4 ﴾ عَنْ قُرَّةَ بْنِ دَعْمُوْصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَلْقَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِيْ حِجَّةِ الْوَدَاعِ فَقُلْنَا: يَارَسُوْلَ اللهِ! مَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا؟ قَالَ: أَعْهَدُ إِلَيْكُمْ أَنْ تُقِيْمُوا الصَّلَاةَ وَتُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَتَحُجُّوا الْبَيْتَ الْحَرَامَ وَتَصُوْمُوْا رَمَضَانَ فَإِنَّ فِيْهِ لَيْلَةً خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ وَتُحَرِّمُوْا دَمَ الْمُسْلِمِ وَمَالَهُ وَالْمُعَاهِدَ إِلَّا بِحَقِّهِ وَتَعْتَصِمُوْا بِاللهِ وَالطَّاعَةِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٣٤٢

4. हज़रत क़ुर्रः बिन दामूस ﷺ फ़रमाते हैं कि हमारी मुलाक़ात नबी करीम, से हज्जतुल विदाअ् में हुई। हमने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप हमें किन चीज़ों की वसीयत फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुमको इस बात की वसीयत करता हूं कि नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, बैतुल्लाह का हज करो और रमज़ान के रोज़े रखो, इसमें एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। मुसलमान और ज़िम्मी (जिससे मुआहिदा किया हुआ हो) के क़त्ल करने को और उनके माल लेने को हराम समझो, अलबत्ता किसी जुर्म के इरतकाब पर अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ उनको सज़ा दी जाएगी और तुम्हें वसीयत करता हूं कि तुम अल्लाह तआला को और उसकी फ़रमांबरदारी को मज़बूती से पकड़े रहो, यानी

हिम्मत के साथ दीन के कामों में अल्लाह तआ़ला के गै़र की ख़ुशनूदी और नाराज़गी की परवाह किए बग़ैर लगे रहो। (बैहक़ी)

﴿ 5 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ الصَّلَاةُ وَمِفْتَاحُ الصَّلَاةِ الطُّهُوْرُ. رواه احمد ٣/٣٤٠

5. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत की कुंजी नमाज़ है और नमाज़ की कुंजी वुज़ू है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 6 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: جُعِلَ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلَاةِ.

(وهو بعض الحديث) رواه النسائي، باب حب النساء، رقم: ٣٣٩١

6. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है। (नसाई)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الصَّلَاةُ عِمَادُ الدِّيْنِ.

رواه ابو نعيم في الحلية وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/١٣٠

7. हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ दीन का सुतून है। (हिलयतुल औलिया, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 8 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ آخِرُ كَلَامِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: الصَّلَاةَ الصَّلَاةَ، اتَّقُوا اللهَ فِيْمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ. رواه ابو داؤد، باب في حق المملوك، رقم: ٥١٥٦

8. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने आख़िरी वसीयत यह इर्शाद फ़रमाई : नमाज़, नमाज़। अपने गुलामों और मातहतों के बारे में अल्लाह तआ़ला से डरो यानी उनके हुक़ूक़ अदा करो। (अबूदाऊद)

﴿ 9 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَقْبَلَ مِنْ خَيْبَرَ، وَمَعَهُ غُلَامَانِ، فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَخْدِمْنَا، قَالَ: خُذْ أَيَّهُمَا شِئْتَ، قَالَ: خِرْ لِيْ قَالَ: خُذْ هٰذَا وَلَا تَضْرِبْهُ، فَإِنِّيْ قَدْ رَأَيْتُهُ يُصَلِّيْ مَقْفَلَنَا مِنْ خَيْبَرَ، وَإِنِّيْ قَدْ نُهِيْتُ عَنْ ضَرْبِ أَهْلِ الصَّلٰوةِ.

(وهو بعض الحديث) رواه احمد والطبراني، مجمع الزوائد ٤/٤٣٣

9. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ख़ैबर से वापस तशरीफ़ लाए, आप ﷺ के साथ दो गुलाम थे। हज़रत अ़ली ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या

रसूलुल्लाह! हमें ख़िदमत के लिए कोई ख़ादिम दे दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन दोनों में से जो सा चाहो ले लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया : आप ही पसन्द फ़रमा दें। नबी करीम ﷺ ने उनमें से एक की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया : उसको ले लो, लेकिन उसको मारना नहीं, क्योंकि ख़ैबर से वापसी पर मैंने उसको नमाज़ पढ़ते देखा है और मुझे नमाज़ियों को मारने से मना किया गया है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 10 ﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ افْتَرَضَهُنَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ، مَنْ أَحْسَنَ وُضُوْءَ هُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَأَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ، كَانَ لَهُ عَلَى اللهِ عَهْدٌ أَنْ يَغْفِرَلَهُ، وَمَنْ لَّمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهُ عَلَى اللهِ عَهْدٌ، إِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُ، وَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ. رواه ابو داؤد،باب المحافظة على الصلوات،رقم: ٤٢٥

10. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला ने पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं। जो शख़्स उन नमाज़ों के लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है, उन्हें मुस्तहब वक़्त में अदा करता है, रुकूअ् (सज्दा) इत्मीनान के साथ करता है और ख़ुशूअ् से पढ़ता है तो अल्लाह तआ़ला का वादा है कि उसकी ज़रूर मग्फ़िरत फ़रमाएंगे और जो शख़्स उन नमाज़ों को वक़्त पर अदा नहीं करता और न ही ख़ुशूअ् से पढ़ता है, तो उससे मग्फ़िरत का कोई वादा नहीं, चाहे मग्फ़िरत फ़रमाएं, चाहे अ़ज़ाब दें। (अबूदाऊद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ حَنْظَلَةَ الْأُسَيْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ عَلَى وُضُوْءِ هَا وَمَوَاقِيْتِهَا وَرُكُوْعِهَا وَسُجُوْدِهَا يَرَاهَا حَقًّا لِلّٰهِ عَلَيْهِ حُرِّمَ عَلَى النَّارِ. رواه احمد ٢٦٧/٤

11. हज़रत हंज़ला उसैदी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स पांचों नमाज़ों की इस तरह पाबंदी करे कि वुज़ू और औक़ात का एहतमाम करे, रुकूअ् और सज्दा अच्छी तरह करे और इस तरह नमाज़ पढ़ने को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अपने ज़िम्मा ज़रूर समझे तो उस आदमी को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 12 ﴾ عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ بْنِ رِبْعِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ [illegible] فَرَضْتُ عَلَى أُمَّتِكَ خَمْسَ صَلَوَاتٍ، وَعَهِدْتُ عِنْدِيْ عَهْدًا، أَنَّهُ مَنْ جَاءَ

يُحَافِظُ عَلَيْهِنَّ لِوَقْتِهِنَّ أَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَمْ يُحَافِظْ عَلَيْهِنَّ فَلَا عَهْدَ لَهُ عِنْدِي.

رواه ابو داؤد، باب المحافظة على الصلوات، رقم: ٤٣٠

12. हज़रत अबू क़तादा बिन रिबई ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैंने तुम्हारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और इस बात की मैंने ज़िम्मेदारी ले ली है कि जो शख़्स (मेरे पास) इस हाल में आएगा, उसने इन पांच नमाज़ों को उनके वक़्त पर अदा करने का एहतमाम किया होगा, उसको जन्नत में दाख़िल करूंगा और जिस शख़्स ने नमाज़ों का एहतमाम नहीं किया होगा, तो मुझ पर उसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं (चाहे माफ़ कर दूं या सज़ा दूं)। (अबूदाऊद)

﴿ 13 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ عَلِمَ أَنَّ الصَّلَاةَ حَقٌّ وَاجِبٌ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواه عبدالله بن احمد في زياداته و ابو يعلى الا انه قال: حَقٌّ مَكْتُوبٌ وَاجِبٌ. والبزار بنحوه، ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/ ١٥

13. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझे, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्नद अहमद, अबू याला, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 14 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُرْطٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الصَّلَاةُ فَإِنْ صَلُحَتْ صَلُحَ سَائِرُ عَمَلِهِ، وَإِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهِ. رواه الطبراني في الاوسط ولا بأس باسناده انشاء الله، الترغيب ١/ ٢٤٥

14. हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ुर्तिन ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। अगर नमाज़ अच्छी हुई तो बाक़ी आमाल भी अच्छे होंगे और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो बाक़ी आमाल भी ख़राब होंगे। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 15 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ فُلَانًا يُصَلِّي فَإِذَا أَصْبَحَ سَرَقَ قَالَ: سَيَنْهَاهُ مَا يَقُولُ. رواه البزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/ ٥٢١

15. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से अर्ज़ किया : फ़्लां शख़्स (रात में) नमाज़ पढ़ता है, फिर सुबह होते ही चोरी करता

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी नमाज़ उसको इस बुरे काम से अनक़रीब ही रोक देगी। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 16 ﴾ عَنْ سَلْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ صَلَّى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ، تَحَاتَّتْ خَطَايَاهُ كَمَا يَتَحَاتُّ هٰذَا الْوَرَقُ، وَقَالَ: ﴿وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ﴾ [هود:١١٤](وهو جزء من الحديث) رواه احمد ٥/٤٣٧

16. हज़रत सलमान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर पांचों नमाज़ें पढ़ता है, तो उसके गुनाह ऐसे ही गिर जाते हैं जैसे ये पत्ते गिर रहे हैं। फिर आप ﷺ ने क़ुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा इस तरह है। तर्जुमा : *ऐ मुहम्मद! आप दिन के दोनों किनारों और रात के कुछ हिस्सों में नमाज़ की पाबंदी किया कीजिए। बेशक नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं। ये बातें, मुकम्मल नसीहत है उन लोगों के लिए जो नसीहत क़ुबूल करने वाले हैं।* (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक दो किनारों से मुराद दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में सुबह की नमाज़ और दूसरे हिस्से में ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ें मुराद हैं। रात के कुछ हिस्सों में नमाज़ पढ़ने से मुराद मग़रिब और इशा की नमाज़ों का पढ़ना है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

﴿ 17 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمْعَةُ إِلَى الْجُمْعَةِ، وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ، مُكَفِّرَاتٌ مَا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتُنِبَ الْكَبَائِرُ. رواه مسلم، باب الصلوات الخمس... رقم: ٥٥٢

17. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पांचों नमाज़ें, जुमा की नमाज़ पिछले जुमा तक और रमज़ान के रोज़े पिछले रमज़ान तक दर्मियानी औक़ात के तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा हैं, जबकि उन आमाल को करने वाला कबीरा गुनाहों से बचे। (मुस्लिम)

﴿ 18 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى هٰؤُلَاءِ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ.

(الحديث) رواه ابن خزيمة في صحيحه، ٢/١٨٠

18. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इन पांच फ़र्ज़ नमाज़ों को पाबंदी से पढ़ता है वह अल्लाह तआ़ला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता। (इब्ने ख़ुज़ैमा).

﴿ 19 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلَاةَ يَوْمًا، فَقَالَ: مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَبُرْهَانًا، وَنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ لَمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ يَكُنْ لَهُ نُوْرٌ وَلَا بُرْهَانٌ، وَلَا نَجَاةٌ، وَكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ.

رواه احمد والطبراني في الكبير والاوسط، ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٢١/٢

19. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷛ से रिवायत है कि एक दिन नबी करीम ﷺ ने नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ का इहतिमाम करता है, तो नमाज़ उसके लिए क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से बचने का ज़रिया होगी। जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम नहीं करता उसके लिए क़ियामत के दिन न नूर होगा, न (उसके पूरे ईमानदार होने की) कोई दलील होगी, न अ़ज़ाब से बचने का कोई ज़रिया होगा और वह क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न, हामान और उबई बिन ख़लफ़ के साथ होगा। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मजमउ़ज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ أَبِيْ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ إِذَا أَسْلَمَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَّمُوْهُ الصَّلَاةَ. رواه الطبراني في الكبير ٨/٣٨٠ وفي الحاشية:

قال في المجمع ١/٢٩٣: رواه الطبراني والبزار ورجاله رجال الصحيح

20. हज़रत अबू मालिक अशजई ﷛ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में जब कोई शख़्स मुसलमान होता, तो (सहाबा किराम ﷡) सबसे पहले उसे नमाज़ सिखाते। (तबरानी)

﴿ 21 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! أَيُّ الدُّعَاءِ أَسْمَعُ؟ قَالَ: جَوْفُ اللَّيْلِ الْآخِرُ، وَدُبُرَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب حديث ينزل ربنا كل ليلة ... رقم: ٣٤٩٩

21. हज़रत अबू उमामा ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : या रसूलल्लाह! कौन-से वक़्त की दुआ़ ज़्यादा क़ुबूल होती है? इर्शाद फ़रमाया : रात के आख़िरी हिस्से में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। (तिर्मिज़ी)

﴾ 22 ﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللہِ ﷺ یَقُوْلُ: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ کَفَّارَۃٌ لِمَا بَیْنَھَا، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: اَرَاَیْتَ لَوْ اَنَّ رَجُلًا کَانَ یَعْتَمِلُ فَکَانَ بَیْنَ مَنْزِلِہٖ وَمُعْتَمَلِہٖ خَمْسَۃُ اَنْھَارٍ، فَاِذَا اَتٰی مُعْتَمَلَہٗ عَمِلَ فِیْہِ مَاشَاءَ اللہُ فَاَصَابَہُ الْوَسَخُ اَوِالْعَرَقُ فَکُلَّمَا مَرَّ بِنَھْرٍ اغْتَسَلَ مَاکَانَ ذٰلِکَ یُبْقِیْ مِنْ دَرَنِہٖ، فَکَذٰلِکَ الصَّلَاۃُ کُلَّمَا عَمِلَ خَطِیْئَۃً فَدَعَا وَاسْتَغْفَرَ غُفِرَ لَہٗ مَاکَانَ قَبْلَھَا. رواہ البزار والطبرانی فی الاوسط والکبیر وزادفیہ ثُمَّ صَلّٰی صَلَاۃً اِسْتَغْفَرَغَفَرَاللہُ لَہٗ مَاکَانَ قَبْلَھَا و فیہ: عبداللّٰہ بن قریظ ذکرہ ابن حیان فی الثقات، بقیۃ رجالہ رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۳۲/۲

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : पांचों नमाज़ें दर्मियानी औक़ात के लिए कफ़्फ़ारा हैं, यानी एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो सग़ीरा गुनाह हो जाते हैं, वह नमाज़ की बरकत से माफ़ हो जाते हैं। उसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक शख़्स का कोई कारख़ाना है, जिसमें वह कुछ कारोबार करता है उसके कारख़ाने और मकान के दर्मियान पांच नहरें पड़ती हैं। जब वह कारख़ाने में काम करता है तो उसके बदन पर मैल लग जाता है या उसे पसीना आ जाता है। फिर घर जाते हुए हर नहर पर गुस्ल करता हुआ जाता है। इस (बार-बार गुस्ल करने से) उसके जिस्म पर मैल नहीं रहता। यही हाल नमाज़ का है कि जब भी कोई गुनाह कर लेता है तो दुआ इस्तग़फ़ार करने से अल्लाह तआ़ला नमाज़ से पहले के तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 23 ﴿ عَنْ زَیْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: اُمِرْنَا اَنْ نُسَبِّحَ دُبُرَ کُلِّ صَلَاۃٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِیْنَ وَنَحْمَدَہٗ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِیْنَ وَنُکَبِّرَہٗ اَرْبَعًا وَّثَلَاثِیْنَ قَالَ: فَرَاٰی رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فِی الْمَنَامِ، فَقَالَ: اَمَرَکُمْ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ اَنْ تُسَبِّحُوْا فِیْ دُبُرِ کُلِّ صَلَاۃٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِیْنَ وَتَحْمَدُوا اللہَ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِیْنَ وَتُکَبِّرُوْا اَرْبَعًا وَّثَلَاثِیْنَ ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْعَلُوْا خَمْسًا وَّعِشْرِیْنَ وَاجْعَلُوا التَّھْلِیْلَ مَعَھُنَّ فَغَدَا عَلَی النَّبِیِّ ﷺ فَحَدَّثَہٗ فَقَالَ: افْعَلُوْا.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث صحیح، باب منہ ماجاء فی التسبیح والتکبیر والتحمید عند المنام، رقم: ۳٤۱۳، الجامع الصحیح وھو سنن الترمذی، طبع دار الکتب العلمیۃ

23. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि हमें (नबी करीम ﷺ की तरफ़

से) हुक्म दिया गया था कि हम हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल-हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाहु अकबर 34 मर्तबा पढ़ें। एक अंसारी सहाबी ﷺ ने ख़्वाब में देखा कोई साहब कहते हैं : क्या तुमको रसूलुल्लाह ﷺ ने हुक्म फ़रमाया है कि हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल-हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़ो? उन्होंने कहा, जी हां! उन साहब ने कहा : हर कलिमा को 25 मर्तबा कर लो और इन कलिमात के साथ (25 मर्तबा) *ला इला-ह इल्लल्लाह* इज़ाफ़ा कर लो। चुनांचे सुबह को नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़्वाब ब्यान किया। आप ﷺ ने फ़रमाया, ऐसा ही कर लो, यानी उसकी इजाज़त फ़रमा दी। (तिर्मिज़ी)

﴿ 24 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِيْنَ اَتَوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَقَالُوْا: قَدْ ذَهَبَ اَهْلُ الدُّثُوْرِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلٰى وَالنَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ فَقَالَ: وَمَاذَاكَ؟ قَالُوْا: يُصَلُّوْنَ كَمَا نُصَلِّيْ، وَيَصُوْمُوْنَ كَمَا نَصُوْمُ، وَيَتَصَدَّقُوْنَ وَلَا نَتَصَدَّقُ، وَيُعْتِقُوْنَ وَلَا نُعْتِقُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَفَلَا اُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُوْنَ بِهٖ مَنْ سَبَقَكُمْ، وَتَسْبِقُوْنَ بِهٖ مَنْ بَعْدَكُمْ؟ وَلَا يَكُوْنُ اَحَدٌ اَفْضَلَ مِنْكُمْ اِلَّا مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ. قَالُوْا: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: تُسَبِّحُوْنَ وَتُكَبِّرُوْنَ وَتَحْمَدُوْنَ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ، ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ مَرَّةً، قَالَ اَبُوْ صَالِحٍ: فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالُوْا: سَمِعَ اِخْوَانُنَا اَهْلُ الْاَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا، فَفَعَلُوْا مِثْلَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ.

رواه مسلم، باب استحباب الذكر بعد الصلاة ... ، رقم: ١٣٤٧

24. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में एक मर्तबा फ़ुक़रा मुहाजिरीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : मालदार बुलन्द दर्जे और हमेशा रहने वाली नेमतें ले गए। आप ﷺ ने पूछा : वह कैसे? उन्होंने अर्ज़ किया : जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं, वह नमाज़ पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़ा रखते हैं वह रोज़ा रखते हैं (लेकिन) वह सदक़ा देते हैं हम नहीं दे सकते और वह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं कर सकते। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखा दूं कि जिसकी वजह से तुम अपने से आगे बढ़ने वालों के दर्जों को हासिल कर लो और अपने से कम दर्जे वालों से आगे बढ़ते रहो और कोई तुम से उस वक़्त तक अफ़ज़ल न हो, जब तक कि यह अमल न कर ले। उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बता दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर

'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' 33- 33 मर्तबा पढ़ लिय करो। (चुनांचे उन्होंने उस पर अ़मल शुरू कर दिया, लेकिन मालदारों को भी रसूलुल्लाह ﷺ का यह फ़रमान पहुंच गया, तो वे भी इसपर अ़मल करने लगे) फ़ुक़रा मुहाजिरीन ने दोबारा हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि हमारे मालदार भाइयों ने भी यह सुन लिया और वह भी यही करने लगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह तो अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसे चाहें अ़ता फ़रमा देते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 25 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: مَنْ سَبَّحَ اللهَ فِى دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلاثًا وَّثَلَاثِيْنَ، وَحَمِدَ اللهَ ثَلاثًا وَّثَلاثِيْنَ وَكَبَّرَاللهَ ثَلاثًا وَّثَلَاثِيْنَ، فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَّتِسْعُوْنَ، وَقَالَ: تَمَامَ الْمِائَةِ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه مسلم باب استحباب الذكر بعد الصلاة وبيان صفته، رقم: ١٣٥٢

25. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हर नमाज़ के बाद سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'* 33 मर्तबा, الحمد لله *'अलहम्दु लिल्लाह'* 33 मर्तबा, الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* 33 मर्तबा पढ़े, ये कुल 99 मर्तबा हुआ, और सौ की गिनती पूरी करते हुए एक मर्तबा *'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०'* पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, अगरचे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (मुस्लिम)

﴿ 26 ﴾ عَنِ الْفَضْلِ بْنِ الْحَسَنِ الضَّمْرِىِّ اَنَّ اُمَّ الْحَكَمِ اَوْضُبَاعَةَ ابْنَتَىِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَتْهُ عَنْ اِحْدَاهُمَا اَنَّهَا قَالَتْ: اَصَابَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَبْيًا فَذَهَبْتُ اَنَا وَاُخْتِىْ وَفَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَشَكَوْنَا اِلَيْهِ مَا نَحْنُ فِيْهِ وَسَاَلْنَاهُ اَنْ يَاْمُرَلَنَا بِشَىْءٍ مِنَ السَّبْيِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَبَقَكُنَّ يَتَامٰى بَدْرٍ، وَلٰكِنْ سَاَدُلُّكُنَّ عَلٰى مَا هُوَ خَيْرٌ لَّكُنَّ مِنْ ذٰلِكَ، تُكَبِّرْنَ اللهَ عَلٰى اِثْرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَكْبِيْرَةً وَّثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَسْبِيْحَةً وَّثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَحْمِيْدَةً وَلَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

رواه ابو داؤد، باب فى مواضع قسم الخمس ... ، رقم: ٢٩٨٧

26. हज़रत फ़ज़्ल बिन हसन ज़मरी से रिवायत है कि ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब

की दो साहिबज़ादियों में से हज़रत उम्मे हकम या हज़रत ज़ुबाआ ﷺ ने यह वाक़िआ ब्यान किया कि नबी करीम ﷺ के पास कुछ कैदी आए। मैं और मेरी बहन और नबी करीम ﷺ की बेटी हज़रत फ़ातिमा हम तीनों आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपनी मुश्किलों का ज़िक्र करके कुछ कैदी ख़िदमत के लिए मांगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ख़ादिम के देने में तो बद्र के यतीम तुम से पहले हैं, अलबत्ता मैं तुम्हें ख़ादिम से बेहतर चीज़ बताता हूं। हर नमाज़ के बाद ये तीनों कलिमे 'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' 33- 33 मर्तबा और एक मर्तबा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु व वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर॰' पढ़ लिया करो। (अबूदाऊद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مُعَقِّبَاتٌ لَا يَخِيْبُ قَائِلُهُنَّ اَوْ فَاعِلُهُنَّ: ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَسْبِيْحَةً، وَثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَحْمِيْدَةً، وَاَرْبَعًا وَّثَلَاثِيْنَ تَكْبِيْرَةً فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ. رواه مسلم، باب استحباب الذكر بعد الصلاة...، رقم: ١٣٥٠

27. हज़रत काब बिन उजरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ के बाद पढ़े जाने वाले चन्द कलिमे ऐसे हैं जिनका पढ़ने वाला कभी महरूम नहीं होता। ये कलिमे हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'*, 33 मर्तबा الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* और 34 मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* हैं। (मुस्लिम)

﴿ 28 ﴾ عَنِ السَّائِبِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَمَّا زَوَّجَهُ فَاطِمَةَ بَعَثَ مَعَهُ بِخَمِيْلَةٍ، وَوِسَادَةٍ مِنْ اَدَمٍ حَشْوُهَا لِيْفٌ، وَرَحَيَيْنِ وَسِقَاءٍ، وَجَرَّتَيْنِ، فَقَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِفَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ذَاتَ يَوْمٍ: وَاللهِ لَقَدْ سَنَوْتُ حَتّٰى لَقَدِ اشْتَكَيْتُ صَدْرِيْ، قَالَ: وَقَدْ جَاءَ اللهُ اَبَاكِ بِسَبْيٍ فَاذْهَبِيْ فَاسْتَخْدِمِيْهِ، فَقَالَتْ: وَاَنَا وَاللهِ قَدْ طَحَنْتُ حَتّٰى مَجِلَتْ يَدَايَ، فَاَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكِ اَيْ بُنَيَّةُ؟ قَالَتْ: جِئْتُ لِاُسَلِّمَ عَلَيْكَ وَاسْتَحْيَتْ اَنْ تَسْاَلَهُ وَرَجَعَتْ فَقَالَ: مَا فَعَلْتِ، قَالَتْ: اِسْتَحْيَيْتُ اَنْ اَسْاَلَهُ، فَاَتَيْنَاهُ جَمِيْعًا، فَقَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! لَقَدْ سَنَوْتُ حَتّٰى اشْتَكَيْتُ صَدْرِيْ، وَقَالَتْ فَاطِمَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: قَدْ طَحَنْتُ حَتّٰى مَجِلَتْ يَدَايَ، وَقَدْ جَاءَكَ اللهُ بِسَبْيٍ وَسَعَةٍ فَاَخْدِمْنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَاللهِ لَا اُعْطِيْكُمَا وَاَدَعُ اَهْلَ الصُّفَّةِ تَطْوٰى بُطُوْنُهُمْ لَا اَجِدُ مَا اُنْفِقُ عَلَيْهِمْ، وَلٰكِنِّيْ اَبِيْعُهُمْ وَاُنْفِقُ عَلَيْهِمْ اَثْمَانَهُمْ، فَرَجَعَا فَاَتَاهُمَا النَّبِيُّ ﷺ،

وَقَدْ دَخَلَا فِيْ قَطِيْفَتِهِمَا إِذَا غَطَّيَا رُؤُوْسَهُمَا تَكَشَّفَتْ أَقْدَامُهُمَا وَإِذَا غَطَّيَا أَقْدَامَهُمَا تَكَشَّفَتْ رُؤُوْسُهُمَا فَثَارَا، فَقَالَ: مَكَانَكُمَا ثُمَّ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمَا بِخَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَانِي؟ قَالَا: بَلٰى، فَقَالَ: كَلِمَاتٌ عَلَّمَنِيْهِنَّ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ: تُسَبِّحَانِ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا، وَتَحْمَدَانِ عَشْرًا، وَتُكَبِّرَانِ عَشْرًا، وَإِذَا أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا فَسَبِّحَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ، وَاحْمَدَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ، وَكَبِّرَا أَرْبَعًا وَثَلَاثِيْنَ قَالَ: فَوَاللهِ مَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ عَلَّمَنِيْهِنَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَالَ: فَقَالَ لَهُ ابْنُ الْكَوَّاءِ: وَلَا لَيْلَةَ صِفِّيْنَ، فَقَالَ: قَاتَلَكُمُ اللهُ يَا أَهْلَ الْعِرَاقِ نَعَمْ، وَلَا لَيْلَةَ صِفِّيْنَ.

رواه احمد ١/١٠٦

28. हज़रत साइब ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत अली ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने जब उनकी शादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से की, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ एक चादर, एक चमड़े का तकिया, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, दो चक्कियां, एक मश्कीज़ा और दो मटके भेजे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाते हैं मैंने एक दिन हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा : अल्लाह की क़सम! कुंए से डोल खींचते-खींचते मेरे सीने में दर्द हो गया, तुम्हारे वालिद के पास कुछ क़ैदी अल्लाह तआला ने भेजे हैं उनकी ख़िदमत में जाकर एक ख़ादिम मांग लो। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा : मेरे हाथों में भी चक्की चलाते-चलाते गट्टे पड़ गए। चुनांचे वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में गईं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : प्यारी बेटी! कैसे आना हुआ? हज़रत फ़ातिमा ने अर्ज़ किया : सलाम करने आई हूं और शर्म की वजह से अपनी ज़रूरत न बता सकीं, तो यूं ही वापस आ गईं। मैंने उनसे पूछा : क्या हुआ? उन्होंने कहा : मैं तो शर्म की वजह से ख़ादिम न मांग सकी। फिर हम दोनों इकट्ठे नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कुंए से पानी खींचते-खींचते मेरे सीने में तकलीफ़ हो गई और हज़रत फ़ातिमा ने अर्ज़ किया : चक्की चला-चला कर मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए। अल्लाह तआला ने आप के पास क़ैदी भेजे हैं और कुछ वुस्अत अता फ़रमाई है, इसलिए हमें भी एक ख़ादिम दे दीजिए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! सुफ़्फ़ा वाले भूख की वजह से ऐसे हाल में हैं कि उनके पेटों पर बल पड़े हुए हैं, उन पर ख़र्च करने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है, इसलिए ये गुलाम बेचकर उनकी रक़म को सुफ़्फ़ा वालों पर ख़र्च करूंगा। यह सुनकर हम दोनों वापस आ गए। रात को हम दोनों छोटे से कम्बल में लेटे हुए थे कि जब उससे सर ढांकते तो पैर खुल जाते और जब पैरों को ढांकते तो सर खुल

जाता। अचानक रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ ले आए, हम दोनों जल्दी से उठने लगे, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी जगह लेटे रहो और फ़रमाया : तुमने मुझसे जो ख़ादिम मांगा है क्या तुम्हें उससे बेहतर चीज़ न बता दूं? हमने अ़र्ज़ किया : ज़रूर बतलाइए। इर्शाद फ़रमाया : ये चन्द कलिमे मुझे जिबरील عليه السلام ने सिखलाए हैं। तुम दोनों हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा *सुब्हानल्लाह*, दस मर्तबा *अल्हम्दुलिल्लाह*, दस मर्तबा *अल्लाहु अकबर* कह लिया करो और जब बिस्तर पर लेटो तो 33 मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'*, 33 मर्तबा الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* और 34 मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* कहा करो। हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! जब से मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने ये कलिमे सिखाए हैं, मैंने उनका पढ़ना कभी न छोड़ा। इब्ने कवा रहमतुल्लाह अ़लैह ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه से पूछा, (क्या आपने) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई वाली रात में भी उन कलिमे को पढ़ना न छोड़ा? फ़रमाया : इराक़ वालो! तुम पर अल्लाह की मार हो, सिफ़्फ़ीन की लड़ाई वाली रात को भी मैंने ये कलिमे नहीं छोड़े। (मुस्नद अहमद)

﴿ 29 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَصْلَتَانِ لَا يُحْصِيْهِمَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ، هُمَا يَسِيْرٌ، وَمَنْ يَعْمَلُ بِهِمَا قَلِيْلٌ: يُسَبِّحُ اللهَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا، وَيَحْمَدُهُ عَشْرًا، وَيُكَبِّرُ عَشْرًا قَالَ: فَأَنَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، يَعْقِدُهَا بِيَدِهِ قَالَ: فَقَالَ: خَمْسُوْنَ وَمِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَأَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ فِي الْمِيْزَانِ، وَإِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ سَبَّحَ وَحَمِدَ وَكَبَّرَ مِائَةً، فَتِلْكَ مِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَأَلْفٌ فِي الْمِيْزَانِ، فَأَيُّكُمْ يَعْمَلُ فِي الْيَوْمِ الْوَاحِدِ أَلْفَيْنِ وَخَمْسَمِائَةِ سَيِّئَةٍ، قَالَ: كَيْفَ لَا يُحْصِيْهِمَا؟ قَالَ: يَأْتِي أَحَدَكُمُ الشَّيْطَانُ، وَهُوَ فِي صَلَاةٍ، فَيَقُوْلُ: اذْكُرْ كَذَا، اذْكُرْ كَذَا، حَتَّى شَغَلَهُ وَلَعَلَّهُ أَنْ لَا يَعْقِلَ، وَيَأْتِيْهِ فِي مَضْجَعِهِ فَلَا يَزَالُ يُنَوِّمُهُ حَتَّى يَنَامَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: حديث صحيح ٥/٣٥٤

29. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदतें ऐसी हैं जो मुसलमान भी उनकी पाबंदी करे, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। वे दोनों आदतें आसान हैं, लेकिन उनपर अ़मल करने वाले बहुत कम हैं। एक यह कि हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'*, दस मर्तबा الحمد لله *'अलहम्दु लिल्लाह'*, दस मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* पढ़े। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं : मैंने नबी करीम ﷺ को देखा कि अपने हाथ

की उंगलियों पर शुमार फ़रमा रहे थे कि ये (तीनों कलिमे दस-दस मर्तबा पांच नमाज़ों के बाद) पढ़ने में एक सौ पचास हुए, लेकिन आमाल के तराज़ू में (दस गुना हो जाने की वजह से) पन्द्रह सौ होंगे। दूसरी आदत यह कि जब सोने के लिए बिस्तर पर आए तो *'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर'* सौ मर्तबा पढ़े (इस तौर पर कि سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'* 33 मर्तबा, الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* 33 मर्तबा, الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* 34 मर्तबा पढ़ लिया करे) ये पढ़ने में सौ कलिमे हो गए जिनका सवाब एक हज़ार नेकियां हो गईं (अब उनकी और दिन भर की नमाज़ों के बाद की कुल मीज़ान दो हज़ार पांच सौ नेकियां हो गईं)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दिन में दो हज़ार पांच सौ गुनाह कौन करता होगा? यानी इतने गुनाह नहीं होते और दो हज़ार पांच सौ नेकियां लिख दी जाती हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह ؓ ने पूछा : या रसूलुल्लाह! यह क्या बात है कि इन आदतों पर अमल करने वाले आदमी कम हैं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (यह इस वजह से है कि) शैतान नमाज़ में आकर कहता है कि फ़्लां ज़रूरत और फ़्लां बात याद कर, यहां तक कि उसको उन्हीं ख़्यालों में मशगूल कर देता है, ताकि इन कलिमों के पढ़ने का ध्यान न रहे और शैतान बिस्तर पर आकर सुलाता रहता है, यहां तक कि उन कलिमों को पढ़े बग़ैर ही सो जाता है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 30 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ اَخَذَ بِيَدِهٖ وَقَالَ: يَا مُعَاذُ! وَاللهِ اِنِّيْ لَاُحِبُّكَ، فَقَالَ: اُوْصِيْكَ يَا مُعَاذُ! لَا تَدَعَنَّ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ تَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ. رواه ابوداؤد باب في الاستغفار، رقم: ١٥٢٢

30. हज़रत मुआज़ बिन जबल ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनका हाथ पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : मुआज़! अल्लाह की क़सम! मुझे तुमसे मुहब्बत है। फिर फ़रमाया : मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि किसी भी नमाज़ के बाद ये पढ़ना न छोड़ना : *'अल्लाहुम-म अइन्नी अला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादतिक'* तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मेरी मदद फ़रमाइए कि मैं आपका ज़िक्र करूं और आपका शुक्र अदा करूं और आपकी अच्छी इबादत करूं। (अबूदाऊद)

﴿ 31 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : مَنْ قَرَاَ آيَةَ الْكُرْسِيِّ

فِیْ دُبُرِ کُلِّ صَلَاۃٍ مَکْتُوْبَۃٍ، لَمْ یَمْنَعْهُ مِنْ دُخُوْلِ الْجَنَّۃِ اِلَّا اَنْ یَمُوْتَ. رواہ النسائی فی عمل الیوم واللیلۃ، رقم: ۱۰۰، وفی روایۃ: وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ

رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط باسانید واحدھا جید، مجمع الزوائد ۱۲۸/۱۰

31. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करे, उसको जन्नत में जाने से सिर्फ़ उसकी मौत ही रोके हुए है। एक रिवायत में आयतुल कुर्सी के साथ सूरः *कुल हुवल्लाहु अहद०* पढ़ने का भी ज़िक्र है।

(अमलुलयौम वल्लैलः तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 32 ﴾ عَنْ حَسَنِ بْنِ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ آیَۃَ الْکُرْسِیِّ فِیْ دُبُرِ الصَّلَاۃِ الْمَکْتُوْبَۃِ کَانَ فِیْ ذِمَّۃِ اللّٰهِ اِلَی الصَّلَاۃِ الْاُخْرٰی.

رواہ الطبرانی واسنادہ حسن، مجمع الزوائد ۱۲۸/۱۰

32. हज़रत हसन बिन अली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ के बाद "आयतुल कुर्सी" पढ़ लेता है, वह दूसरी नमाज़ तक अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में रहता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 33 ﴾ عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: مَا صَلَّیْتُ خَلْفَ نَبِیِّکُمْ ﷺ اِلَّا سَمِعْتُهُ یَقُوْلُ حِیْنَ یَنْصَرِفُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ خَطَایَایَ وَذُنُوْبِیْ کُلَّهَا، اَللّٰهُمَّ وَانْعَشْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَاهْدِنِیْ بِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ، لَا یَهْدِیْ لِصَالِحِهَا، وَلَا یَصْرِفُ سَیِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ.

رواہ الطبرانی فی الصغیر والاوسط واسنادہ جید، مجمع الزوائد ۱۴۵/۱۰

33. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने जब भी तुम्हारे नबी ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी, उन्हें नमाज़ से फ़ारिग़ होकर यही दुआ मांगते हुए सुना :

तर्जुमाः या अल्लाह! मेरी तमाम ग़लतियां और गुनाह माफ़ फ़रमाइए। या अल्लाह! मुझे बुलन्दी अता फ़रमाइए, मेरी कमी को दूर फ़रमाइए और मुझे अच्छे आमाल और अच्छे अख़्लाक़ की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाइए, इसलिए कि अच्छे आमाल और अच्छे अख़्लाक़ की हिदायत आप के अलावा और कोई नहीं दे सकता और बुरे कामों और बुरे अख़्लाक़ को आपके सिवा और कोई दूर नहीं कर सकता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 34 ﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ صَلَّى الْبَرْدَيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواه البخاري، باب فضل صلوة الفجر، رقم: ٥٧٤

34. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो ठंढी नमाज़ें पढ़ता है, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : दो ठंढी नमाज़ों से मुराद फ़ज्र और अस्र की नमाज़ है। फ़ज्र ठंडे वक़्त के इख़्तिताम पर और अस्र ठंढक की इब्तिदा पर अदा की जाती है। उन दोनों नमाज़ों का ख़ास तौर पर इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि फ़ज्र की नमाज़ नींद के ग़लबा की वजह से और अस्र की नमाज़ कारोबारी मशग़ूलियत की वजह से पढ़ना मुश्किल होता है, लिहाज़ा इन दो नमाज़ों का इहतिमाम करने वाला यक़ीनन बाक़ी तीन नमाज़ों का भी एहतिमाम करेगा। (मिरक़ात)

﴾ 35 ﴿ عَنْ رُوَيْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَنْ يَلِجَ النَّارَ اَحَدٌ صَلّٰى قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا، يَعْنِي الْفَجْرَ وَالْعَصْرَ.

رواه مسلم، باب فضل صلاتي الصبح والعصر ...، رقم: ١٤٣٦

35. हज़रत रुवैबा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सूरज निकलने से पहले और सूरज ग़ुरूब होने से पहले नमाज़ पढ़ता है, यानी फ़ज्र और अस्र, वह जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा। (मुस्लिम)

﴾ 36 ﴿ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ فِيْ دُبُرِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَهُوَ ثَانٍ رِجْلَيْهِ قَبْلَ اَنْ يَتَكَلَّمَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، عَشْرَ مَرَّاتٍ كُتِبَتْ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَمُحِيَ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ وَرُفِعَ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ وَكَانَ يَوْمَهُ ذٰلِكَ فِيْ حِرْزٍ مِنْ كُلِّ مَكْرُوْهٍ وَ حُرِسَ مِنَ الشَّيْطَانِ وَلَمْ يَنْبَغِ لِذَنْبٍ اَنْ يُدْرِكَهُ فِيْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ اِلَّا الشِّرْكَ بِاللهِ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب في ثواب كلمة التوحيد ...، رقم: ٣٤٧٤ ورواه النسائي في عمل اليوم والليلة، رقم: ١١٧ وذكر بِيَدِهِ الْخَيْرُ مكان يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ، وزادفيه: وَكَانَ لَهُ بِكُلِّ وَاحِدَةٍ قَالَهَا عِتْقُ رَقَبَةٍ، رقم: ١٢٧ ورواه النسائي ايضا في عمل اليوم والليلة، من حديث معاذ، وزادفيه: وَمَنْ قَالَهُنَّ حِيْنَ يَنْصَرِفُ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ اُعْطِيَ مِثْلَ ذٰلِكَ فِيْ لَيْلَتِهِ، رقم: ١٢٦

36. हज़रत अबूज़र ﷜ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो ख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद (जिस तरह नमाज़ में बैठते हैं उसी तरह) दोज़ानू बैठे ुए बात करने से पहले दस मर्तबा (ये कलिमे) पढ़ता है और एक रिवायत में है कि अस्र की नमाज़ के बाद भी दस मर्तबा पढ़ लेता है, तो उसके लिए दस नेकियां लिख ी जाती हैं, दस गुनाह मिटा दिए जाते हैं, दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाते हैं, पूरे दिन हर नागवार और नापसन्दीदा चीज़ से महफ़ूज़ रहता है। ये कलिमे शैतान से बचाने े लिए पहरेदारी का काम देते हैं और उस दिन शिर्क के अलावा कोई गुनाह उसे लाक न कर सकेगा। एक रिवायत में यह भी है कि हर कलिमा पढ़ने पर उसको एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और अस्र की नमाज़ के बाद पढ़ने पर ो रात भर वही सवाब मिलता है, जो फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ने पर दिन भर मिलता है। (वह कलिमे ये हैं) 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू हुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० क रिवायत में 'युह्यी व युमीतु' की जगह 'बियदिहिल ख़ैर' है। तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में अकेले हैं, ोई उनका शरीक नहीं, सारा मुल्क दुनिया व आख़िरत उन्हीं का है, उन्हीं के हाथ में तमामतर भलाई है और जितनी ख़ूबीयां हैं वह उन्हीं के लिए हैं, वही ज़िन्दा करते , वही मारते हैं, और वह हर चीज़ पर क़ादिर हैं। (तिर्मिज़ी, अ़मलुल यौम वल्लैल:)

﴾ 37 ﴿ عَنْ جُنْدُبِ الْقَسْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى صَلَاةَ الصُّبْحِ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللهِ، فَلَا يَطْلُبَنَّكُمُ اللهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ فَإِنَّهُ مَنْ يَطْلُبْهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ يُدْرِكْهُ، ثُمَّ يَكُبَّهُ عَلَى وَجْهِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ. رواه مسلم، باب فضل صلاة العشاء ...، رقم: ١٤٩٤

7. हज़रत जुन्दुब क़सरी ﷜ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़ता है, वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आ जाता है लेहाज़ा उसे न सताओ) और इस बात का ख़्याल रखो कि अल्लाह तआ़ला अपनी हिफ़ाज़त में लिए हुए शख़्स को सताने की वजह से तुमसे किसी चीज़ का मुत़ालबा फ़रमा लें, क्योंकि जिस से अल्लाह तआ़ला अपनी हिफ़ाज़त में लिए हुए शख़्स के ..रे में मुतालबा फ़रमाएंगे, उसकी पकड़ फ़रमाएंगे, फिर उसे औंधे मुंह जहन्नम की आग में डाल देंगे। (मुस्लिम)

﴾ 38 ﴿ عَنْ مُسْلِمِ بْنِ الْحَارِثِ التَّمِيْمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ أَسَرَّ

إِلَيْهِ فَقَالَ: إِذَا انْصَرَفْتَ مِنْ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ فَقُلْ: اَللّٰهُمَّ أَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ سَبْعَ مَرَّاتٍ فَإِنَّكَ إِذَا قُلْتَ ذٰلِكَ ثُمَّ مُتَّ فِيْ لَيْلَتِكَ كُتِبَ لَكَ جِوَارٌ مِنْهَا، وَإِذَا صَلَّيْتَ الصُّبْحَ فَقُلْ كَذٰلِكَ، فَإِنَّكَ إِنْ مُتَّ فِيْ يَوْمِكَ كُتِبَ لَكَ جِوَارٌ مِنْهَا.

رواه ابو داؤد، باب ما يقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٩

38. हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे चुपके से इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो सात मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करो 'अल्लाहुम-म अजिरनी मिनन्नारo' *"या अल्लाह मुझको दोज़ख़ से महफ़ूज़ रखिए"* जब तुम उसको पढ़ लोगे और फिर उसी रात तुम्हारी मौत आ जाए, तो दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहोगे और अगर इस दुआ को सात मर्तबा फ़ज्र की नमाज़ के बाद (भी) पढ़ लो और उसी दिन तुम्हारी मौत आ जाए तो दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहोगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने चुपके से इसलिए फ़रमाया ताकि सुनने वाले के दिल में बात की अहमियत रहे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 39 ﴾ عَنْ أُمِّ فَرْوَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: الصَّلَاةُ فِيْ أَوَّلِ وَقْتِهَا. رواه ابو داؤد، باب المحافظة على الصلوات، رقم: ٤٢٦

39. हज़रत उम्मे फ़रवा ﷺ फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि सबसे अफ़ज़ल अमल क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ना। (अबूदाऊद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا أَهْلَ الْقُرْآنِ! أَوْتِرُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ. رواه ابو داؤد، باب استحباب الوتر، رقم: ١٤١٦

40. हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कुरआन वालो! यानी मुसलमानो! वित्र पढ़ लिया करो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला वित्र हैं, वित्र पढ़ने को पसन्द फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : वित्र बेजोड़ अ़दद को कहते हैं। अल्लाह तआ़ला के वित्र होने का मतलब यह है कि उसके जोड़ का कोई नहीं। वित्र पढ़ने को पसन्द फ़रमाना भी इस वजह से है कि इस नमाज़ की रकअ़तों की तादाद ताक़ है।

(मज़ाहिरे हक़/ बहारुल अनवार)

﴿ 41 ﴾ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ حُذَافَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ أَمَدَّكُمْ بِصَلَاةٍ، وَهِيَ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ، وَهِيَ الْوِتْرُ، فَجَعَلَهَا لَكُمْ فِيْمَا بَيْنَ الْعِشَاءِ إِلَى طُلُوْعِ الْفَجْرِ. رواه ابو داؤد، باب استحباب الوتر، رقم: ١٤١٨

41. हज़रत ख़ारजा बिन हुज़ाफ़ा ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला ने एक और नमाज़ तुम्हें अता फ़रमाई है जो तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर है, वह नमाज़ वित्र की नमाज़ है। अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए उसका वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से फ़ज्र के तुलू होने तक मुक़र्रर फ़रमाया है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अरबों में सुर्ख़ ऊंट बहुत क़ीमती माल समझा जाता था।

﴿ 42 ﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَوْصَانِيْ خَلِيْلِيْ ﷺ بِثَلَاثٍ: بِصَوْمِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَالْوِتْرِ قَبْلَ النَّوْمِ، وَرَكْعَتَيِ الْفَجْرِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٠٦٠

42. हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे मेरे हबीब ﷺ ने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई : हर महीने तीन दिन के रोज़े रखना, सोने से पहले वित्र पढ़ना और फ़ज्र की दो रक्अत सुन्नत अदा करना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : जिन्हें रात को उठने की आदत है उनके लिए उठ कर वित्र पढ़ना अफ़ज़ल है और अगर उठने की आदत नहीं तो सोने से पहले ही पढ़ लेने चाहिएं।

﴿ 43 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا إِيْمَانَ لِمَنْ لَا أَمَانَةَ لَهُ، وَلَا صَلَاةَ لِمَنْ لَا طُهُوْرَ لَهُ، وَلَا دِيْنَ لِمَنْ لَا صَلَاةَ لَهُ، إِنَّمَا مَوْضِعُ الصَّلَاةِ مِنَ الدِّيْنِ كَمَوْضِعِ الرَّأْسِ مِنَ الْجَسَدِ.

رواه الطبراني في الاوسط والصغير وقال: تفرد به الحسين بن الحكم الحبري، الترغيب ١/٢٤٦

43. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अमानतदार नहीं, वह कामिल ईमान वाला नहीं। जिसका वुज़ू नहीं, उसकी नमाज़ नहीं और जो नमाज़ न पढ़े उसका कोई दीन नहीं। नमाज़ का दर्जा दीन में ऐसा ही है, जैसे सर का दर्जा बदन में है, यानी जैसे सर के बग़ैर इंसान ज़िन्दा

नहीं रह सकता, उसी तरह नमाज़ के बग़ैर दीन बाक़ी नहीं रह सकता। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 44 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَيْنَ الرَّجُلِ وَ بَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ.

رواه مسلم، باب بيان اطلاق اسم الكفر ...، رقم: ٢٤٧

44. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ का यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : नमाज़ का छोड़ना मुसलमान को कुफ़्र व शिर्क तक पहुंचाने वाला है। (मुस्लिम)

फ़ायदा: उलमा ने इस हदीस के कई मतलब ब्यान फ़रमाए हैं जिसमें से एक यह है कि बेनमाज़ी गुनाहों के करने पर बेबाक हो जाता है, जिसकी वजह से उसके कुफ़्र में दाख़िल होने का ख़तरा है। दूसरा यह है कि बेनमाज़ी के बुरे ख़ात्मे का अंदेशा है। (मिरक़ात)

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ تَرَكَ الصَّلَاةَ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ.

رواه البزار والطبراني في الكبير، وفيه: سهل بن محمود ذكره ابن ابي حاتم وقال: روى عنه احمد بن ابراهيم الدورقي وسعدان بن يزيد، قلت: وروى عنه محمد بن عبد الله المخرمي ولم يتكلم فيه احد، وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٢٦

45. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने नमाज़ छोड़ दी, वह अल्लाह तआ़ला से ऐसी हालत में मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उससे सख़्त नाराज़ होंगे। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 46 ﴾ عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ فَاتَتْهُ الصَّلَاةُ، فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤/٣٣٠

46. हज़रत नौफ़ल बिन मुआ़विया ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गई वह ऐसा है कि गोया उसके घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो। (इब्ने हब्बान)

﴿ 47 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مُرُوْا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِيْنَ، وَاضْرِبُوْهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرٍ

سِنِيْنَ، وَفَرِّقُوْا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ. رواه ابوداؤد، باب متى يؤمر الغلام بالصلاة، رقم: ٤٩٥

47. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन शुऐब ﷺ अपने बाप दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने बच्चों को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म किया करो। दस साल की उम्र में नमाज़ न पढ़ने की वजह से उन्हें मारो और इस उम्र में पहुंच कर (बहन-भाई को) अलाहिदा-अलाहिदा बिस्तरों पर सुलाओ। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मार ऐसी हो कि जिससे कोई जिस्मानी नुक़सान न पहुंचे नीज़ चेहरे पर न मारें।

بسم الله الرحمن الرحيم

बाजमाअ़त नमाज़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَىٰ: ﴿وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ﴾

[البقرة: ٤٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो, यानी जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ो।

(बक़र: 43)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 48 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهُ مَدَى صَوْتِهِ، وَيَشْهَدُ لَهُ كُلُّ رَطْبٍ وَيَابِسٍ، وَشَاهِدُ الصَّلَاةِ يُكْتَبُ لَهُ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ صَلَاةً، وَيُكَفَّرُ عَنْهُ مَا بَيْنَهُمَا.

رواه ابو داؤد، باب رفع الصوت بالاذان، رقم: ٥١٥

48. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुअज़्ज़िन के गुनाह वहां तक माफ़ कर दिए जाते हैं, जहां तक उसकी आवाज़ पहुंचती है (यानी अगर इतनी मुसाफ़त तक की जगह उसके गुनाहों से भर जाए, तो भी वे सब गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं)। जानदार व बेजान, जो मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनते हैं, वे सब क़ियामत के दिन उसके लिए गवाही देंगे। मुअज़्ज़िन की

आवाज़ पर नमाज़ में आने वाले के लिए पचीस नमाज़ों का सवाब लिख दिया जाता है और एक नमाज़ से पिछली नमाज़ तक के दर्मियानी वक़्तों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक पचीस नमाज़ों का सवाब मुअज़्ज़िन के लिए है और उसकी एक अज़ान से पिछली अज़ान तक के दर्मियानी गुनाहों की माफ़ी हो जाती है। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 49 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُغْفَرُ لِلْمُؤَذِّنِ مُنْتَهٰى اَذَانِهٖ، وَيَسْتَغْفِرُ لَهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَّيَابِسٍ سَمِعَ صَوْتَهٗ. رواه احمد والطبراني في الكبير والبزار الا انه قال: وَيُجِيْبُهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَّيَابِسٍ ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٨٦

49. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहां-जहां तक पहुंचती है, वहां तक उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है, हर जानदार और बेजान, जो उसकी अज़ान को सुनते हैं उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं। एक रिवायत में है कि हर जानदार और बेजान उसकी अज़ान का जवाब देते हैं। (मुस्नद अहमद, तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 50 ﴾ عَنْ اَبِيْ صَعْصَعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ اَبُوْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: اِذَا كُنْتَ فِي الْبَوَادِيْ فَارْفَعْ صَوْتَكَ بِالنِّدَاءِ فَاِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَسْمَعُ صَوْتَهٗ شَجَرٌ، وَلَا مَدَرٌ، وَلَا حَجَرٌ، وَلَا جِنٌّ، وَلَا اِنْسٌ اِلَّا شَهِدَ لَهٗ. رواه ابن خزيمة ١/٢٠٣

50. हज़रत अबू सअ्सअः ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सईद ﷺ ने (मुझसे) फ़रमाया : जब तुम जंगलों में हुआ करो तो बुलन्द आवाज़ से अज़ान दिया करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुअज़्ज़िन की आवाज़ को जो दरख़्त, मिट्टी के ढेले, पत्थर, जिन्न और इंसान सुनते हैं, वे सब क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन के लिए गवाही देंगे। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿ 51 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ، وَالْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهٗ بِمَدِّ صَوْتِهٖ، وَيُصَدِّقُهٗ مَنْ سَمِعَهٗ مِنْ رَطْبٍ وَّيَابِسٍ، وَلَهٗ مِثْلُ اَجْرِ مَنْ صَلّٰى مَعَهٗ. رواه النسائي، باب رفع الصوت بالاذان، رقم: ٦٤٧

51. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआला अगली सफ़ वालों पर रहमत भेजते हैं, फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं और मुअज़्ज़िन के उतने ही ज़्यादा गुनाह माफ़ किए जाते हैं, जितनी हद तक वह अपनी आवाज़ बुलन्द करे, जो जानदार व बेजान उसकी अज़ान को सुनते हैं उसकी तस्दीक़ करते हैं और मुअज़्ज़िन को उन तमाम नमाज़ियों के बराबर अज्र मिलता है, जिन्होंने उसके साथ नमाज़ पढ़ी।

(नसाई)

फ़ायदा : बाज़ उलमा ने हदीस शरीफ़ के दूसरे जुम्ले का यह मतलब भी ब्यान फ़रमाया है कि मुअज़्ज़िन के वे गुनाह जो अज़ान देने की जगह से अज़ान की आवाज़ पहुंचने की जगह तक के दर्मियानी इलाक़े मे हुए हों, सब माफ़ कर दिए जाते हैं। एक मतलब यह भी ब्यान किया गया है कि मुअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुंचती है वहां तक के रहने वाले लोगों के गुनाहों को मुअज़्ज़िन की सिफ़ारिश की वजह से माफ़ कर दिया जाएगा। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 52 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلْمُؤَذِّنُوْنَ اَطْوَلُ النَّاسِ اَعْنَاقًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ...... رقم: ٨٥٢

52. हज़रत मुआविया ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुअज़्ज़िन क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा लम्बी गर्दन वाले होंगे।

(मुस्लिम)

फ़ायदा : उलमा ने इस हदीस के कई मानी ब्यान फ़रमाए हैं। एक यह कि चूंकि मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनकर लोग मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाते हैं लिहाज़ा नमाज़ी ताबेअ् और मुअज़्ज़िन अस्ल हुआ और अस्ल चूंकि सरदार होता है, इसलिए उसकी गर्दन लम्बी होगी, ताकि उसका सर नुमायां नज़र आए। दूसरा यह कि चूंकि मुअज़्ज़िन को बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा, इसलिए वह अपने ज़्यादा सवाब के शौक़ में गर्दन उठा-उठा कर देखेगा, इसलिए उसकी गर्दन लम्बी नज़र आएगी। तीसरा यह कि मुअज़्ज़िन की गर्दन बुलन्द होगी, इसलिए कि वह अपने आमाल पर नादिम न होगा, और जो नादिम होता है, उसकी गर्दन झुकी हुई होती है। चौथा यह कि गर्दन लम्बी होने से मुराद यह है कि मुअज़्ज़िन हश्र के मैदान में सबसे मुम्ताज़ नज़र आएगा। बाज़ उलमा के नज़दीक

शरीफ़ का तर्जुमा यह है कि क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन जन्नत की तरफ़ तेज़ी से जाएंगे। (नववी)

﴿ 53 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَذَّنَ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً، وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَكُتِبَ لَهُ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ بِتَاْذِيْنِهِ سِتُّوْنَ حَسَنَةً وَبِاِقَامَتِهٖ ثَلَاثُوْنَ حَسَنَةً.

رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط البخاري ووافقه الذهبي ۱/۲۰۵

53. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने बारह साल अज़ान दी, उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। उसके लिए हर अज़ान के बदले में साठ नेकियां लिखी जाती हैं और हर इक़ामत के बदले में तीस नेकियां लिखी जाती हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 54 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثَةٌ لَا يَهُوْلُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ، وَلَا يَنَالُهُمُ الْحِسَابُ، هُمْ عَلٰى كَثِيْبٍ مِنْ مِسْكٍ حَتّٰى يُفْرَغَ مِنْ حِسَابِ الْخَلَائِقِ: رَجُلٌ قَرَاَ الْقُرْآنَ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ، وَاَمَّ بِهٖ قَوْمًا وَهُمْ رَاضُوْنَ بِهٖ، وَدَاعٍ يَدْعُوْ اِلَى الصَّلَوَاتِ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ، وَعَبْدٌ اَحْسَنَ فِيْمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ رَبِّهٖ وَفِيْمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ مَوَالِيْهِ.

رواه الترمذي باختصار وقد رواه الطبراني في الاوسط والصغير

وفيه: عبدالصمد بن عبد العزيز المقري ذكره ابن حبان في الثقات، مجمع الزوائد ۲/۸۵

54. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं कि जिनको क़ियामत की सख़्त घबराहट का ख़ौफ़ नहीं होगा, न उनको हिसाब-किताब देना पड़ेगा। जब तक मख़्लूक़ अपने हिसाब व किताब से फ़ारिग हो, वे मुश्क के टीलों पर तफ़रीह करेंगे। एक वह शख़्स जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के लिए कुरआन शरीफ़ पढ़ा और इस तरह इमामत की कि मुक़्तदी उससे राज़ी रहे। दूसरा वह शख़्स, जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता है। तीसरा वह शख़्स जो अपने रब से भी अच्छा मामला रखे और अपने मातहतों से भी अच्छा मामला रखे। (तिर्मिज़ी, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثَةٌ عَلٰى كُثْبَانِ الْمِسْكِ ـ اُرَاهُ قَالَ ـ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَغْبِطُهُمُ الْاَوَّلُوْنَ وَالْآخِرُوْنَ: رَجُلٌ يُنَادِيْ بِالصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، وَرَجُلٌ يَؤُمُّ قَوْمًا وَهُمْ بِهٖ رَاضُوْنَ، وَعَبْدٌ اَدّٰى حَقَّ اللهِ وَحَقَّ مَوَالِيْهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب احاديث في صفة الثلاثة الذين يحبهم الله، رقم: ۲٥٦٦

55. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन क़िस्म के लोग क़ियामत के दिन मुश्क के टीलों पर होंगे। उन पर अगले पिछले सब लोग रश्क करेंगे। एक वह शख़्स जो दिन रात की पांच नमाज़ों के लिए अज़ान दिया करता था। दूसरा वह शख़्स, जिसने लोगों की इमामत की और वे उससे राज़ी रहे। तीसरा वह गुलाम, जो अल्लाह तआ़ला का भी हक़ अदा करे और अपने आक़ाओं का भी हक़ अदा करे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْإِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ، اَللّٰهُمَّ! اَرْشِدِ الْاَئِمَّةَ وَاغْفِرْ لِلْمُؤَذِّنِيْنَ.

رواه ابو داؤد باب ما يجب على المؤذن ......، رقم: ٥١٧

56. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इमाम ज़िम्मेदार है और मुअज़्ज़िन पर भरोसा किया जाता है। ऐ अल्लाह! इमामों की रहनुमाई फ़रमा और मुअज़्ज़िनों की मग्फ़िरत फ़रमा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इमाम के ज़िम्मेदार होने का मतलब यह है कि इमाम पर अपनी नमाज़ के अलावा मुक़्तदियों की नमाज़ों की भी ज़िम्मेदारी है, इसलिए जितना हो सके इमाम को ज़ाहिरी और बातिनी तौर से अच्छी नमाज़ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इसी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने हदीस में उनके लिए दुआ़ भी फ़रमाई है। मुअज़्ज़िन पर भरोसा किए जाने का मतलब यह है कि लोगों ने नमाज़ रोज़े के औक़ात के बारे में उस पर एतमाद किया है, लिहाज़ा मुअज़्ज़िन को चाहिए कि वह सही वक़्त पर अज़ान दे और चूंकि मुअज़्ज़िन से बाज़ मर्तबा अज़ान के औक़ात में ग़लती हो जाती है, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने मग्फ़िरत की दुआ़ की है। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 57 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصَّلَاةِ، ذَهَبَ حَتّٰى يَكُوْنَ مَكَانَ الرَّوْحَاءِ قَالَ سُلَيْمَانُ رَحِمَهُ اللهُ: فَسَاَلْتُهُ عَنِ الرَّوْحَاءِ؟ فَقَالَ: هِىَ مِنَ الْمَدِيْنَةِ سِتَّةٌ وَّثَلَاثُوْنَ مِيْلًا.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ......، رقم: ٨٥٤

57. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : शैतान जब नमाज़ के लिए अज़ान सुनता है, तो मक़ामे रौहा तक दूर चला

जाता है। हज़रत सुलैमान रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं मैंने हज़रत जाबिर ﷺ से मक़ामे रौहा के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया कि मदीना से छत्तीस मील दूर है। (मुस्लिम)

﴿ 58 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلَاةِ اَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتّٰى لَا يَسْمَعَ التَّاْذِيْنَ، فَاِذَا قُضِیَ التَّاْذِيْنُ اَقْبَلَ، حَتّٰى اِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ اَدْبَرَ، حَتّٰى اِذَا قُضِیَ التَّثْوِيْبُ اَقْبَلَ، حَتّٰى يَخْطُرَ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهٖ يَقُوْلُ لَهُ: اُذْكُرْ كَذَا، وَاذْكُرْ كَذَا، لِمَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ مِنْ قَبْلُ، حَتّٰى يَظَلَّ الرَّجُلُ مَا يَدْرِیْ كَمْ صَلّٰى.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ......، رقم: ٨٥٩

58. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब नमाज के लिए अज़ान दी जाती है तो शैतान ऊंची आवाज़ में हवा ख़ारिज करता हुआ पीठ फेर कर भाग जाता है, ताकि अज़ान न सुने। फिर जब अज़ान ख़त्म हो जाती है तो वापस आ जाता है। जब इक़ामत कही जाती है तो फिर भाग जाता है और इक़ामत पूरी होने के बाद फिर वापस आ जाता है, ताकि नमाज़ी के दिल में वस्वसा डाले। चुनांचे नमाज़ी से कहता है यह बात याद कर और यह बात याद कर। ऐसी-ऐसी बातें याद दिलाता है जो बातें नमाज़ी को नमाज़ से पहले याद न थीं, यहां तक कि नमाज़ी को यह भी ख़्याल नहीं रहता कि कितनी रकअतें हुईं। (मुस्लिम)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِی النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الْاَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوْا اِلَّا اَنْ يَسْتَهِمُوْا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوْا.

(وهو جزء من الحديث) رواه البخاري، باب الاستهام في الاذان، رقم: ٦١٥

59. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को अज़ान और पहली सफ़ का सवाब मालूम हो जाता और उन्हें अज़ान और पहली सफ़ क़ुरआअंदाज़ी के बग़ैर हासिल न होती, तो वह क़ुरआअंदाज़ी करते। (बुख़ारी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا كَانَ الرَّجُلُ بِاَرْضٍ قِیٍّ فَحَانَتِ الصَّلَاةُ فَلْيَتَوَضَّاْ، فَاِنْ لَّمْ يَجِدْ مَاءً فَلْيَتَيَمَّمْ، فَاِنْ اَقَامَ صَلّٰى مَعَهُ مَلَكَاهُ، وَاِنْ اَذَّنَ وَاَقَامَ صَلّٰى خَلْفَهُ مِنْ جُنُوْدِ اللهِ مَا لَا يُرٰى طَرَفَاهُ رواه عبدالرزاق في مصنفه ١ / ٥١٠

60. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स जंगल में हो और नमाज़ का वक़्त हो जाए तो वुज़ू करे, पानी न मिले तो तयम्मुम करे। फिर जब वह इक़ामत कह कर नमाज़ पढ़ता है, तो उसके दोनों (लिखने वाले) फ़रिश्ते उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं और अगर अज़ान देता है, फिर इक़ामत कहकर नमाज़ पढ़ता है तो उसके पीछे अल्लाह तआ़ला के लशकरों की यानी फ़रिश्तों की इतनी बड़ी तादाद नमाज़ पढ़ती है कि जिनके दोनों किनारे देखे नहीं जा सकते। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक)

﴿ 61 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَعْجَبُ رَبُّكَ عَزَّوَجَلَّ مِنْ رَاعِي غَنَمٍ فِيْ رَأْسِ شَظِيَّةٍ بِجَبَلٍ يُؤَذِّنُ لِلصَّلَاةِ وَيُصَلِّيْ، فَيَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اُنْظُرُوْا اِلٰى عَبْدِيْ هٰذَا يُؤَذِّنُ وَيُقِيْمُ لِلصَّلَاةِ يَخَافُ مِنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ وَاَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ.

رواه ابو داؤد، باب الاذان في السفر، رقم: ١٢٠٣

61. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम्हारे रब उस बकरी चराने वाले से बेहद ख़ुश होते हैं जो किसी पहाड़ की चोटी पर अज़ान कहता है और नमाज़ पढ़ता है। अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं : मेरे इस बन्दे को देखो, अज़ान कहकर नमाज़ पढ़ रहा है, सब मेरे डर की वजह से कर रहा है, मैंने अपने बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी और जन्नत का दाख़िला तय कर दिया। (अबूदाऊद)

﴿ 62 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثِنْتَانِ لَا تُرَدَّانِ اَوْقَلَّمَا تُرَدَّانِ: اَلدُّعَاءُ عِنْدَ النِّدَاءِ، وَعِنْدَ الْبَاْسِ حِيْنَ يُلْحِمُ بَعْضُهُ بَعْضًا.

رواه ابو داؤد، باب الدعاء عند اللقاء، رقم: ٢٥٤٠

62. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो वक़्तों की दुआएं रद्द नहीं की जातीं। एक अज़ान के वक़्त, दूसरे उस वक़्त जब घमासान की लड़ाई शुरू हो जाए। (अबूदाऊद)

﴿ 63 ﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ: وَاَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا، غُفِرَلَهُ ذَنْبُهُ.

رواه مسلم، باب استحباب القول مثل قول المؤذن لمن سمعه ...... رقم: ٨٥١

63. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनने के वक़्त यह कहा : "व अना अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाहिरब्बौं-व बि-मुहम्मदिन रसूलन व बिल इस्लामि दीना०' तो उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। तर्जुमा : मैं भी शहादत देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, और यह शहादत देता हूं कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के बन्दे और रसूल हैं, और मैं अल्लाह तआ़ला को रब मानने पर, मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर और इस्लाम को दीन मानने पर राज़ी हूं। (मुस्लिम)

﴿ 64 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَامَ بِلَالٌ يُنَادِيْ فَلَمَّا سَكَتَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ مِثْلَ هٰذَا يَقِيْنًا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه هكذا ووافقه الذهبي ١/٢٠٤

64. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। हज़रत बिलाल ﷺ अज़ान देने खड़े हुए। जब अज़ान दे चुके तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यक़ीन के साथ उन-जैसे कलिमात कहता है जो मुअज़्ज़िन ने अज़ान में कहे, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : इस रिवायत से मालूम होता है कि अज़ान का जवाब देने वाला वही अल्फ़ाज़ दोहराए जो मुअज़्ज़िन ने कहे। अलबत्ता हज़रत उमर ﷺ की रिवायत से मालूम होता है कि *'हैय्य-य अलस्सलाह'* और *'हैय्य-य अ़लल फ़लाह'* के जवाब में 'ला हौ-ल वला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह' कहा जाए। (मुस्लिम)

﴿ 65 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ اِنَّ الْمُؤَذِّنِيْنَ يَفْضُلُوْنَنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ كَمَا يَقُوْلُوْنَ فَاِذَا انْتَهَيْتَ فَسَلْ تُعْطَهُ.

رواه ابوداؤد، باب ما يقول اذا سمع المؤذن، رقم: ٥٢٤

65. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! अज़ान कहने वाले हम से अज्र व सवाब में बढ़े हुए हैं (क्या कोई ऐसा अ़मल है कि हमें भी अज़ान देने वाली फ़ज़ीलत मिल जाए?) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वही कलिमे कहा करो, जो मुअज़्ज़िन कहते हैं, फिर जब तुम अज़ान का

जवाब दे चुको, तो दुआ मांगो (जो मांगोगे) वह दिया जाएगा। (अबूदाऊद)

﴿ 66 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ، فَقُوْلُوا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ، ثُمَّ صَلُّوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا، ثُمَّ سَلُوا اللهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ، فَإِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لَا تَنْبَغِيْ إِلَّا لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللهِ، وَاَرْجُوْ اَنْ اَكُوْنَ اَنَا هُوَ، فَمَنْ سَاَلَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ.

رواه مسلم، باب استحباب القول مثل قول المؤذن لمن سمعه ......، رقم: ٨٤٩

66. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो, तो उसी तरह कहो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है, फिर मुझ पर दरूद भेजो। जो शख़्स मुझ पर एक बार दरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला उसपर उसके बदले दस रहमतें भेजते हैं, फिर मेरे लिए अल्लाह तआ़ला से वसीले की दुआ़ करो, क्योंकि वसीला जन्नत में एक (ख़ास) मक़ाम है जो अल्लाह तआ़ला के बन्दे में से एक बन्दे के लिए मख़्सूस है और मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं ही हूं। जो शख़्स मेरे लिए वसीला की दुआ़ मांगेगा वह मेरी शफ़ाअ़त का हक़दार होगा। (मुस्लिम)

﴿ 67 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ: اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهُ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه البخاري، باب الدعاء عند النداء، رقم: ٦١٤ ورواه البيهقي في سننه الكبرى، وزاد في آخره: إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ١/ ٤١٠

67. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अज़ान सुनने के वक़्त अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करे : 'अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद-दअ़्व तित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म-द-निल वसी-ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वब-अ़स-हु मक़ामम महमू-द-निल-लज़ी व अ़त्तहू इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द०' तो क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! इस पूरी दावत और (अज़ान के बाद) अदा की जाने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसीला अ़ता फ़रमा दीजिए और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा

ीजिए और उनको उस मक़ामे महमूद पर पहुंचा दीजिए, जिसका आपने उनसे वादा फ़रमाया है, बेशक आप वादाख़िलाफ़ी नहीं करते। (बुख़ारी, बैहक़ी)

﴿ 68 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُنَادِي الْمُنَادِي: اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلَاةِ النَّافِعَةِ، صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَارْضَ عَنْهُ رِضًا لَا تَسْخَطُ بَعْدَهُ، اسْتَجَابَ اللهُ لَهُ دَعْوَتَهُ. رواه احمد ٣/٣٣٧

68. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो ़ख़्स अज़ान सुनकर यह दुआ मांगे : **'अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद-दावतित्ताम्मति वस्सलातिल नाफ़िअ़ति सल्लि अला मुहम्मद वर-ज़ अन्हु रिज़न ला तस्ख़तु ादहू'** अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएंगे। तर्जुमा : ऐ अल्लाह! ऐ उस ुकम्मल दावत (अज़ान) देने वाली नमाज़ के रब! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, और आप उनसे ऐसा राज़ी हो जाएं कि उसके बाद कभी नाराज़ ा हों। (मुस्नद अहमद)

﴿ 69 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالْإِقَامَةِ قَالُوْا: فَمَاذَا نَقُوْلُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: سَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب في العفو والعافية، رقم: ٣٥٩٤

.9. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अज़ान और इक़ामत के दर्मियानी वक़्त में दुआ रद्द नहीं होती, यानी क़ुबूल होती है। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हम क्या दुआ मांगें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से दुनिया व आख़िरत की ़ाफ़ियत मांगा करो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 70 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ فُتِحَتْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَاسْتُجِيْبَ الدُّعَاءُ. رواه احمد ٣/٣٤٢

70. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब ़माज़ के लिए इक़ामत कही जाती है, तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दुआ क़ुबूल की जाती है। (मुस्नद अहम

﴿ 71 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ وُضُوْءَهُ، ثُمَّ خَرَجَ عَامِدًا

اِلَى الصَّلَاةِ فَإِنَّهُ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَ يَعْمِدُ اِلَى الصَّلَاةِ، وَإِنَّهُ يُكْتَبُ لَهُ بِإِحْدَى خُطْوَتَيْهِ حَسَنَةٌ، وَيُمْحَى عَنْهُ بِالْأُخْرَى سَيِّئَةٌ، فَإِذَا سَمِعَ اَحَدُكُمُ الْإِقَامَةَ فَلَا يَسْعَ، فَإِنَّ اَعْظَمَكُمْ اَجْرًا اَبْعَدُكُمْ دَارًا قَالُوا: لِمَ يَا اَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: مِنْ اَجْلِ كَثْرَةِ الْخُطَا.

رواه الامام مالك في الموطا، جامع الوضوء ص ٢٢

71. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद की तरफ़ जाता है, तो जब तक वह इस इरादे पर क़ायम रहता है उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। उसके एक क़दम पर एक नेकी लिखी जाती है और दूसरे क़दम पर उसकी एक बुराई मिटा दी जाती है। जब तुम में कोई इक़ामत सुने, तो दौड़ कर न चले और तुममें से जिसका घर मस्जिद से जितना ज़्यादा दूर होगा, उतना ही उसका सवाब ज़्यादा होगा। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ के शागिर्दों ने यह सुनकर पूछा कि अबू हुरैरह! घर दूर होने की वजह से सवाब ज़्यादा क्यों होगा? फ़रमाया : इसलिए कि क़दम ज़्यादा होंगे। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿ 72 ﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ اَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: إِذَا تَوَضَّأَ اَحَدُكُمْ فِيْ بَيْتِهِ، ثُمَّ اَتَى الْمَسْجِدَ كَانَ فِيْ صَلَاةٍ حَتَّى يَرْجِعَ فَلَا يَقُلْ هٰكَذَا، وَشَبَّكَ بَيْنَ اَصَابِعِهِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٢٠٦

72. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स अपने घर से वुज़ू करके मस्जिद आता है तो घर वापस आने तक उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथों की उंगलियां एक दूसरे में दाख़िल कीं और इर्शाद फ़रमाया : उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जैसे नमाज़ की हालत में दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में डालना दुरुस्त नहीं और बिला वजह ऐसा करना पसन्दीदा अ़मल नहीं इसी तरह जो घर से वुज़ू करके नमाज़ के इरादे से मस्जिद आए उसके लिए यह भी मुनासिब नहीं क्योंकि नमाज़ का सवाब हासिल करने की वजह से यह शख़्स भी गोया नमाज़ के हुक्म में होता है, जैसा के दीगर रिवायतों में उसकी वज़ाहत है।

﴿ 73 ﴾ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ:

سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ، لَمْ يَرْفَعْ قَدَمَهُ الْيُمْنٰى إِلَّا كَتَبَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ حَسَنَةً، وَلَمْ يَضَعْ قَدَمَهُ الْيُسْرٰى إِلَّا حَطَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ عَنْهُ سَيِّئَةً، فَلْيُقَرِّبْ أَحَدُكُمْ أَوْلِيُبَعِّدْ، فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ فَصَلّٰى فِيْ جَمَاعَةٍ غُفِرَ لَهُ فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ وَقَدْ صَلَّوْا بَعْضًا وَبَقِيَ بَعْضٌ صَلّٰى مَا أَدْرَكَ وَأَتَمَّ مَا بَقِيَ، كَانَ كَذٰلِكَ، فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ وَقَدْ صَلَّوْا فَأَتَمَّ الصَّلَاةَ، كَانَ كَذٰلِكَ.

رواه ابوداؤد، باب ماجاء في الهدى في المشي الى الصلاة، رقم: ٥٦٣

73. हज़रत सईद बिन मुसैय्यब रहमतुल्लाह अलैह एक अंसारी सहाबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया : मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुममें से कोई शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके नमाज़ के लिए निकलता है तो हर दाएं क़दम के उठाने पर अल्लाह तआला उसके लिए एक नेकी लिख देते हैं और हर बाएं क़दम के रखने पर उसका एक गुनाह माफ़ कर देते हैं। (अब उसे इख़्तियार है) कि छोटे-छोटे क़दम रखे या लम्बे-लम्बे क़दम रखे। अगर यह शख़्स मस्जिद आकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ लेता है, तो उसकी मग्फ़िरत कर दी जाती है। अगर मस्जिद आकर देखता है कि जमाअत हो रही है और लोग नमाज़ का कुछ हिस्सा पढ़ चुके हैं और कुछ बाक़ी हैं तो उसे जितनी नमाज़ मिल जाती है उसे (जमाअत के साथ) पढ़ लेता है और बाक़ी नमाज़ ख़ुद मुकम्मल कर लेता है, तो उस पर भी मग्फ़िरत कर दी जाती है और अगर यह शख़्स मस्जिद आकर देखता है कि लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं और यह अपनी नमाज़ पढ़ लेता है, तो उस पर भी मग्फ़िरत कर दी जाती है। (अबूदाऊद)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ مُتَطَهِّرًا إِلٰى صَلَاةٍ مَكْتُوْبَةٍ فَأَجْرُهُ كَأَجْرِ الْحَاجِّ الْمُحْرِمِ، وَمَنْ خَرَجَ إِلٰى تَسْبِيْحِ الضُّحٰى لَا يُنْصِبُهُ إِلَّا إِيَّاهُ فَأَجْرُهُ كَأَجْرِ الْمُعْتَمِرِ، وَصَلَاةٌ عَلٰى إِثْرِ صَلَاةٍ لَا لَغْوَ بَيْنَهُمَا كِتَابٌ فِيْ عِلِّيِّيْنَ.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في فضل المشي الى الصلوة، رقم: ٥٥٧

74. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर से अच्छी तरह वुज़ू करके फ़र्ज़ नमाज़ के इरादे से निकलता है उसे एहराम बांध कर हज पर जाने वाले की तरह सवाब मिलता है और जो शख़्स सिर्फ़ चाश्त की नमाज़ पढ़ने के लिए मशक़्क़त उठा कर अपनी जगह से निकलता है उसे उमरा करने वाले की तरह सवाब मिलता है। एक नमाज़ के बाद दूसरी

तरह पढ़ना कि दर्मियान में कोई फुज़ूल काम और बेफ़ायदा बात न हो, यह अ़मल ऊंचे दर्जे में लिखा जाता है। (अबूदाऊद)

﴿ 75 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَتَوَضَّأُ اَحَدُكُمْ فَيُحْسِنُ وُضُوْءَهُ وَيُسْبِغُهُ، ثُمَّ يَاْتِى الْمَسْجِدَ لَا يُرِيْدُ اِلَّا الصَّلَاةَ فِيْهِ اِلَّا تَبَشْبَشَ اللهُ اِلَيْهِ كَمَا يَتَبَشْبَشُ اَهْلُ الْغَائِبِ بِطَلْعَتِهِ.

رواه ابن خزيمه فى صحيحه ٢/٣٧٤

75. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है और वुज़ू को कमाल दर्जे तक पहुंचा देता है, फिर सिर्फ़ नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद में आता है तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे किसी दूर गए रिश्तेदार के अचानक आने से उसके घर वाले ख़ुश होते हैं। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿ 76 ﴾ عَنْ سَلْمَانَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّاَ فِىْ بَيْتِهِ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ اَتَى الْمَسْجِدَ، فَهُوَ زَائِرُ اللهِ، وَحَقٌّ عَلَى الْمَزُوْرِ اَنْ يُكْرِمَ الزَّائِرَ.

رواه الطبرانى فى الكبير واحد اسناديه رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/ ١٤٩

76. हज़रत सलमान ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर में अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद आता है, वह अल्लाह तआ़ला का मेहमान है (अल्लाह तआ़ला उसके मेज़बान हैं) और मेज़बान के ज़िम्मे है कि मेहमान का इकराम करे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 77 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَلَتِ الْبِقَاعُ حَوْلَ الْمَسْجِدِ، فَاَرَادَ بَنُوْ سَلِمَةَ اَنْ يَنْتَقِلُوا اِلَى قُرْبِ الْمَسْجِدِ، فَبَلَغَ ذٰلِكَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُمْ: اِنَّهُ بَلَغَنِى اَنَّكُمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَنْتَقِلُوا قُرْبَ الْمَسْجِدِ، قَالُوا: نَعَمْ، يَارَسُوْلَ اللهِ! قَدْ اَرَدْنَا ذٰلِكَ فَقَالَ: يَابَنِىْ سَلِمَةَ! دِيَارَكُمْ! تُكْتَبْ آثَارُكُمْ، دِيَارَكُمْ! تُكْتَبْ آثَارُكُمْ.

رواه مسلم، باب فضل كثرة الخطا الى المساجد، رقم:١٥١٩

77. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नब्वी के इर्द-गिर्द कुछ ज़मीन ख़ाली पड़ी थी। बनू सलिमा (जो मदीना मुनव्वरा में एक क़बीला था उनके मकान मस्जिद से दूर थे, उन्हों) ने इरादा किया कि मस्जिद के क़रीब ही कहीं मुंतक़िल हो जाएं। यह बात नबी करीम ﷺ तक पहुंची तो नबी करीम ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : मुझे यह ख़बर मिली है कि तुम लोग मस्जिद के क़रीब मुंतक़िल

होना चाहते हो। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! बेशक हम यही चाह रहे हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनू सलिमा वहीं रहो! तुम्हारे (मस्जिद तक आने के) सब क़दम लिखे जाते हैं, वहीं रहो! तुम्हारे (मस्जिद तक आने के) सब क़दम लिखे जाते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 78 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مِنْ حِيْنَ يَخْرُجُ اَحَدُكُمْ مِنْ مَنْزِلِهِ اِلٰى مَسْجِدِىْ فَرِجْلٌ تَكْتُبُ لَهُ حَسَنَةً، وَرِجْلٌ تَحُطُّ عَنْهُ سَيِّئَةً حَتّٰى يَرْجِعَ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤/٥٠٣

78. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स अपने घर से मेरी मस्जिद के लिए निकलता है, तो उसके घर वापस होने तक हर क़दम पर एक नेकी लिखी जाती है और हर दूसरे क़दम पर एक बुराई मिटाई जाती है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: كُلُّ سُلَامَى مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلَّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيْهِ الشَّمْسُ. قَالَ: تَعْدِلُ بَيْنَ الْاِثْنَيْنِ صَدَقَةٌ، وَتُعِيْنُ الرَّجُلَ فِىْ دَابَّتِهِ فَتَحْمِلُهُ عَلَيْهَا، اَوْتَرْفَعُ لَهُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ، صَدَقَةٌ، قَالَ: وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ خُطْوَةٍ تَمْشِيْهَا اِلَى الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ، وَتُمِيْطُ الْاَذَى عَنِ الطَّرِيْقِ صَدَقَةٌ.

رواه مسلم، باب بيان ان اسم الصدقة يقع على كل نوع من المعروف ......، رقم: ٢٣٣٥

79. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर इंसान के ज़िम्मे है कि हर दिन जिस में सूरज निकलता है अपने बदन के हर जोड़ की तरफ़ से (उसकी सलामती के शुकराने में) एक सदक़ा अदा करे। तुम्हारा दो आदमियों के दर्मियान इंसाफ़ कर देना सदक़ा है। किसी आदमी को उसकी सवारी पर बिठाने में या उसका सामान उठा कर उस पर रखवाने में उसकी मदद करना सदक़ा है। अच्छी बात कहना सदक़ा है। हर वह क़दम जो नमाज़ के लिए उठाओ सदक़ा है और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ को हटा दो, यह भी सदक़ा है। (मुस्लिम)

﴿ 80 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ: قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ لَيُضِيْءُ لِلَّذِيْنَ يَتَخَلَّلُوْنَ اِلَى الْمَسَاجِدِ فِى الظُّلَمِ بِنُوْرٍ سَاطِعٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبراني في الاوسط و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/١٤٨

80. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो अंधेरों में मस्जिदों की तरफ़ जाते हैं (चारों तरफ़) फैलने वाले नूर से मुनव्वर फ़रमाएंगे। (तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद)

﴿ 81 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْمَشَّاءُوْنَ اِلَی الْمَسَاجِدِ فِی الظُّلَمِ، اُولٰٓئِكَ الْخَوَّاضُوْنَ فِیْ رَحْمَةِ اللّٰهِ.

رواه ابن ماجه وفی اسناده اسماعیل بن رافع تکلم فیه الناس، وقال الترمذی: ضعفه بعض اهل العلم وسمعت محمدا یعنی البخاری یقول هو ثقة مقارب الحدیث الترغیب ۲۱۳/۱

81. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अंधेरों में ज़्यादा से ज़्यादा मस्जिदों में जाने वाले लोग अल्लाह तआ़ला की रहमत में ग़ोता लगाने वाले हैं। (इब्ने माजा, तर्ग़ीब)

﴿ 82 ﴾ عَنْ بُرَیْدَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: بَشِّرِ الْمَشَّائِیْنَ فِی الظُّلَمِ اِلَی الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ یَوْمَ الْقِیَامَةِ.

رواه ابو داؤد، باب ما جاء فی المشی الی الصلوة فی الظلم، رقم: ۵۶۱

82. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग अंधेरों में ज़्यादा-से-ज़्यादा मस्जिद को जाते रहते हैं, उनको क़ियामत के दिन पूरे-पूरे नूर की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (अबूदाऊद)

﴿ 83 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰی شَیْءٍ یُكَفِّرُ الْخَطَایَا، وَیَزِیْدُ فِی الْحَسَنَاتِ؟ قَالُوْا: بَلٰی، یَارَسُوْلَ اللّٰهِ، قَالَ: اِسْبَاغُ الْوُضُوْءِ، اَوِ الطُّهُوْرِ. فِی الْمَكَارِهِ وَكَثْرَةُ الْخُطَا اِلٰی هٰذَا الْمَسْجِدِ وَالصَّلَاةُ بَعْدَ الصَّلَاةِ، وَمَا مِنْ اَحَدٍ یَخْرُجُ مِنْ بَیْتِهٖ مُتَطَهِّرًا حَتّٰی یَاْتِیَ الْمَسْجِدَ فَیُصَلِّیَ مَعَ الْمُسْلِمِیْنَ، اَوْ مَعَ الْاِمَامِ، ثُمَّ یَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ الَّتِیْ بَعْدَهَا، اِلَّا قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ، اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ.

(الحدیث) رواه بن حبان، قال المحقق: اسناده صحیح ۱۲۷/۲

83. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें ऐसी चीज़ न बतलाऊं जिसके ज़रिए अल्लाह तआ़ला गुनाहों को माफ़ फ़रमाते हैं और नेकियों में इज़ाफ़ा फ़रमाते हैं? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। फ़रमाया : तबीयत की नागवारी के बावजूद (मसलन सर्दी के मौसम में) अच्छी तरह वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ क़दमों से

क़दम उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहना। जो शख़्स भी अपने घर से वुज़ू करके मस्जिद में आए और मुसलमानों के साथ जमाअत के साथ नमाज़ पढ़े फिर उसके बाद वाली नमाज़ के इंतज़ार में बैठ जाए तो फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं, या अल्लाह! उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, या अल्लाह! उस पर रहम फ़रमा दीजिए। (इब्ने हब्बान)

﴿ 84 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللهُ بِهِ الْخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ؟ قَالُوا: بَلَى، يَا رَسُولَ اللهِ! قَالَ: إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ، وَكَثْرَةُ الْخُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذٰلِكُمُ الرِّبَاطُ.

رواه مسلم، باب فضل اسباغ الوضوء على المكاره، رقم: ٥٨٧

84. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे अमल न बतलाऊं जिनकी वजह से अल्लाह तआला गुनाहों को मिटाते हैं और दर्जे बुलन्द फ़रमाते हैं? सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बतलाइए। इर्शाद फ़रमाया : नागवारी व मशक़्क़त के बावजूद कामिल वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ कसरत से क़दम उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहना, यही हक़ीक़ी रिबात है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : "रिबात" के मशहूर मानी "इस्लामी सरहद पर दुश्मन से हिफ़ाज़त के लिए पड़ाव डालने" के हैं जो बड़ा अज़ीमुश्शान अमल है। इस हदीस शरीफ़ में नबी करीम ﷺ ने इन आमाल को रिबात ग़ालिबन इस लिहाज़ से फ़रमाया कि जैसे सरहद पर पड़ाव डाल कर हिफ़ाज़त की जाती है उसी तरह उन आमाल के ज़रिए नफ़्स व शैतान के हमलों से अपनी हिफ़ाज़त की जाती है। (मिरक़ात)

﴿ 85 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: إِذَا تَطَهَّرَ الرَّجُلُ ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ يَرْعَى الصَّلَاةَ كَتَبَ لَهُ كَاتِبَاهُ (أَوْ كَاتِبُهُ) بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوهَا إِلَى الْمَسْجِدِ عَشْرَ حَسَنَاتٍ، وَالْقَاعِدُ يَرْعَى الصَّلَاةَ كَالْقَانِتِ، وَيُكْتَبُ مِنَ الْمُصَلِّينَ مِنْ حِينِ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْهِ.

رواه احمد ٤/١٥٧

85. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर मस्जिद आकर नमाज़ के

इंतज़ार में रहता है, तो उसके आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते हर उस क़दम के बदले में जो उसने मस्जिद की तरफ़ उठाया, दस नेकियां लिखते हैं और नमाज़ के इंतज़ार में बैठने वाला इबादत करने वाले की तरह है और घर से निकलने के वक़्त से लेकर घर वापस लौटने तक नमाज़ पढ़ने वालों में शुमार किया जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 86 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ (قَالَ اللهُ تَعَالٰى): يَا مُحَمَّدُ! قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَبِّ، قَالَ: فِيْمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الْاَعْلٰى؟ قُلْتُ: فِي الْكَفَّارَاتِ، قَالَ: مَا هُنَّ؟ قُلْتُ: مَشْيُ الْاَقْدَامِ اِلَى الْجَمَاعَاتِ، وَالْجُلُوْسُ فِي الْمَسَاجِدِ بَعْدَ الصَّلٰوةِ، وَاِسْبَاغُ الْوُضُوْءِ فِي الْمَكْرُوْهَاتِ، قَالَ: ثُمَّ فِيْمَ؟ قُلْتُ: اِطْعَامُ الطَّعَامِ، وَلِيْنُ الْكَلَامِ، وَالصَّلَاةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ، قَالَ: سَلْ،قُلْتُ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ، وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ، وَاَنْ تَغْفِرَلِيْ وَتَرْحَمَنِيْ، وَاِذَا اَرَدْتَ فِتْنَةً فِيْ قَوْمٍ فَتَوَفَّنِيْ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ، وَاَسْاَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ اِلٰى حُبِّكَ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّهَا حَقٌّ فَادْرُسُوْهَا ثُمَّ تَعَلَّمُوْهَا.

(وهو بعض الحديث) رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ومن سورة ص، رقم: ٣٢٣٥

86. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने (रसूलुल्लाह ﷺ को ख़्वाब में) इर्शाद फ़रमाया : ऐ मुहम्मद! मैंने अ़र्ज़ किया: ऐ मेरे रब, मैं हाज़िर हूं। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मुक़र्रब फ़रिश्ते कौन-से आमाल के अफ़ज़ल होने में आपस में बहस कर रहे हैं? मैंने अ़र्ज़ किया उन आमाल के बारे में जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाते हैं। इर्शाद हुआ : वह आमाल क्या हैं? मैंने अ़र्ज़ किया : जमाअ़त की नमाज़ों के लिए चल कर जाना, एक नमाज़ के बाद से दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में बैठे रहना और नागवारी के बावजूद (मसलन सर्दी के मौसम में) अच्छी तरह वुज़ू करना। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : और कौन-से- आमाल के अफ़ज़ल होने में आपस में बहस कर रहे हैं? मैं अ़र्ज़ किया : खाना खिलाना, नर्म बात करना और रात को जब लोग सो रहे हों नमाज़ पढ़ना। फिर अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मांगो, मैंने यह दुआ़ मांगी : 'अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क फ़ेलल ख़ैराति व तर्कल मुंकराति व हुब्बल मसाकीन व अन तग़्फ़ि-र ली व तर्हम्नी व इज़ा अरद-त फ़ित-न-तन फ़ी क़ौमिन फ़-त-वफ़्फ़नी ग़ै-र मफ़्तून व असअलु-क हुब्ब-क व हुब-ब मैंय्युहिब्बु-क व हुब-ब अ़-मलिन युक़र्रिबु इला हुब्बि-क' तर्जुमा : "या अल्लाह! मैं आप से

नेकियों के करने, बुराइयों के छोड़ने और मिस्कीनों की मुहब्बत का सवाल करता हूं और इस बात का कि आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए, मुझ पर रहम फ़रमा दीजिए और जब आप किसी क़ौम को आज़माइश में डालने और अ़ज़ाब में मुब्तला करने का फ़ैसला फ़रमाएं, तो मुझे आज़माए बग़ैर अपने पास बुला लीजिए। या अल्लाह! मैं आप से सवाल करता हूं आप की मुहब्बत का और उस शख़्स की मुहब्बत का जो आप से मुहब्बत रखता हो और उस अ़मल की मुहब्बत का जो आप की मुहब्बत से मुझे क़रीब कर दे।" नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दुआ़ हक़ है, लिहाज़ा इसे सीखने के लिए बार-बार पढ़ो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 87 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَحَدُكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا دَامَتِ الصَّلَاةُ تَحْبِسُهُ، وَالْمَلَائِكَةُ تَقُولُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، مَالَمْ يَقُمْ مِنْ صَلَاتِهِ أَوْ يُحْدِثْ.

رواه البخاري، باب اذا قال: احدكم أمين ...، رقم: ٣٢٢٩

87. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से वह शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ का सवाब पाता रहता है जब तक वह नमाज़ के इंतज़ार में रहता है। फ़रिश्ते उसके लिए यह दुआ़ करते रहते हैं : या अल्लाह! इसकी मग़्फ़िरत फ़रमाइए और इस पर रहम फ़रमाइए। (नमाज़ पढ़ने के बाद भी) जब तक नमाज़ की जगह बावुज़ू बैठा रहता है, फ़रिश्ते उसके लिए यही दुआ़ करते रहते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 88 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مُنْتَظِرُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، كَفَارِسٍ اشْتَدَّ بِهِ فَرَسُهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ، عَلَى كَشْحِهِ وَهُوَ فِي الرِّبَاطِ الْأَكْبَرِ.

رواه احمد والطبراني في الاوسط، واسناد احمد صالح، الترغيب ١/٢٨٤

88. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहने वाला उस शहसवार की तरह है, जिसका घोड़ा उसे अल्लाह तआ़ला के रास्ते में तेज़ी से ले कर दौड़े। नमाज़ का इंतज़ार करने वाला (नफ़्स व शैतान के ख़िलाफ़) सबसे बड़े मोर्चे पर है। (मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 89 ﴾ عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَسْتَغْفِرُ لِلصَّفِّ الْمُقَدَّمِ، ثَلَاثًا، وَلِلثَّانِيْ مَرَّةً.

رواه ابن ماجه، باب فضل الصف المقدم، رقم: ٩٩٦

89. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ पहली सफ़

वालों के लिए तीन मर्तबा दूसरी सफ़ वालों के लिए एक मर्तबा मग़्फ़िरत की दुआ फ़रमाते थे। (इब्ने माजा)

﴿ 90 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الصَّفِّ الْأَوَّلِ، قَالُوا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، وَعَلَى الثَّانِي؟ قَالَ: وَعَلَى الثَّانِي، وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سَوُّوا صُفُوْفَكُمْ وَحَاذُوا بَيْنَ مَنَاكِبِكُمْ، وَلِيْنُوا فِي أَيْدِي إِخْوَانِكُمْ، وَسُدُّوا الْخَلَلَ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ فِيْمَا بَيْنَكُمْ بِمَنْزِلَةِ الْحَذَفِ. يَعْنِي: أَوْلَادَ الضَّأْنِ الصِّغَارَ.

رواه احمد والطبراني في الكبير ورجال احمد موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٥٢

90. हज़रत अबू उमामः ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पहली सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पहली सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं। सहाबा रज़ि० ने (दोबारा) अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है। रसूलुल्लाह ﷺ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया : अपनी सफ़ों को सीधा रखा करो, कांधों को कांधों की सीध में रखा करो, सफ़ों को सीधा रखने में अपने भाइयों के लिए नर्म बन जाया करो और सफ़ों के दर्मियानी ख़ला को पुर किया करो, इसलिए कि शैतान (सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर) तुम्हारे दर्मियान भेड़ के बच्चों की तरह घुस जाता है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : भाइयों के लिए नर्म बन जाने का मतलब यह है कि अगर कोई सफ़ सीधी करने के लिए तुम पर हाथ रखकर आगे पीछे होने को कहे, तो उसकी बात मान लिया करो।

﴿ 91 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خَيْرُ صُفُوْفِ الرِّجَالِ أَوَّلُهَا، وَشَرُّهَا آخِرُهَا، وَخَيْرُ صُفُوْفِ النِّسَاءِ آخِرُهَا، وَشَرُّهَا أَوَّلُهَا.

رواه مسلم، باب تسوية الصفوف ....، رقم: ٩٨٥

91. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

की सफ़ों में सबसे ज़्यादा सवाब पहली सफ़ का है और सबसे कम सवाब आख़िरी सफ़ का है। औरतों की सफ़ों में सबसे ज़्यादा सवाब आख़िरी सफ़ का है और सबसे कम सवाब पहली सफ़ का है। (मुस्लिम)

﴿ 92 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَتَخَلَّلُ الصَّفَّ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلٰى نَاحِيَةٍ، يَمْسَحُ صُدُوْرَنَا وَمَنَاكِبَنَا وَيَقُوْلُ: لَا تَخْتَلِفُوا فَتَخْتَلِفَ قُلُوْبُكُمْ وَكَانَ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الصُّفُوْفِ الْأُوَلِ.

رواه ابوداؤد، باب تسوية الصفوف، رقم: ٦٦٤

92. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ सफ़ में एक किनारे से दूसरे किनारे तक तशरीफ़ लाते, हमारे सीनों और कांधों पर हाथ मुबारक फेर कर सफ़ों को सीधा फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते : (सफ़ों में) आगे पीछे न रहो, अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे दिलों में एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा और फ़रमाया करते : अल्लाह तआ़ला अगली सफ़ वालों पर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं और उनके लिए फ़रिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं। (अबूदाऊद)

﴿ 93 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ يَلُوْنَ الصُّفُوْفَ الْأُوَلَ، وَمَا مِنْ خُطْوَةٍ أَحَبُّ إِلَى اللهِ مِنْ خُطْوَةٍ يَمْشِيْهَا يَصِلُ بِهَا صَفًّا.

رواه ابوداؤد، باب في الصلوة تقام...... رقم: ٥٤٣

93. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला अगली सफ़ों से क़रीब सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए दुआ़ करते हैं। अल्लाह तआ़ला को उस क़दम से ज़्यादा कोई क़दम महबूब नहीं, जिसको इंसान सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करने के लिए उठाता है। (अबूदाऊद)

﴿ 94 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى مَيَامِنِ الصُّفُوْفِ.

رواه ابوداؤد، باب من يستحب ان يلى الامام في الصف ... رقم: ٦٧٦

94. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला सफ़ों के दाएं जानिब खड़े होने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और फ़रिश्ते उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं।

(अबूदाऊद)

﴿ 95 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عَمَّرَ جَانِبَ الْمَسْجِدِ الْاَيْسَرِ لِقِلَّةِ اَهْلِهٖ فَلَهٗ اَجْرَانِ.

رواه الطبراني في الكبير، وفيه: بقية، وهو مدلس و قد عنعنه، ولكنه ثقة، مجمع الزوائد ٢/٢٥٧

95. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मस्जिद में सफ़ की बाएं जानिब इसलिए खड़ा होता है कि वहां लोग कम खड़े हैं तो उसे दो अज्र मिलते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : सहाबा किराम रज़ि० को जब मालूम हुआ कि सफ़ के दाएं हिस्से की फ़ज़ीलत बाएं के मुक़ाबले में ज़्यादा है, तो सबको शौक़ हुआ कि उसी तरफ़ खड़े हों जिसकी वजह से बाएं तरफ़ की जगह ख़ाली रहने लगी। इस मौक़ा पर नबी करीम ﷺ ने बाएं जानिब खड़े होने की फ़ज़ीलत भी इर्शाद फ़रमाई।

﴿ 96 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ الصُّفُوْفَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٢١٤

96. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला सफ़ों की ख़ाली जगहें पुर करने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और फ़रिश्ते उनके लिए इस्तग़फ़ार करते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 97 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَا يَصِلُ عَبْدٌ صَفًّا اِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ بِهٖ دَرَجَةً، وَذَرَّتْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ مِنَ الْبِرِّ.

(وهو بعض الحديث) رواه الطبراني في الاوسط ولا بأس باسناده، الترغيب ١/٣٢٢

97. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी सफ़ को मिलाता है, अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से उसका एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं और फ़रिश्ते उस पर रहमतों को बिखेर देते हैं। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 98 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خِيَارُكُمْ اَلْيَنُكُمْ مَنَاكِبَ فِي الصَّلٰوةِ، وَمَا مِنْ خَطْوَةٍ اَعْظَمُ اَجْرًا مِنْ خَطْوَةٍ مَشَاهَا رَجُلٌ اِلٰى فُرْجَةٍ

فِي الصَّفِّ فَسَدَّهَا۔ رواه البزار باسناد حسن، وابن حبان في صحيحه۔

كلاهما بالشطر الاول، ورواه بتمامه الطبراني في الاوسط، الترغيب ١/٣٢٢

98. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें बेहतरीन लोग वे हैं जो नमाज़ में अपने मूंढे नर्म रखते हैं। सबसे ज़्यादा सवाब दिलाने वाला वह क़दम है जिसको इंसान सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करने के लिए उठाता है। (बज़्ज़ार, इब्ने हब्बान, तबरानी, तर्ग़ीब)

फ़ायदा : नमाज़ में अपने मूंढे नर्म रखने का मतलब यह है कि जब कोई सफ़ में दाख़िल होना चाहे तो दाएं-बाएं के नमाज़ी के लिए अपने मूंढों को नर्म कर दें, ताकि आने वाला सफ़ में दाख़िल हो जाए।

﴿ 99 ﴾ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ سَدَّ فُرْجَةً فِي الصَّفِّ غُفِرَ لَهُ۔ رواه البزار واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٥١

99. हज़रत अबू जुहैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सफ़ में ख़ाली जगह को पुर किया उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿100﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ وَصَلَ صَفًّا وَصَلَهُ اللهُ وَمَنْ قَطَعَ صَفًّا قَطَعَهُ اللهُ۔ (وهو بعض الحديث) رواه ابو داؤد، باب تسوية الصفوف، رقم:٦٦٦

100. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सफ़ को मिलाता है अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से मिला देते हैं और जो शख़्स सफ़ को तोड़ता है अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर कर देते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : सफ़ तोड़ने का मतलब यह है कि सफ़ के दर्मियान ऐसी जगह पर कोई सामान रख दे कि सफ़ पूरी न हो सके या सफ़ में ख़ाली जगह देखकर भी उसे पुर न करे। (मिरक़ात)

﴿101﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: سَوُّوا صُفُوفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلٰوةِ۔ رواه البخاري، باب اقامة الصف من تمام الصلاة، رقم:٧٢٣

101. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी सफ़ों को सीधा किया करो, क्योंकि नमाज़ को अच्छी तरह अदा करने में सफ़ों

को सीधा करना शामिल है। (बुख़ारी)

﴿102﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ فَأَسْبَغَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ مَشٰى إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ، فَصَلَّاهَا مَعَ النَّاسِ، أَوْمَعَ الْجَمَاعَةِ، أَوْفِي الْمَسْجِدِ، غَفَرَ اللهُ لَهُ ذُنُوْبَهُ.

رواه مسلم باب فضل الوضوء والصلوة عقبه، رقم:٥٤٩

102. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स कामिल वुज़ू करता है, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए चल कर जाता है और नमाज़ जमाअ़त के साथ मस्जिद में अदा करता है, तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (मुस्लिम)

﴿103﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى لَيَعْجَبُ مِنَ الصَّلَاةِ فِي الْجَمْعِ.

رواه احمد واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٦٣/٢

103. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने पर ख़ुश होते हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿104﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ صَلَاةِ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ عَلٰى صَلَاتِهِ وَحْدَهُ بِضْعٌ وَعِشْرُوْنَ دَرَجَةً. رواه احمد ٣٧٦/١

104. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से बीस दर्जे से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। (मुस्नद अहमद)

﴿105﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلَاةُ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ تُضَعَّفُ عَلٰى صَلَاتِهِ فِيْ بَيْتِهِ وَفِيْ سُوْقِهِ خَمْسًا وَعِشْرِيْنَ ضِعْفًا.

(الحديث) رواه البخاري، باب فضل صلوة الجماعة، رقم:٦٤٧

105. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना अपने घर और बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से पचीस

दर्जे ज़्यादा सवाब रखता है। (बुख़ारी)

﴾106﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِيْنَ دَرَجَةً. رواه مسلم، باب فضل صلوة الجماعة ......، رقم: ١٤٧٧

106. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त की नमाज़ अकेले की नमाज से अज्र व सवाब में सत्ताईस दर्जे ज़्यादा है। (मुस्लिम)

﴾107﴿ عَنْ قُبَاثِ بْنِ اَشْيَمَ اللَّيْثِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلَاةُ الرَّجُلَيْنِ يَؤُمُّ اَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلَاةِ اَرْبَعَةٍ تَتْرٰى، وَصَلَاةُ اَرْبَعَةٍ يَؤُمُّ اَحَدُهُمْ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلَاةِ ثَمَانِيَةٍ تَتْرٰى، وَصَلَاةُ ثَمَانِيَةٍ يَؤُمُّ اَحَدُهُمْ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ مِائَةٍ تَتْرٰى. رواه البزار والطبراني في الكبير ورجال الطبراني موثقون، مجمع الزوائد ٢/١٦٣

107. हज़रत क़ुबास बिन अशयम लैसी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ कि एक इमाम हो एक मुक़्तदी, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक चार आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है। उसी तरह चार आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ आठ आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है और आठ आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ सौ आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾108﴿ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ صَلَاةَ الرَّجُلِ مَعَ الرَّجُلِ اَزْكٰى مِنْ صَلَاتِهِ وَحْدَهُ، وَصَلَاتَهُ مَعَ الرَّجُلَيْنِ اَزْكٰى مِنْ صَلَاتِهِ مَعَ الرَّجُلِ، وَمَا كَثُرَ فَهُوَ اَحَبُّ اِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ. (وهو بعض الحديث) رواه ابو داؤد، باب في فضل صلوة الجماعة، رقم: ٥٥٤ سنن ابي داؤد طبع دار الباز للنشر والتوزيع

108. हज़रत उबई बिन काब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक आदमी का दूसरे के साथ जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना उसके अकेले नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है और तीन आदमियों का जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना दो आदमियों के जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है। इसी तरह जमाअ़त की नमाज़ में मज्मा जितना ज़्यादा होगा, उतना ही अल्लाह तआ़ला को

ज़्यादा महबूब है। (अबूदाऊद)

﴿109﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الصَّلَاةُ فِي جَمَاعَةٍ تَعْدِلُ خَمْسًا وَعِشْرِيْنَ صَلَاةً، فَإِذَا صَلَّاهَا فِي فَلَاةٍ فَأَتَمَّ رُكُوْعَهَا وَسُجُوْدَهَا بَلَغَتْ خَمْسِيْنَ صَلَاةً. رواه ابو داؤد، باب ماجاء في فضل المشي الى الصلوة، رقم: ٥٦٠

109. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का सवाब पचीस नमाज़ों के बराबर होता है और जब कोई शख़्स जंगल ब्याबान में नमाज़ पढ़ता है और उसका रूकूअ़, सज्दा भी पूरा करता है, यानी तस्बीहात को इत्मीनान से पढ़ता है तो उस नमाज़ का सवाब पचास नमाज़ों के बराबर पहुंच जाता है। (अबूदाऊद)

﴿110﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ ثَلَاثَةٍ فِي قَرْيَةٍ وَلَا بَدْوٍ لَا تُقَامُ فِيْهِمُ الصَّلَاةُ إِلَّا قَدِ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ، فَعَلَيْكَ بِالْجَمَاعَةِ، فَإِنَّمَا يَأْكُلُ الذِّئْبُ الْقَاصِيَةَ. رواه ابو داؤد، باب التشديد في ترك الجماعة، رقم: ٥٤٧

110. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस गांव या जंगल में तीन आदमी हों और वहां जमाअ़त से नमाज़ न होती हो, तो उन पर शैतान पूरी तरह ग़ालिब आ जाता है, इसलिए जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझो। भेड़िया अकेली बकरी को खा जाता है (और आदमियों का भेड़िया शैतान है)। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ ﷺ وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ فِي أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلَاهُ فِي الْأَرْضِ. رواه البخاري، باب الغسل والوضوء في المخضب ...، رقم: ١٩٨

111. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब नबी करीम ﷺ बीमार हुए और आपकी तकलीफ़ बढ़ गई, तो आप ﷺ ने दूसरी बीवियों से इस बात की इजाज़त ली कि आप की तीमारदारी मेरे घर में की जाए। उन्होंने आप ﷺ को इस बात की इजाज़त दे दी। (फिर जब नमाज़ का वक़्त हुआ तो) रसूलुल्लाह ﷺ दो आदमियों का सहारा लेकर (मस्जिद जाने के लिए इस तरह) निकले कि (कमज़ोरी की वजह से) आप ﷺ के पांव ज़मीन पर घिसट रहे थे। (बुख़ारी)

﴾112﴿ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ إِذَا صَلّٰى بِالنَّاسِ يَخِرُّ رِجَالٌ مِنْ قَامَتِهِمْ فِي الصَّلَاةِ مِنَ الْخَصَاصَةِ وَهُمْ اَصْحَابُ الصُّفَّةِ حَتّٰى تَقُوْلَ الْاَعْرَابُ: هٰؤُلَاءِ مَجَانِيْنُ اَوْ مَجَانُوْنَ، فَإِذَا صَلّٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ انْصَرَفَ إِلَيْهِمْ، فَقَالَ: لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَا لَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ لَاَحْبَبْتُمْ اَنْ تَزْدَادُوْا فَاقَةً وَحَاجَةً قَالَ فَضَالَةُ: وَاَنَا يَوْمَئِذٍ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في معيشة اصحاب النبي ﷺ، رقم:٢٣٦٧

112. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ पढ़ाते तो सफ़ में खड़े बाज़ अस्हाबे सुफ़्फ़ा भूख की शिद्दत की वजह से गिर जाते, यहां तक कि बाहर के देहाती लोग उनको देखते तो यूं समझते कि यह दीवाने हैं। रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : अगर तुम्हें वह सवाब मालूम हो जाए जो तुम्हारे लिए अल्लाह तआला के यहां है, तो तुम इससे भी ज़्यादा तंगदस्ती और फ़ाक़े में रहना पसन्द करो। हज़रत फ़ज़ाला रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं उस दिन आप ﷺ के साथ था। (तिर्मिज़ी)

﴾113﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَكَاَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ، وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَكَاَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ. رواه مسلم، باب فضل صلاة العشاء والصبح في جماعة، رقم:١٤٩١

113. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इशा की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़े, गोया उसने आधी रात इबादत की और जो फ़ज्र की नमाज़ भी जमाअ़त के साथ पढ़ ले, गोया उसने पूरी रात इबादत की। (मुस्लिम)

﴾114﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ اَثْقَلَ صَلَاةٍ عَلَى الْمُنَافِقِيْنَ صَلَاةُ الْعِشَاءِ وَصَلَاةُ الْفَجْرِ.

(الحديث) رواه مسلم، باب فضل صلاة الجماعة ......، رقم:١٤٨٢

114. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुनाफ़िक़ीन पर सबसे ज़्यादा भारी इशा और फ़ज्र की नमाज़ है। (मुस्लिम)

﴾115﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِي

التَّهْجِيْرِ لَاسْتَبَقُوْا إِلَيْهِ، وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا۔

(وهو طرف من الحديث) رواه البخاري، باب الاستهام في الاذان، رقم: ٦١٥

115. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को ज़ुह्र की नमाज़ के लिए दोपहर की गर्मी में चल कर मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत मालूम हो जाती, तो वह ज़ुह्र की नमाज़ के लिए दौड़ते हुए जाते और अगर इन्हें इशा और फ़ज्र की नमाज़ों की फ़ज़ीलत मालूम हो जाती, तो वे उन नमाज़ों के लिए मस्जिद जाते, चाहें उन्हे (किसी बीमारी की वजह से) घिसट कर ही जाना पड़ता। (बुख़ारी)

﴿116﴾ عَنْ اَبِىْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَهُوَ فِيْ ذِمَّةِ اللهِ فَمَنْ اَخْفَرَ ذِمَّةَ اللهِ كَبَّهُ اللهُ فِي النَّارِ لِوَجْهِهِ۔

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/ ٢٩

116. हज़रत अबू बकर: ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में होता है, जो अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आए हुए शख़्स को सताएगा, अल्लाह तआ़ला उसे औंधे मुंह जहन्नम में फेंक देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿117﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى لِلّٰهِ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا فِيْ جَمَاعَةٍ يُدْرِكُ التَّكْبِيْرَةَ الْاُوْلٰى كُتِبَتْ لَهُ بَرَاءَتَانِ: بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ، وَبَرَاءَةٌ مِنَ النِّفَاقِ۔ رواه الترمذي، باب ماجاء في فضل التكبيرة الاولى، رقم: ٢٤١ قال الحافظ المنذري: رواه الترمذي وقال: لااعلم احدا رفعه الا ما روى مسلم بن قتيبة عن طعمة بن عمرو وقال المملي رحمه الله: ومسلم وطعمة وبقية رواته ثقات، الترغيب ١/ ٢٦٣

117. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स चालीस दिन इख़्लास से तकबीरे ऊला के साथ जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है, तो उसको दो परवाने मिलते हैं। एक परवाना जहन्नम से बरी होने का, दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का। (तिर्मिज़ी)

﴿118﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ آمُرَ فِتْيَتِيْ فَيَجْمَعُ حُزَمًا مِنْ حَطَبٍ ثُمَّ آتِيَ قَوْمًا يُصَلُّوْنَ فِيْ بُيُوْتِهِمْ لَيْسَتْ بِهِمْ عِلَّةٌ فَاُحَرِّقَهَا عَلَيْهِمْ۔

رواه ابوداؤد، باب التشديد في ترك الجماعة، رقم: ٥٤٩

118. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरा दिल चाहता है कि चन्द जवानों से कहूं कि बहुत सारा ईंधन इकट्ठा करके लाएं फिर मैं उन लोगों के पास जाऊं जो बग़ैर किसी उज़्र के घरों में नमाज़ पढ़ लेते हैं और उनके घरों को जला दूं। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ أَتَى الْجُمُعَةَ فَاسْتَمَعَ وَأَنْصَتَ، غُفِرَلَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ، وَزِيَادَةُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ، وَمَنْ مَسَّ الْحَصَى فَقَدْ لَغَا. رواه مسلم، باب فضل من استمع وانصت في الخطبة رقم:١٩٨٨

119. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर जुमा की नमाज़ के लिए आता है, ख़ूब ध्यान से ख़ुत्बा सुनता है और ख़ुत्बा के दौरान ख़ामोश रहता है, तो उस जुमा से गुज़िश्ता जुमा तक और मज़ीद तीन दिन के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। जिस शख़्स ने कंकरियों को हाथ लगाया यानी दौराने ख़ुत्बा उनसे खेलता रहा (या हाथ, चटाई, कपड़े वग़ैरह से खेलता रहा), तो उसने फ़ुज़ूल काम किया (और उसकी वजह से जुमा का ख़ास सवाब ज़ाय कर दिया)। (मुस्लिम)

﴿120﴾ عَنْ أَبِيْ أَيُّوْبَ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ مَنِ اغْتَسَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَمَسَّ مِنْ طِيْبٍ إِنْ كَانَ عِنْدَهُ، وَلَبِسَ مِنْ أَحْسَنِ ثِيَابِهِ ثُمَّ خَرَجَ حَتَّى يَأْتِيَ الْمَسْجِدَ فَيَرْكَعَ إِنْ بَدَا لَهُ وَلَمْ يُؤْذِ أَحَدًا، ثُمَّ أَنْصَتَ إِذَا خَرَجَ إِمَامُهُ حَتَّى يُصَلِّيَ كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى. رواه احمد ٥/٤٢٠

120. हज़रत अबू ऐय्यूब अंसारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करता है, अगर ख़ुश्बू हो तो उसे भी इस्तेमाल करता है, अच्छे कपड़े पहनता है, उसके बाद मस्जिद जाता है। फिर मस्जिद आकर अगर मौक़ा हो तो नफ़्ल नमाज़ पढ़ लेता है और किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाता, यानी लोगों की गरदनों के ऊपर से फलांगता हुआ नहीं जाता, फिर जब इमाम ख़ुत्बा देने के लिए आता है उस वक़्त से नमाज़ होने तक ख़ामोश रहता है, यानी कोई बात-चीत नहीं करता, तो ये आमाल उस जुमा से गुज़िश्ता जुमा तक के गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया हो जाते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿121﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا يَغْتَسِلُ رَجُلٌ يَوْمَ

الْجُمُعَةِ وَيَتَطَهَّرُ مَا اسْتَطَاعَ مِنَ الطُّهْرِ، وَيَدَّهِنُ مِنْ دُهْنِهِ أَوْ يَمَسُّ مِنْ طِيْبِ بَيْتِهِ، ثُمَّ يَخْرُجُ فَلَا يُفَرِّقُ بَيْنَ اثْنَيْنِ، ثُمَّ يُصَلِّيْ مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ يُنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الْإِمَامُ إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى. رواه البخاري، باب الدهن للجمعة، رقم:٨٨٣

121. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करता है, जितना हो सके पाकी का एहतमाम करता है और अपना तेल लगाता है या अपने घर से ख़ुश्बू इस्तेमाल करता है, फिर मस्जिद जाता है। मस्जिद पहुंचकर जो दो आदमी पहले से साथ बैठे हों उनके दर्मियान में नहीं बैठता और जितनी तौफ़ीक़ हो जुमा से पहले नमाज़ पढ़ता है। फिर जब इमाम ख़ुत्बा देता है उसको तवज्जह और ख़ामोशी से सुनता है तो उस जुमा से गुज़िश्ता जुमा तक के गुनाहों को माफ़ कर दिया जाता है। (बुख़ारी)

﴿122﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِيْ جُمُعَةٍ مِنَ الْجُمَعِ: مَعَاشِرَ الْمُسْلِمِيْنَ! إِنَّ هٰذَا يَوْمٌ جَعَلَهُ اللهُ لَكُمْ عِيْدًا فَاغْتَسِلُوْا وَعَلَيْكُمْ بِالسِّوَاكِ.

رواه الطبراني في الاوسط والصغير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢٨٨/٢

122. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मर्तबा जुमा के दिन इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला ने इस दिन को तुम्हारे लिए ईद का दिन बनाया है, लिहाज़ा इस दिन ग़ुस्ल किया करो और मिस्वाक का एहतमाम किया करो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿123﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْغُسْلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَيَسُلُّ الْخَطَايَا مِنْ أُصُوْلِ الشَّعْرِ اسْتِلَالًا. رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٧٧/٢، طبع مؤسسة المعارف بيروت

123. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा के दिन का ग़ुस्ल गुनाहों को बालों की जड़ों तक से निकाल देता है।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿124﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَقَفَتِ الْمَلَائِكَةُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ يَكْتُبُوْنَ الْأَوَّلَ فَالْأَوَّلَ، وَمَثَلُ الْمُهَجِّرِ كَمَثَلِ الَّذِيْ يُهْدِيْ بَدَنَةً، ثُمَّ كَالَّذِيْ يُهْدِيْ بَقَرَةً، ثُمَّ كَبْشًا، ثُمَّ دَجَاجَةً، ثُمَّ بَيْضَةً، فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ طَوَوْا صُحُفَهُمْ وَيَسْتَمِعُوْنَ الذِّكْرَ. رواه البخاري، باب الاستماع الى الخطبة يوم الجمعة، رقم:٩٢٩

124. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जुमा का दिन होता है, फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं। पहले आने वाले का नाम पहले, उसके बाद आने वाले का नाम उसके बाद लिखते हैं (उसी तरह आने वालों के नाम उनके आने की तर्तीब से लिखते रहते हैं)। जो जुमा की नमाज़ के लिए सवेरे जाता है, उसे ऊंट सदक़ा करने का सवाब मिलता है। उसके बाद आने वाले को गाय सदक़ा करने का सवाब मिलता है। उसके बाद आने वाले को मेंढा, उसके बाद वाले को मुर्ग़ी, उसके बाद वाले को अंडा सदक़ा करने का सवाब मिलता है। जब इमाम ख़ुत्बा देने के लिए आता है तो फ़रिश्ते अपने वे रजिस्टर जिनमें आने वालों के नाम लिखे गए हैं लपेट देते हैं और ख़ुत्बा सुनने में मशगूल हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿125﴾ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِيْ مَرْيَمَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَحِقَنِيْ عَبَايَةُ بْنُ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ رَحِمَهُ اللهُ، وَأَنَا مَاشٍ إِلَى الْجُمُعَةِ فَقَالَ: أَبْشِرْ، فَإِنَّ خُطَاكَ هٰذِهِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، سَمِعْتُ أَبَا عَبْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَهُمَا حَرَامٌ عَلَى النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ما جاء في فضل من اغبرت قدماه في سبيل الله، رقم: ١٦٣٢

125. हज़रत यज़ीद बिन अबी मरयम रह० फ़रमाते हैं कि मैं जुमा की नमाज़ के लिए पैदल जा रहा था कि हज़रत अबाया बिन रिफ़ाअ: रह० मुझे मिल गए और फ़रमाने लगे तुम्हें ख़ुशख़बरी हो कि तुम्हारे ये क़दम अल्लाह तआला के रास्ते में हैं। मैंने अबू अब्स ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसके क़दम अल्लाह तआला के रास्ते में गुबारआलूद हुए, तो वे क़दम दोज़ख़ की आग पर हराम हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿126﴾ عَنْ أَوْسِ بْنِ أَوْسٍ الثَّقَفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ غَسَّلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاغْتَسَلَ ثُمَّ بَكَّرَ وَابْتَكَرَ وَمَشَى، وَلَمْ يَرْكَبْ، وَدَنَا مِنَ الْإِمَامِ فَاسْتَمَعَ وَلَمْ يَلْغُ كَانَ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ عَمَلُ سَنَةٍ أَجْرُ صِيَامِهَا وَقِيَامِهَا.

رواه ابو داؤد، باب في الغسل للجمعة، رقم: ٣٤٥

126. हज़रत औस बिन औस सक़फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स जुमा के दिन ख़ूब अच्छी तरह गुस्ल करता है,

बहुत सवेरे मस्जिद जाता है, पैदल जाता है सवारी पर सवार नहीं होता, इमाम से क़रीब होकर बैठता है और तवज्जह से ख़ुत्बा सुनता है, इस दौरान किसी क़िस्म की कोई बात नहीं करता, तो वह जुमा के लिए जितने क़दम चलकर आता है उसे हर-हर क़दम के बदले एक साल के रोज़ों का सवाब और एक साल की रातों की इबादत का सवाब मिलता है। (अबूदाऊद)

﴿127﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَسَّلَ وَاغْتَسَلَ، وَغَدَا وَابْتَكَرَ وَدَنَا، فَاقْتَرَبَ وَاسْتَمَعَ وَأَنْصَتَ كَانَ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوهَا أَجْرُ قِيَامِ سَنَةٍ وَصِيَامِهَا. رواه احمد ٦/٢٠٩

127. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमा के दिन अच्छी तरह ग़ुस्ल करता है, बहुत सवेरे जुमा के लिए जाता है, इमाम के बिल्कुल क़रीब बैठता है और ख़ुत्बा तवज्जह से सुनता है इस दौरान ख़ामोश रहता है तो वह जितने क़दम चलकर मस्जिद आता है उसे हर-हर क़दम के बदले साल भर की तहज्जुद और साल भर के रोज़ों का सवाब मिलता है। (मुस्नद अहमद)

﴿128﴾ عَنْ أَبِي لُبَابَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُنْذِرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ سَيِّدُ الْأَيَّامِ، وَأَعْظَمُهَا عِنْدَ اللهِ وَهُوَ أَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنْ يَوْمِ الْأَضْحَى وَيَوْمِ الْفِطْرِ وَفِيهِ خَمْسُ خِلَالٍ: خَلَقَ اللهُ فِيهِ آدَمَ وَأَهْبَطَ اللهُ فِيهِ آدَمَ إِلَى الْأَرْضِ وَفِيهِ تَوَفَّى اللهُ آدَمَ وَفِيهِ سَاعَةٌ لَا يَسْأَلُ اللهَ فِيهَا الْعَبْدُ شَيْئًا إِلَّا أَعْطَاهُ، مَالَمْ يَسْأَلْ حَرَامًا وَفِيهِ تَقُومُ السَّاعَةُ مَا مِنْ مَلَكٍ مُقَرَّبٍ وَلَا سَمَاءٍ وَلَا أَرْضٍ وَلَا رِيَاحٍ وَلَا جِبَالٍ وَلَا بَحْرٍ إِلَّا وَهُنَّ يُشْفِقْنَ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ. رواه ابن ماجه باب في فضل الجمعة، رقم: ١٠٨٤

128. हज़रत अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुंज़िर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा का दिन सारे दिनों का सरदार है। अल्लाह तआ़ला के यहां सारे दिनों में सबसे ज़्यादा अ़ज़मत वाला दिन यही है। यह दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र के दिन से भी ज़्यादा मर्तबे वाला है। इस दिन में पांच बातें हुई। इस दिन अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ को पैदा फ़रमाया; इसी दिन उनको ज़मीन पर उतारा; इसी दिन उनको मौत दी। इस दिन में एक घड़ी ऐसी है कि बन्दा उसमें जो चीज़ भी मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं, बशर्ते कि किसी हराम चीज़ का सवाल न करे और इस दिन

क़ियामत क़ायम होगी। तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते, आसमान, ज़मीन, हवाएं, पहाड़, समुन्दर सब जुमा के दिन से डरते हैं (इसलिए कि क़ियामत जुमा के दिन ही आएगी)। (इब्ने माजा)

﴿129﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَطْلُعُ الشَّمْسُ وَلَا تَغْرُبُ عَلَى يَوْمٍ أَفْضَلَ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ، وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ إِلَّا وَهِيَ تَفْزَعُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَّا هٰذَيْنِ الثَّقَلَيْنِ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٧/٥

129. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरज के तुलूअ् व ग़ुरूब वाले दिनों में कोई भी दिन जुमा के दिन से अफ़ज़ल नहीं, यानी जुमा का दिन तमाम दिनों से अफ़ज़ल है। इंसान व जिन्नात के अलावा तमाम जानदार जुमा के दिन से घबराते हैं (कि कहीं क़ियामत क़ाइम न हो जाए)। (इब्ने हब्बान)

﴿130﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ فِي الْجُمُعَةِ سَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ فِيْهَا إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ وَهِيَ بَعْدَ الْعَصْرِ. رواه احمد، الفتح الرباني ٦/١٣

130. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा के दिन एक घड़ी ऐसी होती है कि मुसलमान बन्दा इसमें अल्लाह तआला से जो मांगता है अल्लाह तआला उसको ज़रूर अता फ़रमा देते हैं और वह घड़ी अस्र के बाद होती है। (मुस्नद अहमद, अल-फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿131﴾ عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: هِيَ مَا بَيْنَ أَنْ يَجْلِسَ الْإِمَامُ إِلَى أَنْ تُقْضَى الصَّلَاةُ.

رواه مسلم، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، رقم: ١٩٧٥

131. हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को जुमा की घड़ी के बारे में इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वह घड़ी ख़ुत्बा शुरू होने से लेकर नमाज़ के ख़त्म होने तक का दर्मियानी वक़्त है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : जुमा के दिन क़ुबूलियत वाली घड़ी की तऐय्युन के बारे में और भी हदीसें हैं, लिहाज़ा इस पूरे दिन ज़्यादा से ज़्यादा दुआ और इबादत का एहतमाम करना चाहिए। (नववी)

بسم الله الرحمن الرحيم

सुनन व नवाफ़िल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا﴾ [بني اسرائيل: ٧٩]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से ख़िताब फ़रमाया : और रात के बाज़ हिस्से में बेदार हो कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करें, जो कि आपके लिए पांच नमाज़ों के अलावा एक ज़ाइद नमाज़ है। उम्मीद है कि इस तहज्जुद पढ़ने की वजह से आप के रब आपको मक़ामे महमूद में जगह देंगे।

(बनी इसराईल : 79)

फ़ायदा : क़ियामत में जब सब लोग परेशान होंगे, तो रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ारिश पर इस परेशानी से नजात मिलेगी और हिसाब-किताब शुरू होगा। इस सिफ़ारिश के हक़ को मक़ामे महमूद कहते हैं।

(ब्यानुल क़ुरआन)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا﴾ [الفرقان: ٦٤]

(अल्लाह तआला ने अपने नेक बन्दों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई कि) वे लोग अपने रब के सामने सज्दे में और खड़े हो कर रात गुज़ारते हैं।

(फ़ुरक़ान : 64)